श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 224, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 10 सितंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

'जनता से जुड़ने का माध्यम है 'भारत जोड़ो यात्रा'

नई दिल्ली: कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा जनता से जुड़ने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की विचारधारा से देश में नफरत का माहौल बना है। इसी नफरत को खत्म करने के लिए कांग्रेस ने यह यात्रा निकाली है। राहुल ने शुक्रवार को तमिलनाडु में एक प्रेसवार्ता के दौरान कहा कि भारत में दो अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। दो अलग-अलग विचार हैं। उन्होंने भाजपा को कठोर और नियंत्रित करने वाला करार देते हुए कहा कि कांग्रेस मिश्रित और खुले विचारों वाली पार्टी है। राहुल ने एक सवाल के जवाब में कहा कि वह कांग्रेस अध्यक्ष बनेंगे या नहीं यह तो समय बताएगा लेकिन उन्होंने तय कर लिया है कि उन्हें क्या करना है। इस लिए वह अपना काम जारी रखेंगे। राहुल ने कहा कि भाजपा ने देश की सभी संस्थानों को अपने नियंत्रण में कर लिया है। इन संस्थाओं से वह हम पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन कांग्रेस जन हित में अपना काम करती रहेगी। राहुल ने कहा कि यह यात्रा लोगों समझने, उनकी परेशानियों को सुनने, उनसे संवाद करने के लिए शुरू किया गया है।

चुनाव नहीं लड़ा, तो आपको बता दूंगा: राहुल: कांग्रेस में अध्यक्ष के चेहरे पर जारी सियासी सस्पेंस के बीच शुक्रवार को राहुल गांधी का बयान आया है। तमिलनाडु में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान राहुल ने कहा कि वे चुनाव लड़ेंगे या नहीं, इस पर चुनाव बाद जवाब देंगे। उन्होंने आगे कहा- मैंने इस पर अपना फैसला कर लिया है, मेरे मन में अब कोई भ्रम नहीं है। चुनाव नहीं लड़ा, तो आपको जवाब दूंगा।

2019 में छोड़ा था अध्यक्ष का पद
राहुल गांधी 2017 में कांग्रेस के अध्यक्ष बनाए गए थे, लेकिन 2019 में लोकसभा चुनाव हारने के बाद राहुल ने पद से इस्तीफा दे दिया था। राहुल ने कहा था कि कांग्रेस में जिम्मेदारी लेनी होगी, इसलिए मैं पद छोड़ रहा हूं और किसी को अध्यक्ष बनाया जाए।

अध्यक्ष कौन, तीन नाम सबसे आगे: सोनिया गांधी- 2019 में जब राहुल ने कुर्सी छोड़ी तो पार्टी में किसी नाम पर सहमति नहीं बनने के बाद सोनिया को कमान सौंपी गई। पुराने और नए नेताओं के बीच सर्वमान्य होने की वजह से 2024 तक इन्हीं के पास कुर्सी रहने की अटकलें लगाई जा रही है।

राहुल गांधी- कांग्रेस अध्यक्ष की रेस में सबसे आगे राहुल गांधी का नाम है। हालांकि राहुल कई बार अध्यक्ष बनने से इनकार कर चुके हैं। राहुल पार्टी अध्यक्ष के अलावा कांग्रेस संगठन में महासचिव और उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

अशोक गहलोत- गांधी परिवार से किसी के अध्यक्ष नहीं बनने की स्थिति में अशोक गहलोत को कांग्रेस की कमान मिल सकती है। गहलोत राजस्थान के मुख्यमंत्री हैं और पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं। कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए 17 अक्टूबर को वोटिंग होगी और 19 अक्टूबर को काउंटिंग होगी। चुनावी शेड्यूल के मुताबिक 22 सितंबर को चुनाव संबंधी नोटिफिकेशन जारी होगा। 24 सितंबर से 30 सितंबर तक नॉमिनेशन किए जा सकेंगे।

एलएसी: चरणबद्ध तरीके से सैनिकों को हटाया जाएगा'

नई दिल्ली: पूर्वी लद्दाख इलाके में पिछले दो साल से ज्यादा समय से चीन के साथ भारत के तनाव को कम करने की दिशा में एक और प्रगति हुई है। भारत के बाद अब चीनी सेना ने पुष्टि की है कि लद्दाख स्थित गोगरा-हॉटस्प्रिंग्स क्षेत्र के पेट्रोलिंग पाइंट 15 से सेना हटाई जाएगी।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा है कि गोगरा-हॉट स्प्रिंग्स पर 8 सितंबर से ही दोनों सेनाओं की ओर से पीछे हटने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। उन्होंने बताया कि 12 सितंबर तक दोनों सेनाएं इस जगह को खाली कर देंगी। दोनों पक्षों के बीच सहमति बनी है कि पूरे क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से सैनिकों को हटाया जाएगा और वापस अपने क्षेत्र में बुलाया जाएगा। चीनी सेना ने कहा है कि गोगरा-हॉटस्प्रिंग्स पीपी-15 से दोनों देशों की सेनाओं की वापसी की प्रक्रिया शुरू हो गई है। यह सुनियोजित व समन्वित ढंग से होगी। जुलाई में हुई चीन-भारत के कोर कमांडर स्तर की 16 वें दौर की वार्ता में बनी आम सहमति के अनुसार 8 सितंबर से जियान डाबन के क्षेत्र में चीनी और भारतीय सैनिकों ने समन्वित और नियोजित तरीके से वापसी शुरू कर दी है।

चीनी रक्षा मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को बीजिंग में जारी प्रेस विज्ञप्ति में यह बात कही गई है। इसमें सीमावर्ती इलाकों में शांति के लिए अनुकूल माहौल बनेगा। बीजिंग में तैनात भारतीय अधिकारियों ने भी पुष्टि की कि चीन की सैन्य प्रेस विज्ञप्ति द्वारा संदर्भित जियान डाबन क्षेत्र गोगरा-हॉटस्प्रिंग्स

क्षेत्र में पेट्रोलिंग प्वाइंट 15 के समान है, जिसका उल्लेख गुरुवार को जारी भारतीय प्रेस विज्ञप्ति में किया गया है। हालांकि, साझा बयान में दोनों पक्षों ने इस क्षेत्र के नाम अलग-अलग बताए हैं। भारत के प्रेस सूचना ब्यूरो, पीआईबी द्वारा गुरुवार रात दिल्ली में जारी संयुक्त बयान में कहा गया कि 8 सितंबर 2022 को भारत चीन कोर कमांडर स्तर की बैठक में हुई सहमति के अनुसार, क्षेत्र में भारतीय और चीनी सैनिकों ने गोगरा-हॉटस्प्रिंग्स पीपी-15 से वापसी शुरू कर दी है।

एससीओ की बैठक में मिलेंगे मोदी-जिनपिंग?: उज्बेकिस्तान में शंघाई सहयोग संगठन ;एससीओ के वार्षिक शिखर बैठक होने जा रही है। इस सम्मेलन से करीब एक सप्ताह पहले यह घोषणा की गई। इस बैठक में पीएम नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के भाग लेने की उम्मीद है। कयास लगाए जा रहे हैं कि दोनों नेताओं की यहां मुलाकात हो सकती है। हालांकि, दोनों ओर से इस पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

भारत चीन सैन्य गतिरोध दूर करने की दिशा में यह एक और बड़ा कदम है। हालांकि अभी कई क्षेत्रों में दोनों देशों की सेना डटी हुई है। भारत लगातार कह रहा है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति जरूरी है, तभी द्विपक्षीय रिश्तों में समग्र सुधार होगा। दोनों देशों की सेनाओं के बीच लद्दाख मामले में अब तक 16 बार बातचीत हो चुकी है।

पाक को दी सौगात पर अमेरिका की सफाई: यह एफ-16 फाइटर जेट के स्पेयर पार्ट्स की बिक्री, मदद नहीं

वॉशिंगटन: अमेरिका ने पाकिस्तान को एफ-16 फाइटर जेट के रखरखाव के लिए 45 करोड़ डॉलर यानी 3,581 करोड़ देने की मंजूरी दी है। एक अमेरिकी राजनयिक ने इंटरव्यू में बताया कि यह पाकिस्तान के साथ मौजूदा एफ-16 बेड़े के लिए स्पेयर पार्ट्स की बिक्री है, ना कि अमेरिकी सरकार ने उनकी सहायता की है। दक्षिण एशिया और मध्य एशियाई मामलों के अमेरिकी सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लू ने बताया कि यह अमेरिका की वर्ल्डवाइड पॉलिसी है कि जब वह किसी देश को डिफेंस इक्विपमेंट्स देता है तो अंत तक उसके रखरखाव के लिए बाकी सहयोग भी मुहैया करवाता है। हम फाइटर जेट के विंग्स और इक्विपमेंट्स की सर्विसिंग की बात कर रहे हैं। ऐसे में यह बिक्री है, मदद नहीं। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान के पास मौजूद एफ-16 लड़ाकू विमानों के बेड़े में काफी पुराने विमान हैं। इनमें से कुछ विमान 40 साल से अधिक पुराने हैं, जो बिना मेंटेनेंस के खराब हो जाएंगे। इससे वे पायलटों और अन्य लोगों के लिए खतरा हो सकते हैं। डोनाल्ड लू ने कहा कि इस दौरान पाकिस्तान को कोई नए वेपन सिस्टम नहीं दिए जाएंगे।

बिल्किस बानो गैंगरेप: दोषियों की रिहाई के खिलाफ याचिका पर सुनवाई टली

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने बिल्किस बानो गैंगरेप केस के दोषियों की रिहाई के खिलाफ याचिका पर सुनवाई तीन हफ्ते के लिए टाल दी है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद रिहा हुए 11 लोगों को याचिकाकर्ताओं की तरफ से पक्षकार नहीं बनाने की वजह से सुनवाई टली। अब इस मामले में रिहा लोग जवाब दाखिल कर सकेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने गुजरात सरकार से याचिका पर दो हफ्ते में जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने 25 अगस्त को गुजरात सरकार को नोटिस जारी किया था। कोर्ट ने इस मामले में

दोषियों को भी पक्षकार बनाने का निर्देश दिया था। याचिका सीपीएम की नेता सुभाषिनी अली ने दायर की है। याचिका में कहा गया है कि बिल्किस बानो गैंगरेप के 11 दोषियों को रिहा करना गैरकानूनी है। इन्हें 14 लोगों की हत्या का भी दोषी करार दिया गया था। उल्लेखनीय है कि 27 फरवरी, 2002 को गोधरा कांड के बाद पूरे गुजरात में सांप्रदायिक दंगे भड़क गए थे। इसी के बाद 3 मार्च, 2002 को अहमदाबाद से 250 किमी दूर रंधीकपुर गांव में बिल्किस बानो के परिवार पर भीड़ ने हमला कर दिया था। इस हमले में बिल्किस की 3 साल की बेटी सहित उसके परिवार के सात लोगों की हत्या कर दी गई थी। पांच माह की गर्भवती बिल्किस बानो के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया था।

मानव विकास सूचकांक में श्रीलंका, बांग्लादेश और भूटान से पीछे भारत

नई दिल्ली: संयुक्त राष्ट्र संघ के घटक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने वर्ष 2021 के लिए मानव विकास सूचकांक की रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट की मुताबिक भारत 191 देशों की सूची में 132वें स्थान है। चौंकाने वाला तथ्य ये है कि भारत मानव विकास के मामले में श्रीलंका, बांग्लादेश और भूटान से पीछे है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा हर वर्ष जारी किये जाने वाली मानव विकास सूचकांक रिपोर्ट में भारत पिछले वर्ष 131वें स्थान पर था।

राष्ट्रपति ने शुरू किया प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान

नई दिल्ली: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान का वर्चुअल शुभारंभ किया और लोगों से 2025 तक देश से तपेदिक (टीबी) को खत्म करने के लिए एकजुट होकर प्रयास करने का आह्वान किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान को उच्च प्राथमिकता देना तथा इसे जन आंदोलन बनाना सभी नागरिकों का कर्तव्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत में अन्य सभी संक्रामक रोगों की अपेक्षा सबसे अधिक संख्या में लोगों की मृत्यु टीबी से होती है।

उन्होंने कहा कि विश्व की कुल जनसंख्या में भारत की जनसंख्या का हिस्सा 20 प्रतिशत से कुछ कम है लेकिन विश्व में टीबी के कुल मरीजों में 25 प्रतिशत से अधिक मरीज भारत में हैं। यही चिंता की बात है। उन्होंने यह भी कहा कि टीबी से प्रभावित ज्यादातर लोग समाज के गरीब वर्ग से आते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि न्यू इंडिया की सोच और कार्यप्रणाली भारत को विश्व का अग्रणी राष्ट्र बनाने की है। भारत ने कोविड-19 महामारी से निपटने में दुनिया के सामने एक मिसाल कायम की है। आत्मविश्वास के साथ आगे चलने की नए भारत की रीति-नीति टीबी उन्मूलन के क्षेत्र में भी दिखाई दे रही है। संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों के अनुसार, सभी राष्ट्रों ने वर्ष 2030 तक टीबी उन्मूलन का लक्ष्य निर्धारित किया है। लेकिन भारत सरकार ने उसके पांच वर्ष पहले ही यानि वर्ष 2025 तक टीबी के उन्मूलन का संकल्प लिया है और इसे पूरा करने के लिए हर स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि इस अभियान को जन आंदोलन बनाने के लिए लोगों में टीबी के प्रति जागरूकता पैदा करनी होगी। उन्हें बताना होगा कि इस बीमारी से बचाव संभव है।

सिद्दीकी कप्पन को सुप्रीम कोर्ट से जमानत

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने हाथरस हिंसा की साजिश में गिरफ्तार सिद्दीकी कप्पन को शुक्रवार को जमानत दे दी। चीफ जस्टिस यूयू ललित की अध्यक्षता वाली बेंच ने जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। कोर्ट ने कप्पन को निर्देश दिया कि वो रिहाई के बाद छह हफ्ते तक दिल्ली के जंगपुरा में रहेंगे। दिल्ली में कप्पन हर हफ्ते पुलिस के समक्ष अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। छह हफ्ते तक कप्पन बिना कोर्ट की अनुमति के दिल्ली के बाहर नहीं जाएंगे। दिल्ली में छह हफ्ते रहने के बाद कोर्ट ने कप्पन को अपने गृहनगर केरल जाने की अनुमति दे दी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कप्पन केरल में स्थानीय थाने में हर हफ्ते अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। कप्पन को तीन दिनों के अंदर ट्रायल कोर्ट में पेश किया जाए और जमानत की शर्तें तय हों। सुनवाई के दौरान उत्तर प्रदेश सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में हाथरस हिंसा की साजिश में गिरफ्तार सिद्दीकी कप्पन की जमानत अर्जी का विरोध किया था। उत्तर प्रदेश सरकार ने कहा था कि कप्पन के राष्ट्रविरोधी एजेंडा रखने वाले पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) जैसे चरमपंथी संगठन से गहरे संबंध रहे हैं। वो दूसरे आरोपितों के साथ मिलकर देश में आंतक, धार्मिक कलह भड़काने की साजिश में शामिल था। उत्तर प्रदेश सरकार का कहना था कि कप्पन को ऐसे आरोपित के साथ गिरफ्तार किया गया, जो पहले भी दंगों में शामिल रहा है।

लम्पी से राजस्थान में 46 हजार गायों की मौत

जयपुर: लम्पी वायरस ने देश के 15 राज्यों के 175 जिलों में पैर पसार लिए हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार देशभर में अब तक 15 लाख से ज्यादा गाय संक्रमित हो चुकी हैं और 75 हजार की मौत हो चुकी है। सबसे खराब हालात राजस्थान में हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, यहां अब तक 10.61 लाख गायें संक्रमित हो चुकी हैं, जबकि 46 हजार से अधिक की मौतें हो चुकी हैं। हालांकि जमीनी हालत इससे कहीं भयानक हैं।

राजस्थान में एक लाख से ज्यादा गायों की मौत: गोवंश के मौतों का आंकड़ा एक लाख पार कर चुका है।

इससे गो-पालन पर निर्भर परिवारों के सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया है। दूसरी ओर दूध की भी किल्लत होने लगी है। इसी बीच, केंद्र सरकार ने कहा है कि जिन राज्यों में संक्रमण बढ़ रहा है, वहां वैक्सनेशन तेज करें। पशुपालन विभाग ने अगले 2 महीने में 40 लाख गायों के वैक्सीनेशन का टारगेट रखा है। हालांकि एक पहलू यह भी है कि सबसे अधिक संक्रमित जिलों जोधपुर और बाड़मेर में कई दिन से वैक्सीनेशन ही बंद है। जोधपुर में अब तक 1,13,485 और बाड़मेर में 1,01,487 गायें संक्रमित हो चुकी हैं। जिन राज्यों में लम्पी का कहर ज्यादा है, वहां की सरकारों को बारिश थमने का इंतजार है। माना जा रहा है कि वायरस के अधिक सक्रिय होने का कारण बारिश है। बारिश रुकते ही वायरस फैलाने वाले मच्छर-मक्खी कम होंगे और लम्पी पर लगाम लग जाएगी। इस बीच, वैक्सीन लगाने का काम जरूर तेजी से हो रहा है।

विपक्ष में हर कोई पीएम पद के लिए पेश कर रहा दावेदारी: सुशील मोदी

बिहार में लौटा जंगलराज: सुशील मोदी

पटना: बीजेपी के राज्यसभा सांसद सुशील मोदी ने विपक्षी एकता को लेकर तंज कसा। उन्होंने कहा कि हर कोई दावेदारी कर रहा है। राहुल जी अलग यात्रा निकाल रहे हैं, अरविंद केजरीवाल अलग यात्रा निकाल रहे हैं। नीतीश जी राजनीतिक पर्यटन पर निकले हैं। ये सभी लोग मिल जाएंगे तो भी नरेंद्र मोदी का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि ममता जी पहले कांग्रेस को तो साथ बैठ लें। हर कोई दावेदारी कर रहा है। भाजपा के राज्यसभा सांसद सुशील मोदी ने बिहार में जंगलराज के लौटने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हाल ही में पटना में हत्या की घटनाएं हुई हैं। ऐसा लगता है कि लालू यादव के शासन के पुराने दिन वापस आ गए हैं, लेकिन बिहार के सीएम चुप हैं और दिल्ली

चले गए। लौटने के बाद उनकी मुलाकात लालू यादव से हुई जो खुद अपराध और भ्रष्टाचार के प्रतीक हैं। वे कानून-व्यवस्था को संभाल नहीं सकते। इससे पहले बिहार में भाजपा और जेडीयू का गठबंधन टूटने के बाद से ही भाजपा नेता नीतीश सरकार के साथ ही राजद के खिलाफ हमलावर हैं। हाल ही में उन्होंने नीतीश कुमार के दिल्ली दौरे पर सवाल खड़े किए थे। वहीं, अब उन्होंने राजद एक मंत्री पर निशाना साधा। पूर्व उपमुख्यमंत्री ने गुरुवार को पटना में भाजपा कार्यालय में प्रेस कांफ्रेंस कर बिहार सरकार में खनन मंत्री रामानंद यादव पर कई गंभीर आरोप लगाए थे। इतना ही नहीं उन्होंने रामानंद यादव को बर्खास्त कर किसी अन्य दल के विधायक को ये मंत्रालय दिए जाने की मांग की थी। इस दौरान उन्होंने नीतीश कुमार पर भी तंज कसा था। राज्यसभा सांसद ने कहा कि उन्होंने दूध की रखवाली करने की जिम्मेदारी बिल्ली को दे दी है। उन्होंने कहा कि सीएम अपने शासन में साफगोई की बात करते हैं, अब वह इन आरोपों पर जवाब दें।

नूपुर शर्मा को सुप्रीम कोर्ट से राहत

गिरफ्तारी की मांग वाली याचिका पर विचार से इनकार, पिटिशनर से कहा- इसे वापस लो

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को नूपुर शर्मा की गिरफ्तारी की मांग करने वाली याचिका को वापस लेने का सुझाव दिया। चीफ जस्टिस यूयू ललित की अगुआई वाली पीठ ने याचिकाकर्ता से कहा- ऐसी याचिका करना बहुत ही सरल लगता है, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम होते हैं।

हमारा सुझाव इसे वापस लेने का है। 26 मई को एक टेलीविजन चैनल पर नूपुर शर्मा ने पैगंबर मोहम्मद के बारे में टिप्पणी की थी। इसके बाद देश में एक बड़ा

विवाद और हिंसा शुरू हो गई थी। कई मुस्लिम देशों ने भी अपना विरोध दर्ज कराया था इसके बाद भाजपा ने शर्मा की टिप्पणियों से खुद को अलग कर उन्हें पार्टी से निलंबित कर दिया था।

19 जुलाई को भी गिरफ्तारी पर रोक लगाई थी: 19 जुलाई को सुनवाई में कोर्ट ने 10 अगस्त तक उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी थी। कोर्ट ने 8 राज्यों और केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया था।

खबर संक्षेप

स्थानीय निकाय चुनाव को लेकर भाजपा की बैठक आज

सहसों। भारतीय जनता पार्टी गंगापार की आज शनिवार को समय 1बजे दिन छत्रपति शिवाजी डिग्री कालेज सहसों में नगर निकाय चुनाव सम्बंधित एक महत्वपूर्ण बैठक जिला अध्यक्ष अश्विनी कुमार द्विवेदी की अध्यक्षता में समपन्न होगा। उक्त बैठक में जिले के पूर्व जिला अध्यक्ष, जिला पदाधिकारी, मण्डल अध्यक्ष, मोचाओं के जिला अध्यक्ष, स्थानीय निकाय के जिला संयोजक, सांसद, विधायक, सदस्य विधान परिषद, जिला पंचायत अध्यक्ष, क्षेत्रीय पदाधिकारी, प्रदेश पदाधिकारी, नगर पार्षद, जिला मिडिया, शोशल मिडिया, आई.टी.विभाग के जिला संयोजक की उपस्थिति रहेगी तथा बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष जिला प्रभारी, सदस्य विधान परिषद आदरणीय लक्षमण आचार्य जी का मार्गदर्शन सभी को प्राप्त होगा। उक्त जानकारी जिला मीडिया प्रभारी बृजेश कुमार त्रिपाठी ने दिया।

ग्राम पंचायतों में आवश्यक है विकास मापी सूचकांक की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। ग्राम पंचायत भइयां में ग्रामीणों द्वारा जन पंचायत का आयोजन किया गया। जिसमें उपस्थित ग्रामीण बंशबहादुर मिश्र, पूर्व प्रधान बंधू आदिवासी, अमरनाथ पटेल, आदि ने बताया कि अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान गांव में विकास कार्य कराए जा रहे हैं किन्तु शासन की मंशा मुताबिक कार्य नहीं हो रहा है। क्वालिटी में कमी देखने को मिल रही है जिसका प्रमाण तालाब की खुदाई से लेकर स्मृति उपवन बनाने में स्पष्ट दिखाई दे रही है। उपस्थित ग्रामीणों का कहना है कि तालाब के भीटा को कम करने के लिए सैकड़ों पुराने पेड़ों को काटा गया फिर कंटीले तारों से घेर कर पौधरोपण की योजना बनाई जा रही है। चाहिए तो यह था कि यदि दूरगामी परिणाम को ध्यान में रखकर फलदार पौधों की रोपाई की जाती तो आने वाले समय में ग्राम पंचायत को आमदनी का भी श्रोत मिलता, किन्तु पंचायत सचिव व ग्राम प्रधान द्वारा जिस प्रकार से पूर्व में वनविभाग से जंगली पेड़ लाते थे और प्रधान के घर पर ही नष्ट हो जाते हैं यदि वही पौधे लगाए जाने की योजना बनाई गई होगी तो फिर तैयार पेड़ों की कटाई ही क्यों कराई गई। जनसुनवाई फाउंडेशन के ग्राम वालंटियरों द्वारा 175 विंदुओ की विकास मापी सूचकांक का आंकलन करने पर पाया गया कि गांव में सरकारी शौचालय निर्माण शासन के मंशा मुताबिक नहीं हुआ है जिसकी वजह से आज भी अधिकांश ग्रामीण खुले में ही शौच करते हैं। सामुदायिक शौचालय निर्माण भी मात्र दिखावा है। ऐसे स्थान पर कराया गया है जो कि बस्ती से दूर व अधूरा है। मच्छर अवरोधी दवा का छिड़काव न होने से तालाब के किनारे बसे मजदूर वर्ग सहित सैंकड़ों ग्रामीणजन मलेरिया से जूझ रहे हैं। जनपंचायत में उपस्थित ग्रामीणों ने बताया कि पचास से अधिक गरीब -मजदूर वर्ग के परिवारों को सरकारी सस्ते राशन की दुकान का लाभ कोरोना काल से लेकर आज तक नहीं मिल पा रहा है। क?ई परिवारों के पास आवासीय भूखंड का पट्टा न होने के कारण प्रधानमंत्री आवास तालाबों पर ही बनाए जा रहे हैं। इसी तरह से अन्य क?ई जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ गरीब ग्रामीणों तक नहीं पहुंच पा रहा है जिसकी रिपोर्ट बनाते हुए जनसुनवाई फाउंडेशन के जनपद प्रभारी अधिवक्ता विवेक सिंह रानू ने बताया कि जनपंचायत में उपस्थित ग्रामीणों की हस्ताक्षर युक्त कांपी जिलाधिकारी प्रयागराज को देते हुए प्रधानमंत्री शिकायत पोर्टल पर भी प्रेषित की जायेगी।

देवा हो देवा गणपति देवा की गूंज के साथ गणेश प्रतिमा का हुआ विसर्जन

डीजे की धुन पर थिरकते हुए गणेश भक्तों ने खूब उड़ाए रंग गुलाल

रत्योरा। कोरांव बाजार में 31 अगस्त से चल रहे गणेश पूजन महोत्सव कार्यक्रम का समापन गुरुवार शाम को हो गया था। शुक्रवार को डीजे एवं गाजे-बाजे के साथ गणेश भक्तों द्वारा रंग अबीर गुलाल उड़ाते हुए भगवान गणेश की प्रतिमा का विसर्जन प्रशासन द्वारा निश्चित किए गए स्थान तहसील मुख्यालय के पीछे स्थित तालाब में किया गया। गणेश महोत्सव का आयोजन बजरंग दल कमेटी कोरांव की ओर से किया गया। नौ दिवसीय कार्यक्रम में कमेटी के सभी वालंटियर गणेश महोत्सव के पंडाल में सुरक्षा व्यवस्था में देखे गए। गणेश विसर्जन यात्रा में डीजे की धुन पर थिरकते हुए भक्तों ने देवा हो देवा गणपति देवा के गीत गाते हुए मूर्ति विसर्जन किया। प्रतिमा विसर्जन को लेकर पुलिस भी तैनात रही और रूट डायवर्जन करते देखी गई। आयोजन समिति के अखिलेश जायसवाल, रितिक केसरी, मलकीत सिंह, शिवम केसरी, गोलू केसरी, हर्ष केसरी, हर्ष जायसवाल, अमन केसरी, अभिनव केसरी, ऋषभ केसरी, सुमित केसरी, राहुल बरनवाल, सोनू केसरी आदि वालंटियर गणेश महोत्सव पूजन के दौरान व्यवस्था समेत आयोजन के सभी कार्यो की देखरेख करते रहे।

न्यूज झरोखा

एक मुश्त समझौता योजना के तहत वसूली अभियान चलाकर दी गई जानकारी

जसरा। एक मुश्त समझौता योजना के तहत चलाये जा रहे अभियान में विकास खंड जसरा के अंतर्गत इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट कॉपरेटिव बैंक लिमिटेड इलाहाबाद शाखा जसरा द्वारा वसूली अभियान चलाकर लोगों को जानकारी दी गई। उक्त अभियान के अंतर्गत जिला सहकारी बैंक प्रयागराज के अनुभाग अधिकारी मोहम्मद बिलाल द्वारा ग्राम पंचायत रेरा, पांडर, जसरा , मुंड़ेहरा, कोटवारन का पूरा आदि गांवों का भ्रमण कर वसूली के लिए बकायेदारों से संपर्क कर नगद वसूली कराई गई। साथ ही ओटीएस के विषय में पूरी जानकारी लोगों को दी गई। एवम् बकायेदारों के शेष धन को एक से दो दिन में जमा कराने के लिए मोहलत देकर तकादा किया गया। वसूली अभियान में शाखा प्रबंधक संदीप सोनकर, समिति सचिव विजय यादव , ज्ञानेन्द्र पाठक,रामनाथ,दिनेश सिंह आदि कर्मचारी साथ में मौजूद रहे।

अप्पे पलटने से बैठी सवारी गंभीर रूप से घायल

सहसों। थरवई थाना क्षेत्र के प्रयागराज गोरखपुर राजमार्ग पर भोपतपुर गांव के सामने शुक्रवार की दोपहर में फूलपुर से सवारी लेकर सहसों जा रही अप्पे सवारी वाहन बाइक को बचाने में अनियंत्रित होकर पलट गई। जिस पर सवार रामनाथ पट्टी देवनहरी गांव निवासी 60 वर्षीय चुन्नी देवी पत्नी स्वर्गीय भोलानाथ तथा चंद्रपाल 65 वर्ष पुत्र ईश्वरदीन निवासी दुर्जनपुर झूसी गंभीर रूप से घायल हो गए। तेज आवाज सुनकर मौके पर पहुंचे स्थानीय लोगों ने आनन-फानन में पास के निजी अस्पताल में दोनों लोगों को इलाज के लिए भर्ती कराया। जहां पर चंद्रपाल की गंभीर स्थिति देखते हुए चिकित्सकों ने प्रयागराज के लिए रेफर कर दिया। वहीं चुन्नी देवी का इलाज चल रहा है। मौके पर पहुंची थरवई पुलिस ने आवश्यक लिखा पढ़ी करते हुए अप्पे को कब्जे में लेकर थाने चली गई।

थाना परिसर में मनाया प्रभारी निरीक्षक का जन्मदिन

रत्योरा। थाना परिसर कोरांव में प्रभारी निरीक्षक धीरेंद्र सिंह का गुरुवार शाम को बड़े ही धूमधाम के साथ जन्मदिन मनाया गया। जन्मदिन कार्यक्रम में बधाई देने वाले शुभचिंतकों का जमावड़ा देर रात तक लगा रहा। प्रभारी निरीक्षक के कक्ष में रात लगभग 9 बजे के आसपास केक काटकर सुभेच्छुओं द्वारा प्रभारी निरीक्षक को जन्मदिन की बधाई दी। फेसबुक और व्हाट्सएप पर प्रभारी निरीक्षक के जन्मदिन की सूचना पाकर शाम को थाने पर बधाई देने वाले लोगों का तांता लग गया। इस बीच थाना परिसर में ही केक काटकर प्रभारी निरीक्षक का बड़े ही उत्साह व हर्षोल्लास के साथ जन्मदिन मनाया गया। प्रभारी निरीक्षक कोरांव को सुबह से ही जन्मदिन की बधाई व्हाट्सएप और फेसबुक के जरिए दी जा रही थी शाम को थाना परिसर में केक काटकर जन्मदिन मनाया गया।बधाई देने वाले लोगों में प्रमुख रूप से बबुआन द्विवेदी, जिला पंचायत सदस्य सोमदत्त सिंह पटेल, सपा नेत्री अनीता शुक्ला समेत कई ग्राम प्रधान भी मौजूद रहे।

विनीत मौर्या ने नीट परीक्षा पास कर क्षेत्र का नाम किया रोशन

मऊआइमा। नीट की परीक्षा में मऊआइमा के विनीत मौर्या ने 720 में 655 अंक प्राप्त कर गांव का नाम रोशन किया। जिससे परिजनों में जश्न का माहौल है। मऊआइमा के ग्राम रामनगर गंसियारी गांव निवासी श्रीचन्द्र मौर्या एक साधारण किसान हैं । उनका पुत्र विनीत कुमार मौर्या शुरूआती दौर में पढाई में तेज था। विनीत कुमार मौर्या हाईस्कूल की परीक्षा एल डीसी , में 2016 में 72 प्रतिशत तथा इन्टरमीडिएट शिवगंगा फाफामऊ में 2018 में 58 प्रतिशत अंक लाया। नीट की परीक्षा में विनीत कुमार के आने की खुशी में पिता श्री चन्द्र मौर्य ,माता सुरेमा देवी तथा भाईयों सहित गांव में खुशी का माहौल व्याप्त है। और मिष्ठानों का वितरण किया जा रहा है।

विद्युत कटौती से आजिज किसानों ने विद्युत उपकेंद्र का किया घेराव, ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

जसरा। सूखे के चलते सूख रही फसलों की सिंचाई के लिए मानक के अनुरूप बिजली ना मिल पाने से खपा किसानों ने शुक्रवार के दिन गौहनिया उपकेंद्र का घेराव कर नारेबाजी की । किसानों की नाराजगी देख मौके पर क्षेत्रीय जेई पहुंचे । जिन्होंने किसानों को कम क्षमता का ट्रांसफार्मर होने का हवाला देते हुए बताया कि ओवर लोडिंग के चलते बिजली ट्रिप कर जाती है । जब तक क्षमता नहीं बढ़ेगी तब तक समस्या बनी रहेगी। इस बीच किसानों ने एक्सीयन को संबोधित मांग पत्र लोड बढ़ाने व केंद्र को रोश्टिंग फ्री करने का सौंपा। किसानों ने इस बीच बिजली व्यवस्था जल्द ना ठीक होने पर आगे मोर्चा खोलने की भी चेतावनी दी। बताते चले कि गौहनिया विद्युत उपकेंद्र से संचालित तरहार फीडर पर आने वाले गांव तातारगंज,परसरा,छिड़िया,चिल्लागौहानी ,बसहरा तक मे लगभग तीन सौ निजी नलकूप किसानों के हैं ,साथ ही दो दर्जन सरकारी नलकूप व कई पेयजल योजनाएं भी गौहनिया विद्युत उपकेंद्र के तरहार फीडर से संचालित है । लेकिन इधर विगत एक माह से बिजली की व्यवस्था बुरी तरह से पटरी से उतर गई है । एक ओर जहां मानसून भी किसानों के साथ दगा दे दिया और क्षेत्र में विगत कई दिनों से बारिस नहीं हुई । जिससे किसानो की खून पसीने व लंबी लागत से खेत मे लगी धान की फसल सूखने के कगार पर पहुंच गई । इसी बीच बिजली ने भी धोखा दिया तो किसानों की दिन का चैन व रात की नींद हराम हो गई । पूरी रात किसानो की बिजली केवि इंतजार में बीत जाती है । चौबीस घंटे में इन दिनों किसानो को ठीक से चार घंटे भी बिजली नहीं मिल पा रही है। जिससे नाराज किसानों ने शुक्रवार के दिन गौहनिया विद्युत उपकेंद्र का घेराव किया । किसानों के घेराव की सूचना पर पहुंचे जेई पंकज मौर्य ने किसानों की समस्या सुन अपनी समस्या बताई। किसानों ने अधिशाषी अभियन्ता से फोन से बात की जिस पर उन्होंने अपनी मांग का पत्र लिखने को कहा। जिस पर किसानों ने अधिषासी अभियंता प्रयागराज को संबोधित बिजली की क्षमता व रोस्टिंग फ्री करने की मांग का पत्र जेई को सौंपा। सत्येंद्र प्रताप सिंह,भैयाजी पाठक, दिवाकर तिवारी, मुन्ना पाठक,भास्कर सिंह,उमेश पाठक, शिवम पांडेय, अभिषेक शुक्ल, रावेंद्र तिवारी आदि सैकडों किसान मौजूद रहे।

बिजली कटौती से ग्रामीण उपभोक्ता परेशान रोस्टिंग और फाल्ट से आपूर्ति बाधित, दिनचर्या बिगड़ी

लालापुर। क्षेत्र में उमस वाली गर्मी के साथ विद्युत व्यवस्था में रोस्टिंग कटौती से लोग परेशान हैं। बिजली की आंख मिचौली की समस्या से ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोस्टिंग कटौती की जा रही है।भीषण गर्मी व उमस भरे इस मौसम में गांवो में प्रतिदिन कई बार लोगो को अघोषित रोस्टिंग कटौती का सामना करना पड़ रहा हैं। लोगों का कहना है कि तेज धूप व उमस ने सभी को परेशान करके रखा है। ऊपर से बिजली की आंख मिचौली व अघोषित रोस्टिंग कटौती इस समय आग में घी डालने का काम कर रही है। रात हो या दिन किसी भी वक्त बिजली गुल हो जाती है। एक दिन में आठ से दस बार बिजली गुल होना आम बात हो गई है और रात के वक्त लो वोल्टेज के कारण कूलर व पंखे काम करना बंद कर देते है। बिजली की इस आंख मिचौली के कारण छोटे-छोटे बच्चों को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बिजली कटौती ने लोगों का जीना हराम कर दिया है। बिजली विभाग द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह स्थिति क्षेत्र में लगातार बनी हुई है। गर्मी के मौसम में लोगों को नियमित रूप से बिजली नहीं मिलने से परेशानी और भी बढ़ गई है। उधर, ग्रामीणों में तारों के मकड़ जाल से होने वाले फाल्ट से परेशान हैं। इस पर विजली विभाग कार्यलय का कहना है कि ऊपर से रोस्टिंग की वजह से बिजली कटौती की जा रही है। स्थानीय बिजली घरों से कोई भी कटौती नहीं की जा रही है। भीषण गर्मी में बिजली व्यवस्था ठीक करने के तमाम प्रयास किए जा रहें हैं।

दो तमंचा एक कारतूस के साथ एक बदमाश को पुलिस ने दबोचा

मऊआइमा। संदिग्ध हालात में घूम रहे एक युवक को पुलिस ने दबोच कर जामा तलाशी ली तो उसके पास से दो 315 बोर का तमंचा व एक जिंदफ कारतूस बरामद हुआ। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपी को जेल भेज दिया। जानकारी के मुताबिक सोरांव थाना क्षेत्र के ग्राम कलुआपुर निवासी रविशंकर पासी पुत्र राम किशोर मऊआइमा के ग्राम जमखुरी के एक बाग में संदिग्ध हालात में घूम रहा था। मुखबिर की सूचना पर मऊआइमा पुलिस पहुच कर चारों तरफ घेराबंदी करके दौडा कर दबोच लिया। जामातलाशी में रविशंकर पासी के पास से 315 बोर का दो तमंचा एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपी रविशंकर को जेल भेज दिया।

शिक्षक पर्व पर नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

जंघई। शिक्षक पर्व के अवसर पर नागरिक पीजी कॉलेज जंघई के प्राध्यापकों द्वारा रचित कृतियों की पुस्तक प्रदर्शनी (अभिव्यक्ति) शिक्षक पर्व के समापन दिवस 9 सितंबर को आयोजित की गई। शिक्षकों की अकादमिक उपलब्धि से विद्यार्थियों को परिचित एवं रचनात्मक और कल्पनाशीलता के प्रति जागरूकता कराने के उद्देश्य से यह प्रदर्शनी आयोजित की गई। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 राजीव मालवीय ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि रचनाकर्म एक गहन प्रतिबद्धता से ही संभव हो सकता है।कृति जब तक रचनाकार के पास होती है तब तक तो रचनाकार की होती है। प्रकाशन के बाद कृति पर पाठकों और समाज का हक हो जाता है प्राचार्य ने अपने लेखन के अनुभवों की भी साझेदारी की। डॉ रवि मिश्र ने इसी क्रम में अपने विचारों को प्रकट करते हुए बताया कि रचनाकार अपनी कृति के मूल्याकंन के प्रति हमेशा ही आश्वस्त नहीं होता है।यह संकट भवभूति के समय भी था, आज भी है। प्रदर्शनी के अवसर पर पुस्तकों को लेकर एक संवाद कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम में पुस्तक लेखन से संबंधित विविध पक्षों पर प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों की जिज्ञासा का शमन किया।एक विद्यार्थी और शोध छात्र के रूप में लेखन की विशिष्टता क्या है। अकादमिक स्तर पर उन्नयन कैसे हो, शोध में नैतिकता के विविध पहलू क्या हैं, इन सब पर विचार विमर्श किया गया। बृजेश यादव शारीरिक शिक्षा विभाग एवं विनोद कुमार पांडेय अंग्रेजी विभाग ने इस प्रदर्शनी के आयोजन में सक्रिय योगदान किया।इस अवसर पर महाविद्यालय के विविध विभागों से सम्बद्ध प्राध्यापकों की उपस्थिति रही।200 से अधिक छात्र छात्राओं ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और कार्यक्रम में सहभागिता की।

प्रयागराज मंडल के सदस्यता प्रभारी ने दिलाई सदस्यता

रत्योरा। अपना दल एस के राष्ट्रीय महासचिव सदस्यता प्रभारी प्रयागराज मंडल पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल ने अनिल कुमार सिंह कार्यवाहक विधानसभा अध्यक्ष युवा मंच कोरांव एवं विधानसभा अध्यक्ष संजय धनगर व जिलाध्यक्ष सांस्कृतिक मंच शिवबालक कोल, जिला सचिव अबरार हुसैन, विधानसभा महासचिव प्रभाकर सिंह, तेज बहादुर सिंह सिंह को पार्टी की सक्रिय सदस्यता दिलाई। इस दौरान विधानसभा अध्यक्ष युवा मंच अनिल कुमार सिंह उर्फ कमलाकर पटेल ने कहा कि अधिक से अधिक युवा पार्टी से जुड़ कर अपना दल एस की सदस्यता ग्रहण करें जिससे पार्टी मजबूत हो सके। मंडल सदस्यता प्रभारी पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल को अनिल कुमार पटेल ने आश्वस्त किया कि निश्चित तौर पर मैं अपने विधानसभा से अधिक से अधिक युवाओं को पार्टी में जोड़ने का काम करूंगा। इस दौरान सदस्यता प्रभारी पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल ने पदाधिकारियों से बृहद सदस्यता अभियान को सफल बनाने की अपील की। अनिल कुमार सिंह को तत्काल आकर पटेल ने मंडल सदस्यता प्रभारी को लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल का चित्र भी भेंट किया।

नाचते गाते भक्तों ने गणेश प्रतिमा का किया विसर्जन

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। घूरपुर के बादलगंज में स्थापित प्रथम पूज्य गौरी नंदन भगवान गणेश की प्रतिमा का शुक्रवार को गाजे-बाजे के साथ भक्तों ने विसर्जन किया। जुलूस निकालकर नाचते-गाते जयकारा लगाते हुए भक्त मूर्ति का विजर्सन किया। बादलगंज स्थित भाजपा नेता रमाकांत विश्वकर्मा के आवास पर विघ्नहर्ता गणेश को स्थापित किया गया था। शुक्रवार को गणपति को विदाई दी गई। दोपहर भाजपा नेता के सुपुत्र प्रशांत शर्मा ने अपनी धर्म पत्नी प्रिया शर्मा के साथ पंडित के मंत्रोचार के साथ विधि पूर्वक पूजा अर्चना हवन कर दर्जनों की संख्या में भक्तो के साथ हाथों में गणपति की प्रतिमा को उठाया और अबीर-गुलाल उड़ाते हुए डीजे के भक्ति गीतों पर नाचते-गाते जयकारा लगाते हुए पैदल ही पोखरा पर पहुंचे। यहां अंतिम पूजा करने के बाद मूर्ति को पानी में विसर्जित किया गया। इस दौरान भक्तों ने गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ के खूब जयकारे लगाए। इस मौके पर भाजपा नेता बृजेश पांडेय, पिंटू शर्मा, रिंकू शर्मा, बबलू, विनोद, अशोक, गीता देवी, गायत्री, दिव्या, डबली, बबली,वर्षा, काव्या, बिंदु, आनंद आदि दर्जनों भक्त शामिल रहे।

गणेश प्रतिमा दर्शन करने लोगों की उमड़ी भीड़

जसरा। जसरा बाजार में रिद्धि सिद्धि कमेटी द्वारा स्थापित गणेश प्रतिमा बप्पा के जयकारे से क्षेत्र गुंजायमान रहा। जसरा बाजार में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी गणेश प्रतिमा की स्थापना किया गया। जिसमें प्रत्येक दिन आरती के समय भव्य मेले का माहौल रहा। बाजार वासियों के साथ अगल बगल के गांव के लोगों ने भी अच्छी संख्या में प्रतिभाग किया। शुक्रवार को पंडाल में आखिरी दिन क्षेत्रीय विधायक वाचस्पति तथा ब्लाक प्रमुख अजीत प्रताप सिंह ने भी अपनी अपनी हाजिरी लगाई । शाम को हवन के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सेठ राजू केसरवानी, अमन केसरवानी, शिवा केसरवानी ,हर्ष जायसवाल, विपिन यादव, सुमित कुमार,दीपक कुमार, रवि मालवीय,यश केसरवानी सहित सैकड़ों लोगों ने भाग लिया।

ढोल नगाड़ों के साथ गणेश जी का विसर्जन

जारी। दिन शुक्रवार को जारी क्षेत्र के बालसंघ गणेश पूजा कमेटी बड़े हनुमान जी के मंदिर के सामने गली के अंदर के कार्यकताओं द्वारा भंडारा करके गणेश जी का विसर्जन बड़े ही धूमधाम के साथ किया गया ।और ढोल नगाड़ा और अबीर गुलाल के साथ गणपति बप्पा मोरिया मंगल मूर्ति मोरिया अगले बरस फिर से आना जयघोष के साथ नारे लगाए बप्पा को पांडालो से विदा करना भक्तों के लिए काफी भावुक पल होता है. गणेश महोत्सव का आखिरी दिन गणेश विसर्जन की परंपरा है. 10 दिवसीय महोत्सव का समापन अनंत चतुर्दशी के दिन विसर्जन के बाद होता है। तभी से यह मान?यता है कि 10वें दिन गणेश जी को शीतल करने के लिए उनका विसर्जन जल में किया जाता है. इस मौके पर ओमी अग्रहरी, नमन (बच्चा) अग्रहरि, हर्ष उर्फ बराती गुप्ता, डम्मा गुप्ता, अमन, अग्रहरी , नितेश गुप्ता , नितिन अग्रहरि ,अन्नू ,अखिलेश , शुभ, लल्ली संदीप, गुड्डू आदि कार्यकताओं के साथ गणेश जी का प्रसाद पूरे बाजार मे वितरण करते हुए विसर्जन नारीबारी गऊघाट मे प्रवाहित किया।

विधि विधान से पूजा अर्चना के बाद गणपति प्रतिमा का हुआ विसर्जन

झूंसी। क्षेत्र में शुक्रवार को लोग डीजे की धुन पर नाचते गाते अबीर गुलाल उड़ाते हुए भगवान गणेश को विसर्जित करने अंदावा तालाब पर पहुंचे। जहा भक्तो ने अगले बरस जल्दी आने का वचन लेकर भगवान गणेश की प्रतिमा को विसर्जित किया गया। पंडालो में लोगो ने भगवन गणेश के साथ लक्ष्मी जी, कार्तिकेय, रिद्धि, सिद्दी की मूर्ति की स्थापना कर विधि विधान से पूजा अर्चना किया सुबह शाम आरती में भरी संख्या में लोग पहुच रहे थे। शुक्रवार को बहुत से लोगो ने बीजे व ढोल ताशे की धुन पर नाचते गाते अबीर गुलाल उड़ाते हुए गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ का जय घोष करते हुए अंदावा तालाब में विसर्जित करने पहुचे और भगवान गणेश के साथ सभी देवी देवताओं का आशीर्वाद लेकर उनको विदा कर अपने अपने घरों को लौट गए। विसर्जन के लिए निर्धारित अंदावा तालाब पर प्रशासन की ओर से भी पूरी व्यवस्था की गई थी। पुलिस भी लगातार लोगो को गहरे पानी में जाने से मना कर रही थी।

जनता दर्शन कार्यक्रम में जुटे सैकड़ो फरियादी कुछ का हुआ मौके पर निस्तारण

जसरा। शुक्रवार को क्षेत्रिय विधायक डॉ वाचस्पति ने लोगों की समास्याओं को सुनते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को तत्काल निस्तारण करने का निर्देश दिया और कुछ समस्याओं को फोन करके समाधान किया। आपको बता दें कि बारा विधायक डॉ वाचस्पति जब से विधायक निर्वाचित हुए निरंतर लोगो के बीच में बने रहते हैं और सबकी समस्याओं को सुनते हैं। आज उन्होने एमवी कांवेंट स्कूल गौहानिया में अयोजित जनता दर्शन कार्यक्रम में आए दर्जनों फरियादियों की समस्या सुनी जिसमे बिजली की समस्या सबसे अधिक रही। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से भाजपा मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला, नीरज केसरवानी, फूलचंद पटेल, श्यामू निषाद, गोकुल प्रसाद, विजय बहादुर भदौरिया, अर्जुन विश्वकर्मा, पीयूष तिवारी, आलोक पाठक, अरुण मालवीय, हरिशरण सिंह, दिनेश प्रजापति, मेलाराम, अभिषेक शुक्ला, राहुल यादव सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री के जन्मदिन को लेकर हुई बैठक

सहसों। भाजपा अनुसूचित मोर्चा की एक बैठक शुक्रवार को छतत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज सहसों में जिला पंचायत सदस्य आशीष भारतीया की अध्यक्षता में की गई। जिसमें मुख्य अतिथि काशी क्षेत्र के उपाध्यक्ष अनुसूचित मोर्चा कविराज जी उपस्थित होकर कार्यकताओं को 17 सितंबर को होने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के कार्यक्रम के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर सभी कार्यकर्ता अपने-अपने मंडलों में उपस्थित होकर तैयारी के साथ जन्मदिन मनाएं जन्मदिन कार्यक्रम में बूथ स्तर से लेकर मंडल के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकताओं का होना अनिवार्य है। उन्होंने कहा इस अवसर पर मंडल में मंडल स्तर के कार्यकताओं एवं पदाधिकारी तथा जिले में जिले स्तर के कार्यकताओं एवं पदाधिकारी मौजूद रहने का दिशा निर्देश दिया। बैठक की शुरूआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। बैठक में प्रमुख रूप से सभी अनुसूचित मोर्चा के जिला पदाधिकारी सहित मंडल के समस्त कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

शिवराजपुर चौराहे से बाइक चोर को किया गिरफ्तार, मोटरसाइकिल हुई बरामद

शंकरगढ़। पुलिस ने शुक्रवार को एक बाइक चोर को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से चोरी की बाइक बरामद हुई है। यह जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने बताया कि थाने के सब इंस्पेक्टर अमरेंद्र सिंह अपनी टीम के साथ गश्त पर थे, इसी दौरान मुखबिर के जरिए मिली सूचना के आधार पर शिवराजपुर चौराहे से एक बाइक चोर को धर दबोचा। उसके पास चोरी की मोटरसाइकिल बरामद हुई है। थानाध्यक्ष ने बताया कि गिरफ्त में आया बाइक चोर कल्याण यादव पुत्र राजेंद्र प्रसाद यादव क्षेत्र के ग्राम बेरुई का रहने वाला है। उसके खिलाफ शंकरगढ़ थाने में पशु क्रूरता अधिनियम, पाक्सो एक्ट समेत कई गंभीर धाराओं वाले चार मामले पहले से पंजीकृत हैं। आज की बाइक बरामदगी के बाद धारा 411 के तहत केस पंजीकृत कर आरोपी का चालान भेज दिया गया है।

खबर संक्षेप

ग्राम प्रधान पर जान से मारने की नियत से किया गया हमला

सोरांव। तहसील क्षेत्र के थाना थरवई ग्राम पंचायत मनसैता के ग्राम प्रधान जानकी नाथ यादव के ऊपर शुक्रवार सुबह लगभग 9 बजे गांव के ही कुछ दबंगों द्वारा उनके घर पर आकर जान से मारने की नियत से उनकी मां से बहस करने लगे। शोरगुल सुन कर घर के अंदर से ग्राम प्रधान निकले और पूछने लगे। इतने में मौका पाकर विपक्षियों ने लाठी, डंडे से हमला कर दिया। जान बचाने के लिए ग्राम प्रधान घर के अंदर भाग गए। और 112 नंबर डायल कर पुलिस को सूचित किए कुछ देर बाद घटनास्थल पर पुलिस आई तो लोगों ने आपबीती बताई। विपक्षी ललकारते हुए मारकर भाग गए। जाते-जाते विपक्षियों ने ललकारते हुए कहे कि तुम्हारी प्रधानी करना दुश्वार कर देंगे। पीड़ित प्रधान थाने पर अमृत लाल यादव, राकेश यादव, रमेश यादव,लोक चंद्र यादव, अजीत यादव, पिंटू यादव, मेजर यादव, दीपक यादव, भोला यादव आदि के खिलाफ लिखित तहरीर देकर मुकदमा दर्जकर कार्यवाही करने की मांग की है।

भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच करवरिया बंधुओं व रिश्तेदार पैरोल पर रिहा

गुरुवार की रात पूर्व विधायक उदयभान करवरिया समेत पूर्व एमएलसी सूरजभान करवरिया और उनके रिश्तेदार रामचंद्र त्रिपाठी को जेल से रिहा किया गया था, शुक्रवार रात करीब आठ बजे पूर्व सांसद कपिलमुनि करवरिया रिहा हुए

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पूर्व विधायक जवाहर पंडित की हत्या के मामले में लंबे वक्त से जेल में बंद करवरिया बंधुओं को अदालत से एक महीने की पैरोल पर भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच रिहा कर दिया गया है। गुरुवार की रात पूर्व विधायक उदयभान करवरिया समेत पूर्व एमएलसी सूरजभान करवरिया और उनके रिश्तेदार रामचंद्र त्रिपाठी को जेल से रिहा किया गया था, जबकि शुक्रवार रात करीब आठ बजे पूर्व सांसद कपिलमुनि करवरिया रिहा हुए। वरिष्ठ जेल अधीक्षक पीएन पांडेय का कहना है कि कपिलमुनि करवरिया का एक मामला वाराणसी में लंबित होने के कारण उसमें जमानत नहीं मिली थी, जिसकी वजह से गुरुवार को उनको पेरोल पर नहीं छोड़ा गया था। स्वास्थ्य कारणों से हाई कोर्ट ने तीन रोज पहले इन सभी को पैरोल पर रिहा करने का आदेश जारी किया था। इन सभी को जवाहर पंडित हत्याकांड में उम्रकैद की सजा सुनाई गई है। जवाहर पंडित की हत्या अगस्त 1996 में प्रयागराज के सिविल लाइंस इलाके में कर दी गई थी। काफी हाउस के पास महात्मा गांधी मार्ग पर दिनदहाड़े उस वारदात में एके-47 राइफल का इस्तेमाल किया गया था। उस घटना के बाद जवाहर की पत्नी मौजूदा प्रतापपुर विधायक विजमा यादव ने पति के कातिलों के खिलाफ मजबूती के साथ अदालत में पैरवी शुरू की थी। इस हत्याकांड में ट्रायल लंबे समय तक थमा रहा। फिर अदालत के आदेश पर करवरिया बंधुओं को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। पिछले कई साल से तीनों भाई समेत रामचंद्र भी जेल में बंद हैं। मां के निधन और बेटी की शादी के वक्त पैरोल पर करवरिया बंधु जेल से रिहा हुए थे।

इंदिरा भवन परिसर में लावारिस अटैची मिलने से हड़कंप, बम डिस्पोजल दस्ता मौके पर

प्रयागराज। सिविल लाइंस सुभाष चौराहा स्थित इंदिरा भवन में लावारिस अटैची मिलने से हड़कंप मच गया है। सूचना मिलते ही पुलिस बम डिस्पोजल दस्ते के साथ मौके पर पहुंच गई है। मामले की छानबीन की जा रही है। डॉग स्क्वॉयड दस्ते को भी मौके पर बुला लिया गया है।अटैची को तोड़ने के बाद जब उसकी जांच की गई तो उसमें कई फाइलें मिली हैं और जीवन बीमा से संबंधित कागजात हैं। यह अटैची किसी एलआईसी अभिकर्ता की बताई जा रही है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

प्यार का खौफनाक अंत

सोती रही प्रेमिका, युवक ने जहर का इंजेक्शन लगाकर की खुदकुशी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज हाईकोर्ट के सामने एक होटल में बुधवार की रात युवक ने जहरीला इंजेक्शन लगाकर खुदकुशी कर ली। उस वक्त उसकी प्रेमिका सो रही थी। सुबह पता चला तो वह चीखने लगी। दस दिन पहले दोनों गोरखपुर से भागे थे। हाईकोर्ट में गुहार लगाने के लिए वे एक वकील से मिलने यहां पहुंचे थे, लेकिन युवक की हिम्मत जवाब दे गई। दोनों अलग अलग धर्मों के थे।देवरिया के खुखुंदू इलाके के गांव परसिया भगवती का रहने वाला आरिफ अंसारी (22) गोरखपुर में एक हास्पिटल में काम करता था। यहीं पर बांसगांव थाना क्षेत्र की रहने वाली बीएससी द्वितीय वर्ष की 20 वर्षीय छात्रा से उसकी दोस्ती हो गई। जल्द ही यह बात फैलनी लगी तो छात्रा के घर वालों ने दोनों के मिलने जुलने पर रोक लगा दी। 29 अगस्त को आरिफ और छात्रा गोरखपुर से भाग निकले। वे प्रयागराज पहुंचे। यहां उन्होंने एक वकील से संपर्क किया। वकील ने इस प्रकरण में खर्च के बारे में बताया।आरिफ के लिए यह रकम बहुत ज्यादा थी। इस बीच उसे यह भी पता चला कि छात्रा के घर वालों ने उसके खिलाफ बांसगांव थाने में उसके और दो महिलाओं के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज करा दिया है। इसके बाद दोनों लखनऊ चले गए। एक दो दिन रहने के बाद आगरा फिर अजमेर चले गए। इस बीच उनके पास रुपये खत्म होने लगे। वे दोबारा लखनऊ पहुंचे और खुदकुशी का निर्णय ले लिया।

शादी करना चाहते थे दोनों ...

हालांकि, छात्रा के समझाने पर दोनों वकील से मिलने के लिए सात सितंबर को दोबारा प्रयागराज आ गए। वकील से बात की गई, लेकिन कोई आश्वासन नहीं मिला। आरिफ बुरी तरह से टूट गया था। शाम को उसने छात्रा से फिर खुदकुशी की बात कही।वह दुकान से जहर और इंजेक्शन ले आया और छात्रा के सोने के बाद उसने जहरीला इंजेक्शन लगाकर खुदकुशी कर ली। इंस्पेक्टर वीरेंद्र यादव ने बताया कि दोनों के घर वालों को बुलाया गया है। देर रात दोनों के घर वाले प्रयागराज पहुंच गए।

दोनों ने साथ में लिया था खुदकुशी का निर्णय....

आरिफ और छात्रा बुधवार को प्रयागराज पहुंचे और हाईकोर्ट के सामने एक होटल में कमरा लिया। अपहरण की रिपोर्ट दर्ज होने और पैसे खत्म हो जान के कारण आरिफ अवसाद में चला गया था। वह बार बार कह रहा था कि ह्यदुनिया हमे मिलने नहीं देगी लेकिन मौत एक कर देगीह्न। खुदकुशी ही एकमात्र रास्ता है, लेकिन रात में छात्रा ने उसे काफी समझाया बुझाया। कहा कि सुबह एक बार और वकील से बात की जाएगी। हो सकता है कि कोई रास्ता निकल आए। लेकिन आरिफ के मन में कुछ और ही था। छात्रा के सोने के बाद उसने जहरीला इंजेक्शन लगा लिया। सुबह जब छात्रा सोकर उठी तो आरिफ के मुंह से झाग निकल रहा था। उसकी मौत हो चुकी थी।

आनंद गिरि की जमानत अर्जी खारिज

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अखाडा परिषद् अध्यक्ष रहे महंत नरेंद्र गिरि आत्महत्या मामले में उनके शिष्य आनंद गिरि को इलाहबाद हाईकोर्ट से रहत नही मिली। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उनकी जमानत अर्जी खारिज कर दी। सात सितंबर को हुई सुनवाई के बाद न्यायमूर्ति संजय कुमार सिंह की पीठ ने दोनों तरफ की दलील सुनने के बाद फैसला सुरक्षित कर लिया था और निर्णय सुनाने के लिए नौ सितंबर की तिथि तय की थी। शुक्रवार को दोनों तरफ से अधिवक्ता न्यायालय में मौजूद रहे।जमानत अर्जी की सुनवाई न्यायमूर्ति संजय कुमार सिंह ने की। याची की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल स्वरूप चतुवेर्दी व इमरानुल्ला खान का कहना था कि याची व महंत नरेंद्र गिरि में मनमुटाव था, जिसको लेकर विवाद हुआ। मार्च 21 में आनंद गिरि हरिद्वार चले गए थे और बाघंबरी गद्दी प्रयागराज से संबंध तोड़ लिया था। मई 21 में इंदू मिश्र ने लखनऊ में गुरू शिष्य के बीच समझौता कराया। उसके बाद याची ने कभी गुरू से संपर्क नहीं किया और न ही नरेंद्र गिरि ने फोन किया। मौत से पहले छह महीने तक याची का किसी प्रकार से कोई संबंध नहीं था।

अफवाह के आधार पर दर्ज कराया गया केस:

उन्होंने दलील दी कि केवल अफवाह के आधार पर याची को खुदकुशी से जोड़ा गया है। महंत ने भी

महंत नरेंद्र गिरि मौत का मामला : चित्रकूट की जेल में बंद है आनंद गिरी

सुनी हुई बातों को लेकर मृत्यु पूर्व आत्महत्या नोट लिखा है। किसने उन्हें बताया की याची उन्हें वीडियो वायरल कर बदनाम कर देगा। मरने जा रहे महंत ने नोट में उसके नाम का जिक्र नहीं किया। याची के वकील ने कहा कि दूसरी तरफ आद्या प्रसाद की महंत से काफी कहासुनी हुई थी। कठोर अपशब्द कहे थे। सीबीआई याची के खिलाफ आरोपों की पुष्टि के सबूत जुटाने में नाकामयाब रही है। याची को सुसाइड नोट के आधार पर सहारनपुर से गिरफ्तार कर प्रयागराज लाया गया। पिछले छह माह से गुरू शिष्य में कोई बातचीत, मुलाकात नहीं हुई। जिस आडियो के आधार पर सीबीआई ने याची पर महंत को बदनाम करने की बातचीत को वायरल करने का आरोप लगाया है। उसे याची ने रवीन्द्र गिरि को शिकायत के लहजे में भेजी थी कि बातचीत से साफ है कि महंत याची को दुराचार केस में फसाने की सोच रहे हैं। चतुवेर्दी ने कहा कि महंत की खुदकुशी से याची को कोई लाभ की संभावना नहीं है। क्योंकि, महंत ने नजदीकी शिष्य याची को निकाल दिया था और महंत ने सतुआ बाबा से बात की और हरिद्वार जाने को कहा था और खुदकुशी कर ली। बाघंबरी गद्दी में 16 सीसीटीवी कैमरे लगे थे। महंत ने एक हफ्ते पहले डाटा खत्म करा दिया था। वह क्या छिपाना चाहते थे। फार्मेट से डिलीट डाटा क्लाउड में रहता है। सीबीआई ने इसे देखने की जरूरत नहीं समझी।

सीबीआई ने किया था जमानत का कड़ा विरोध : सीबीआई के अधिवक्ता अनुराग कुमार सिंह ने कहा कि दो लोगों की बातचीत का आडियो बंधवा हनुमान मंदिर के मुख्य पुजारी संदीप तिवारी के कहने पर पुरुषोत्तम मिश्र ने रिकॉर्ड किया। जिसे हरिद्वार में महंत रवीन्द्र पुरी को याची ने भेजा। जो महंत तक पहुंचा। जिससे वे तनाव में आ गए। लिखा कि जब तक सच्चाई पता चलेगी मैं बदनाम हो चुका हूंगा। मैं आत्महत्या कर रहा हूं। खुदकुशी नोट की लिखावट महंत की लिखावट से मैच करती है। संदीप तिवारी ने रवीन्द्र पुरी को आडियो भेजी। चरित्र हनन की कोशिश की गई। कोर्ट ने दोनों पक्षों द्वारा अधूरे दस्तावेज दाखिल करने पर नाराजगी जताई और सीबीआई विवेचना अधिकारी केएस नेगी से सवालों के जवाब भी पूछे। सीबीआई का कहना था आडियो से महंत को खुदकुशी के लिए उकसाया गया। संदीप तिवारी याची कि गंगा पर बनी संस्था से जुड़े हैं। याची अधिवक्ता का कहना था कि आडियो मई 21 से पहले कि है। मई में समझौता हुआ। गुरू ने शिष्य को माफ कर दिया था और आरोपी ने छह माह तक किसी प्रकार का संबंध नहीं किया। वह हरिद्वार में अलग हो गया था। जिसकी अफवाह से महंत ने खुदकुशी की। सीबीआई उसका पता नहीं लगा सकी। जिसका छह माह से निष्कासन हो गया था, कोई संपर्क नहीं था। उसे बिना सबूत फंसाया गया है। जमानत पर रिहा किया जाए। कोर्ट ने नौ सितंबर को फैसला सुनाने का निर्णय लिया है। चत्रकूट की जेल में बंद हैं आनंद गिरि।

प्रदेश में नौकरशाह किसी की नहीं सुन रहे हैं : शिवपाल यादव

प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय का शिवपाल यादव ने किया उद्घाटन

झूंसी। मुख्यमंत्री के कहने के बाद भी प्रदेश में भू माफिया अवैध कब्जा कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के एक एमएलसी लल्लन राय की जमीन पर कब्जा कर रहे हैं जिसकी बार-बार शिकायत के बाद भी कार्यवाही नहीं हो रही है। उक्त बातें प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवपाल यादव ने शुक्रवार की शाम झूंसी में जिला कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि महंगाई से जनता बहुत परेशान है और भ्रष्टाचार ने उनकी परेशानी और बढ़ा दी है नौकरशाही ने पूरी तरह से न्याय देना बंद कर दिया है। जितने भी सरकारी कार्यालय हैं बिना रिश्वत के कोई काम नहीं है। जिसकी वजह से हमारा प्रदेश प्रगति के रास्ते पर नहीं जा पा रहा है नौकरशाह प्रदेश की जनता की नहीं सुन रहे हैं। मुख्यमंत्री के भाषण के बाद भी नौकरशाह के कानों में जूं तक नहीं रेंग रही। उन्होंने कहा कि में प्रेस के माध्यम से मुख्यमंत्री तक पहुंचाना चाहता हूं कि किसानों को बहुत ही परेशानी है बिजली के कर्मचारियों से परेशानी है उत्तर सब में पूरे हिंदुस्तान से महंगी बिजली है। इस दौरान उन्होंने पार्टी के पदाधिकारियों नेताओं व कार्यकर्ताओं को संगठन मजबूत करने पर जोर दिया और कहा कि 2024 में प्रगतिशील समाजवादी पार्टी दमदारी से चुनाव लड़ेगी। इस अवसर पर पूर्व जज रमेश यादव, मंजेश सिंह, सजन कुमार यादव, अरविन्द सिंह, कमलेश यादव, बबी आदि मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

अज्ञात युवकों ने दुकानदार पर किया हमला, घायल

मेजा रोड। मेजा के खौर गांव मे दुकानदार युवक पर अज्ञात हमलावरों ने सिर पर हमला लहूलुहान कर दिया। परिवार के लोगों ने तत्काल नजदीकी अस्पताल ले गए जहां डाक्टरों ने प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल रेफर कर दिया। युवक की हालत गंभीर बताई जा रही है। बता दें कि मेजा थाना क्षेत्र के खौर गांव निवासी रामरक्षा कुशवाहा का बेटा संतोष कुमार कुशवाहा (28) अपने घर में ही किराना की दुकान चलाता है। बीती रात करीब नौ बजे वह दुकान बंद कर खाना खा कर दुकान के बाहर टीन शेड के नीचे चारपाई पर सो गया। रात में अज्ञात हमलावरों ने संतोष पर हमला कर सिर वार कर लहूलुहान कर दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसका बिस्तर खून से लथपथ हो गया। चीख सुनकर घर के लोग उठे देखा तो संतोष लहूलुहान हो बिस्तर पर पड़ा था। परिजनों ने तत्काल डायल 112 पुलिस को सुचना दी और उसे नजदीकी अस्पताल ले गए जहां डाक्टरों ने प्राथमिक उपचार कर जिला अस्पताल रेफर कर दिया। डायल 112 पुलिस आई और पुछताछ कर चली गई। उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

चिकित्सकों ने फाइलेरिया सैंपलिंग के लिए शुरू की नाइट ब्लू सर्वे 7 में पाया गया लक्षण

करछना। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करछना की ओर से गठित की गई टीम द्वारा फाइलेरिया सैंपलिंग अभियान चलाकर वृहद पैमाने पर नाइट ब्लू सर्वे किया जा रहा है। जहां चिकित्सकों की टीम द्वारा शाम 6 बजे से लेकर रात्रि 11बजे तक मरीजों का सैंपल लेकर फाइलेरिया संक्रमण जांच के लिए भेज दिया जा रहा है। सीएचसी अधीक्षक अनिल कुमार मौर्या ने बताया कि फाइलेरिया के मरीज को बेहतर सैंपल के लिए रात में रक्त के नमूने लिए जाना बेहतर होता हैं। रात में लिए गए नमूने से फाइलेरिया के सटीक जानकारी मिल पाती है। करछना में बराव व बसरिया गांव को फाइलेरिया संक्रमण जांच के लिए निर्धारित किया गया है। जहां इन दोनों गांव से 600 लोगों का स्लाइड तैयार कर भेजा जाएगा । वही बराव में अब तक 350 से अधिक लोगों का नमूना लेकर जांच के लिए भेज दिया गया है । लिए गए नमूनों में 7 लोगों में फाइलेरिया का लक्षण पाया गया है। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही चिन्हित किए गए मरीजों को सूचना देकर दवा मुहैया कराई जाएगी । चिकित्सकों की टीम में जेपी चौरसिया, सौरभ श्रीवास्तव, सुनील मिश्रा, अनुराग शुक्ला सहित अन्य चिकित्सक मौजूद।

नीट में सफलता पर सत्यम सिंह को किया गया सम्मानित

फूलपुर। असफलता ही सफलता की कुंजी है इसको चरितार्थ करते हुए सत्यम पटेल ने कड़ी मेहनत व दृढ़ संकल्प से तीसरी बार में जहां नीट में सफलता प्राप्त कर अपने माता-पिता व स्कूल का नाम रोशन किया वही लोगों को यह भी बताने का प्रयास किया कि सफलता प्राप्त करने के लिए आत्म विश्वास जरुरी है।स्कूल के प्रबंधक विजय पाल ने कहा कि हमें अपनी असफलता से नर्वस नहीं होना चाहिए बल्कि कमियों को दूर करते हुए सफलता का परचम लहराना चाहिए। फूलपुर के ग्रामीण अंचल क्षेत्र में लोगों को अपनी चिकित्सा सुविधा से सेवा करने वाले आटा गांव के गुलाब सिंह पटेल के होनहार बेटे सत्यम ने देश की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा चिकित्सा के क्षेत्र में प्रवेश परीक्षा पास कर जहां अपने परिवार का नाम रोशन किया। बाबूगंज स्थित ईशा पब्लिक स्कूल से अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ करने वाले सत्यम पटेल शुरू से ही पढ़ने में तेज रहे हैं। ईशा पब्लिक स्कूल बाबूगंज में सत्यम पटेल के पहुंचने पर विद्यालय के अध्यापक व छात्र छात्राओं ने सत्यम सिंह को अपार सफलता के लिए बधाई देते हुए मिठाईयां खिलाकर शुभकामनाएं दी। इस मौके पर विद्यालय की प्रधानाचार्य नीलम पाल, अजय पाल,इंदु त्रिपाठी, डीके पटेल, विपुल सिंह, आरती कुशवाहा, आफरोज, सविता चौरसिया, उपासना यादव, आर एस पटेल, उषा राय, प्रतिभा पांडे, श्वेता पाल, मधुलिका यादव, आदि उपस्थित रहे।

खनन विभाग ने सीएचसी में मजदूरों के लिए लगाया हेल्थ कैंप

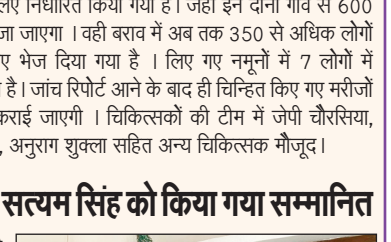

शंकरगढ़। शुक्रवार को खनन विभाग की तरफ से हेल्थ कैंप का आयोजन सीएचसी शंकरगढ़ में किया गया। जिला खनिज फाउंडेशन न्यास की तरफ से आयोजित कैंप में सभी लोगों की जांच की गई और आवश्यक दवाएं दी गईं। इस कैंप का लाभ क्षेत्रीय मजदूर वर्ग के साथ-साथ आम लोगों ने भी उठाया।शिविर में कुल 652 लोगों ने पंजीकरण करवाया था, जिसमें से 648 लोगों की जांच कर दवाएं दी गईं। सीएचसी शंकरगढ़ अधीक्षक डॉ अभिषेक सिंह ने बताया कि यह क्षेत्र पहाड़ियों से घिरा है। यहां पर अधिकतर लोग पत्थर की खदानों, सिलिका सैंड के वाशिंग प्लांटों में काम करते हैं। इस दौरान वह हैवी डस्ट की चपेट में आ जाते हैं, जिसकी वजह से मजदूरों का एक बड़ा वर्ग असमय ही टीबी और सिलकोसिस की चपेट में आ जाता है। शिविर में टीबी के साथ-साथ प्रमुख रूप से निशुल्क कोविड-19 टीकाकरण, शुगर ,बीपी, वजन,गर्भवती महिलाओं की जांच एवं परामर्श तथा दवाइयां, दंत रोग से संबंधित इलाज, स्त्री रोग एवं परिवार नियोजन से संबंधित स्टाल लगाए गए और रोगों की जांच की गई और लोगों को दवाएं भी दी गईं। कैंप को सफल बनाने में सीएचसी के वरिष्ठ डा. संजय सिंह, डा. रीता रिंह, डा. अजय, डा. पुनीत, डा. अनूप,डॉ शिवम, डा. मधु, सीएचओ अभिषेक जायसवाल, सुमन, राधा सिंह, नेहा सिंह, फार्मासिस्ट अरविंद, हरिश्चंद्र, करन, पूरन, अमित और आयुष का अहम योगदान रहा। खनन विभाग के इंस्पेक्टर अमित रंजन ने बताया कि यह क्षेत्र मजदूर बाहुल्य है। यहां पर गिट्टी खनन का कार्य बहुतायत होता है,इसके लिए डीएम संजय कुमार खत्री से भी आग्रह किया गया था। शिविर में लोगों की जांच के साथ साथ उन्हे दवाएं दी गईं और स्वस्थ रहने की सलाह भी दी गई।

ग्रामीण खेलकूद : ब्लाक में प्रथम आने वालों को मिलेगा जिला स्तर पर मौका

डिस्कस थ्रो और गोला थ्रो में अंशिका सिंह और भाला फेंक में प्रशांत सिंह प्रथम, राजा कमलाकर इंटर कालेज में खंड स्तरीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

शंकरगढ़। खंड स्तरीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आने वाले बच्चों को जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने का मौका मिलेगा। राजा कमलाकर इंटर कालेज के खेल मैदान पर हुई खंड स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने दौड़, लंबी कूद, ऊंची कूद, गोलाफेंक, डिस्कस थ्रो समेत कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह ने किया। युवा कल्याण के तत्वावधान में खंड स्तरीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता में 100 मीटर, 200, 400, 800 मीटर और 1500 मीटर दौड़ का आयोजन किया गया। लंबी कूद व ऊंची कूद में बच्चों ने बेहतरीन खेल कौशल दिखाया। इसके अलावा गोला फेंक, डिस्कस थ्रो, जेबलिन थ्रो, वॉलीबाल और कबड्डी प्रतियोगिता में बच्चों ने जोर-आजमाइश की। कबड्डी प्रतियोगिता में लोहगरा (चंद्रा) की टीम विजेता,जबकि शिवराजपुर की टीम उपविजेता रही। इसी तरह बालीबाल में बसहरा उपहार विजेता और शंकरगढ़ उपविजेता रही।इसीतरह डिस्कस थ्रो और गोला थ्रो में अंशिका सिंह प्रथम और भाला फेंक में प्रशांत सिंह प्रथम रहे। प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देकर जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए अभी से तैयारी करने का आह्वान किया गया। खंड स्तरीय प्रतियोगिता के सफल बच्चों को जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भेजा जाएगा। प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह ने बताया कि ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने का मौका मिलेगा। कहा, बच्चों की संपूर्ण प्रतिभा को निखारने में खेलकूद का अहम रोल होता है। इस तरह के आयोजनों से बच्चों को एक मंच मिलता है, जिस पर वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। राजा कमलाकर इंटर कालेज खेल प्रतिभाओं को आगे भी मंच प्रदान करता रहेगा। संरक्षक के रूप में खंड विकास अधिकारी रामविलास राय मौजूद रहे।

साक्षरता हेतु संकल्प के साथ घर घर अलख जगायें : मनीष

करछना। आज के बदलते दौर में हम सबको जरूरी है कि हमारा घर परिवार समाज और देश पूरी तरह से साक्षर हो। बिना साक्षरता के हम अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं हो सकते।सभी बच्चे संकल्प लें कि अपने पास पड़ोस घर परिवार में इसके प्रति सच्चे मन से अलख जगाएंगें। रामपुर स्थित बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज परिसर में प्रार्थना सभा स्थल पर यह बातें विद्यालय के प्रधानाचार्य मनीष तिवारी ने बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करते हुए कही। उन्होंने कहा कि इसके प्रति सरकार ने भी एक मिशन बनाकर संकल्प लिया है वर्तमान में जहां देश की साक्षरता दर 74% पहुंच चुकी है, हम सबको चाहिए कि इसको शीघ्र ही 100 फीसदी तक पहुंचाएंगे और सभी लोगों को साक्षर बनाएंगे। प्रवक्ता जितेंद्र कुमार और शिक्षक मोहम्मद परवेज सिद्दीकी ने भी बच्चों को अपने घर परिवार में बिना पढ़े लिखे लोगों को साक्षर बनाने और देश समाज में हो रही गतिविधियों के प्रति जागरूक करने पर जोर दिया। साक्षरता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सभी बच्चों ने साक्षरता के प्रति संकल्प लिया। इस मौके पर प्रवक्ता प्रदीप कुमार,जगतपाल सुरेश कुमार,रमेश तिवारी,विजय सिंह,सुधा सिंह,चंद्रशेखर सिंह, विश्वेश ओझा,कमला शंकर त्रिपाठी सहित शिक्षक,कर्मचारी और बड़ी संख्या में बच्चे मौजूद रहे।

मेघदूत के नायक को 38 साल बाद फिर मिला सम्मान

चक जीरो रोड उनके आवास पर आयोजित कार्यक्रम में एक बार फिर ताजा हुई उनकी यादें

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सन् 1984 में भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के विरूद्ध शियाचिन ग्लेशियर पर चलाए गए ऑपरेशन मेघदूत के नायक रहे सेंकेंड लेफ्टिनेंट प्रदीप सिंह पुण्डीर की शहादत को 38 साल बाद एक बार फिर सम्मानित किया। केंद्र सरकार के निर्देश पर चक जीरो रोड उनके आवास पर एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि प्रयागराज की महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी, 17वीं बटालियन एनसीसी के कर्नल एस वेंकटेश और एसएम आनंद बल्लभ ने शहीद प्रदीप सिंह पुण्डीर के छोटे भाई नीरज सिंह पुण्डीर को शौर्य स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में शामिल उनके बाल सखा और उनके मित्रों ने उनसे जुड़े कई संस्मरण सुनाकर एक बार फिर उनकी याद ताजा कर दी।

आजादी के अमृत महोत्सव पर शहीदों को शत शत नमन कार्यक्रम के तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनसीसी को यह कार्य दिया है कि वे अमर शहीदों के परिवार से सम्पर्क कर उन्हें यह विश्वास दिलाएं कि देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले अमर शहीदों के वीर परिवारों के साथ पूरा देश खड़ा है। इस कार्यक्रम का यह भी उद्देश्य है कि अमर शहीदों की शहादत, शौर्य और पराक्रम को उनके क्षेत्र के युवाओं तक पहुंचाया जाय। इसी कार्यक्रम के तहत अमर शहीद सेंकेड लेफ्टिनेंट प्रदीप सिंह पुण्डीर की शहादत को याद किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रयागराज की महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी, 17वीं बटालियन एनसीसी के कर्नल एस वेंकटेश और एसएम आनंद बल्लभ ने दीप प्रज्जवलित किया और शहीद प्रदीप सिंह पुण्डीर के चित्र पर माल्यार्पण करके उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसके बाद कार्यक्रम के आए सभी लोगों ने अमर शहीद के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इसके बाद एनसीसी कैडेट्स ने देशभक्ति गीत ए मेरे वतन के लोगों गाकर सभी को भावुक कर दिया।

कार्यक्रम में संबोधन के दौरान महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी ने अमर शहीद जवानों को नमन करते हुए उन्हें सम्मान देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि देश में रहने वाले हर व्यक्ति की पहचान राष्ट्र से है, राष्ट्र है तो हम हैं। इसी लिए हमें भी अपने बच्चों में देश के प्रति समर्पण भाव को भी देखना चाहिए और अपने बच्चों को सेना में जाकर देश की सेवा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो देश की सुरक्षा कौन करेगा और देश असुरक्षित हो जाएगा। महापौर ने कहा कि हमारे आसपास अभी बहुत से ऐसे लोग होंगे जिन्होंने देश के लिए अपना कुछ न कुछ न्योछावर किया होगा और ऐसे लोग अभी सबके सामने नही आए है। उन्होंने ऐसे लोगो को खोजने को कहा जिससे उनका भी सम्मान किया जा सके। कार्यक्रम का संचालन कर रहे क्षेत्र के पार्षद नेम यादव ने क्षेत्र का नाम शहीद के नाम पर रखने और मानसरोवर चौराहे पर उनकी प्रतिमा लगाने की मांग की। जिसपर महापौर ने एक प्रस्ताव बनाकर देने को कहा।

मेजर का बचपन से ही सेना में जाने का सपना था : शहीद प्रदीप सिंह पुण्डीर के बाल सखा अभय अवस्थी ने कहा कि वे बचपन से ही अनुशासित थे। इस कारण उन्हें हम सभी लोग मेजर कहकर बुलाते थे। व्यापारिक क्षेत्र में रहने के बावजूद वे अपना हर काम समय पर किया करते थे। उनके नस नस में एक सैनिक जैसा व्यवहार था। बचपन से ही उन्हें सेना में जाने का सपना था।

1981 में सेना में हुए थे कमीशन्ड : अमर शहीद प्रदीप सिंह पुण्डीर का जन्म 5 जुलाई को हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमएससी तक की पढाई थी। उसके बाद 1981 में सेना में कमीशन्ड हुए और ओटीए चेन्नई से प्रशिक्षण पूरा किया। उनकी कर्मठता और वीरता को देखते हुए उनकी पहली पोस्टिंग विश्व के सबसे कठिन और उंचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर में ऑपरेशन मेघदूत में अक्टूबर 1982 को 19 कुमाउं रेजिमेंट में किया गया। वहां पर सीमाओं पर दुश्मन के साथ मौसम का भी बड़ा संघर्ष था। परन्तु उन्होंने अपने शौर्य, पराक्रम और अपनी बहादुरी से अपने कर्तव्यों को बखूबी निभाया।

ऑपरेशन मेघदूत में दिया अपना सर्वोच्च बलिदान : मई 1984 में बटालियन लीडर लफ्टिनेंट प्रदीप सिंह पुण्डीर के नेतृत्व मे 19 सैनिकों की एक टीम ऑपरेशन मेघदूत के लिए निकली थी। 29 मई को भारी हिमस्खलन से पूरी बटालियन दब गई थी। जिसमे मेघदूत दल का नेतृत्व कर रहे सेंकेंड लेफ्टिनेंट पीएस पुण्डीर समेत भारतीय सेना के 18 जवान शहीद हो गए थे। 14 जवानों के शव उसी समय मिल गए थे, जबकि चार शव लापता थे। जिसके बाद सभी को शहीद घोषित कर दिया गया था। पुण्डीर का शव 74 दिनों के बाद मिली थी।

सेना पदक से किया जा चुका है सम्मानित : अमर शहीद प्रदीप सिंह पुण्डीर को इससे पहले 17 दिसम्बर 1999 में सेना के सेना पदक से सम्मानित किया जा चुका है। यह सम्मान शहीद प्रदीप के भाई नीरज सिंह पुण्डीर को जनरल वेद मलिक ने दिया था। इसके अलावा सेना द्वारा प्रदीप सिंह पुण्डीर की शहादत स्थल को पुण्डीर पोस्ट का नाम दिया गया है। उनकी शहादत के 25 साल पूरे होने पर उन्हें कुमाउ रेजिमेंट की ओर से भी सम्मानित किया जा चुका है। इस अवसर पर उपस्थित लोगों अभय अवस्थी, पार्षद नेम कुमार यादव,अरुण पाठक, विनोद गौड़, सुधांशु त्रिपाठी,सन्दीप करवरिया,आलोक बाजपेई,रवी गुप्ता, राहुल यादव,शानू यादव, अनूप अग्रवाल,।

पत्रावलियों के निस्तारण में विलम्ब या निरस्त न किया जाएः डीएम

बैंकों की जिला स्तरीय परामर्शदात्री/पुनरीक्षण समीक्षा समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में कलेक्टेज्ट सभागार में जिला स्तरीय परामर्शदात्री/पुनरीक्षण समीक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने किसान क्रेडिट कार्ड की बैंकवार लक्ष्यों की समीक्षा की, बैठक में अनुपस्थित केनरा बैंक के जिला समन्वयक के विरूद्ध राज्य सलाहकार समिति को पत्र भेजने का निर्देश दिया।

समीक्षा समिति की बैठक में बोलते डीएम डा0 नितिन बंसल।

बैठक में उन्होने निर्देश दिया कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना से सभी पात्र किसानों को लाभ देना बैंकों के लिये बाध्यकारी है तथा उन्हें केसीसी पर खेती के लिये ऋण स्वीकृत करने से किसानों को खाद, बीज हेतु सस्ती दर पर ऋण सुविधा सरकार मुहैया करा रही है इसलिये जिन बैंकों द्वारा इसमें अपेक्षित रूचि नही ली जा रही है ऐसे बैंकर्स के विरूद्ध उनके जीएम को पत्र प्रेषित किया जाये। मत्स्य पालन के अन्तर्गत वर्ष 2022-23 में 6750 लाभार्थियों के केसीसी बनवाने का लक्ष्य रखा गया है किन्तु इसके सापेक्ष मात्र 35 पत्रावलियां प्रेषित की गयी है जिनमें से 10 पत्रावलियों में स्वीकृत कर 18.99 लाख का ऋण स्वीकृत किया गया है। इसी तरह पशुपालन केसीसी योजना के अन्तर्गत 2022-23 में 20710 लाभार्थियों के सापेक्ष 1946 पत्रावलियॉ बैंकों को प्रेषित की गयी है जिसके सापेक्ष 1803 केसीसी निर्गत किये गये है। जिलाधिकारी ने मुख्य पशु चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया कि अपने पशु चिकित्सालयों में पशुपालकों के लिये किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा की जानकारी देने हेतु बैनर लगवाये जाये तथा अपने फील्ड में कार्यरत डाक्टरों एवं अन्य कर्मचारियों के माध्यम से पशुपालकों को ज्यादा से ज्यादा आवेदन करने हेतु प्रेरित करें। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत वित्तीय वर्ष 2022-23 का 2076 लाभार्थियों को सीसीएल का लक्ष्य निर्धारित है जिसके सापेक्ष 954 प्रस्ताव बैंकों को प्रेषित किये गये है जिनमें 602 प्रस्तावों को स्वीकृत करते हुये 3335 लाख का ऋण स्वीकृत किया गया है। बैंकों द्वारा खाता खोलने एवं सीसीएल में बैंकों द्वारा अपेक्षित सहयोग न किये जाने के सम्बन्ध में उपायुक्त डीसी एन0आर0एल0एम0 एन0एन0 मिश्रा द्वारा जानकारी दी गयी। जिलाधिकारी ने डीसी एन0आरएल0 एम0 को अधिक से अधिक पत्रावलियॉ भेजने का निर्देश दिया। उन्होने बताया कि पीएनबी एवं केनरा बैंक द्वारा समूहों के खाते खोले गये है किन्तु 6 माह से पासबुक नही दी जा रही है तथा खाता खोलने हेतु समूह के सभी सदस्यों को बुलाया जाता है। जिलाधिकारी ने इस पर नाराजगी व्यक्त करते हुये निर्देश दिया कि शासन के निदेर्शों का अनुपालन करते हुये सभी बैंक स्वरोजगार की इस महत्वाकांक्षी योजना में सहयोग करें।

प्रतापगढ़ बेसिक की टीम ने प्रयागराज को 3-1 से हराया

मण्डल स्तरीय हाकी खेलकूद प्रतियोगिता सम्पन्न

हाकी खेलकूद प्रतियोगिता के विजयी खिलाड़ीगण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मण्डल स्तरीय विद्यालयी हॉकी की खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी की देख रेख में राजकीय इंटर कालेज प्रतापगढ़ में हुआ, जिसमें अंडर 14 वर्षीय बालिका वर्ग में प्रतापगढ़ बेसिक की टीम 3-1 के अंतर से प्रयागराज को हराकर राज्य स्तरीय खेलकूद के लिए चयन हुआ। 14 वर्षीय बालक वर्ग में प्रयागराज ने 3-2 से प्रतापगढ़ को हराया। 19 वर्षीय बालिका वर्ग में 3-2 से प्रयागराज ने प्रतापगढ़ को व 19 वर्षीय बालक वर्ग में 3-2 प्रयागराज ने प्रतापगढ़ को हरा कर स्टेट में अपना स्थान पक्का किया। राम कुमार सिंह जिला व्यायाम शिक्षक व जिला व्यायाम शिक्षिका मंजू सिंह व खुर्शीद नगर चयनकताओं ने श्रेष्ठ खिलाड़ियों का राज्य स्तर हेतु चयन किया गया। राज कुमार सिंह प्राचार्य राजकीय इन्टर कालेज प्रतापगढ़ व दिनेश चंद्र पाण्डेय सचिव माध्यमिक खेल सचिव ने सभी खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त किया और स्टेट जीत के लिए बधाई दी, जिसमें जिला स्काउट मास्टर सुशील सिंह एवं अन्य व्यायाम शिक्षक सुदीप पाण्डेय, राजेंद्र पांडे, पवन कुमार सिंह, डा0 धीरेंद्र कुमार सिंह, अखिलेश सिंह आदि उपस्थित रहे।

35 लीटर अवैध कच्ची देशी शराब के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जनपद के थाना महेशगंज उप निरीक्षक दीपक कुमार यादव अपने हमराही के साथ क्षेत्र चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के ग्राम तख्त का पुरवा मजरे ऐंधा के पास से एक व्यक्ति सोहन लाल सरोज पुत्र स्व0 रामलाल सरोज निवासी ग्राम तख्त का पुरवा मजरे ऐंधा थाना महेशगंज जनपद प्रतापगढ़ को 15 लीटर अवैध कच्ची देसी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में थाना महेशगंज में मु0अ0सं0 229/2022 धारा 60 आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया वही थाना महेशगंज के ही उ0नि0 अनुपम त्रिपाठी अपने हम राही के साथ क्षेत्र चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के बड़ी नहर पुलिया के पास से एक व्यक्ति अशोक कुमार पुत्र बृजलाल निवासी लाला का पुरवा सराय खानदेव थाना महेशगंज, जनपद प्रतापगढ को 20 लीटर अवैध कच्ची देसी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में थाना महेशगंज में मु0अ0सं0 230/2022 धारा 60 आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया। पकड़े गये दोनों अभियुक्तो की लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेज दिया।पुलिस की इस कारवाई से हड़कम्प मचा हुआ है।

आज आएंगे जीएम, स्टेशन की तैयारी जोरों पर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जीएम उत्तर रेलवे नई दिल्ली का आगमन दस सितंबर को प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन पर होगा। उनके स्वागत के लिए चल रही तैयारी को अन्तिम रूप दिया जा रहा है। शुक्रवार को वीआईपी लाउंज की साज सज्जा की जा रही थी।

दुष्कर्म के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। जनपद के थाना महेशगंज के उ0नि0 श्री सुनील कुमार गुप्तामय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 30/2022 धारा 376, 504, 506 भादंवि से संबंधित वांछित अभियुक्त छोटेलाल उर्फ काशीदीन पुत्र शंकरलाल पटेल निवासी पाइन्दापुर थाना महेशगंज, जनपद प्रतापगढ़ को थाना क्षेत्र महेशगंज के पाइन्दापुर तिराहा के पास से गिरफ्तार किया गया।

राशन की दुकान के आवंटन को लेकर ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

उपजिलाधिकारी पट्टी कार्यालय का किया घेराव

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। छह महीने से पड़ोसी गांव में कोटा आवंटित किए जाने का और उसको लेकर ग्रामीणों की परेशानी को देखते हुए सभी ग्रामीण एकजुट होकर उपजिलाधिकारी कार्यालय का घेराव किया और अपने गांव में कोटा आवंटित करने की मांग किया।

राशन की दुकान के आवंटन को लेकर प्रदर्शन करते ग्रामीण।

पट्टी तहसील क्षेत्र के रामपुर खागल गांव के रहने वाले शेषनाथ पांडे, बृजेंद्र प्रताप सिंह, रामकरन, लालजी, मोहन लाल, लाल बहादुर वर्मा, अमरनाथ, इंद्रदेव, प्रदीप पांडे, दुर्गा प्रसाद, योगेश पांडे, विनोद कुमार, कृष्ण देव, सहित दो दर्जन से अधिक ग्रामीण अपने हाथों में प्रार्थना पत्र लिये शुक्रवार को पट्टी तहसील स्थित उप जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव करते हुए दिखाई दिए। उन्होंने उपजिलाधिकारी को शिकायती पत्र दिया इसमें ग्रामीणों ने बताया कि 6 महीने पहले रामपुर खागल गांव का कोटा हटा करके शरमा गांव से संबद्ध कर दिया गया। ग्रामीणों का कहना है कि 6 महीने से लगातार राशन, तेल, नमक आदि ले जाने में ग्रामीणों को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता है, जिसको लेकर के कई बार शिकायती पत्र भी दिया गया। खाद्य आपूर्ति विभाग तथा उप जिला अधिकारी को इसके बारे में सूचना दी गई लेकिन जब कोई कार्यवाही नहीं हुई तो शुक्रवार को सभी ग्रामीण पट्टी उप जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव करना शुरू कर दिया। ग्रामीणों ने मांग रखी कि राशन की दुकान को या तो उनके गांव रामपुर खागल में आवंटित किया जाए या समीपवर्ती गांव दुबौली सुखऊ में सम्बद्ध किया जाए, जिससे लोगों की समस्या का समाधान हो सके। ग्रामीणों ने इस दौरान मांगों को पूरा ना होने पर उच्च अधिकारियों से शिकायत करने तथा जनपद में डीएम कार्यालय का घेराव करने की भी बात कही।

मोक्षदह को दिलाएंगे पर्यटन स्थल का दर्जा : भदंत शांति मित्र

सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य की उपस्थिति में दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री का संकल्प

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के अध्यक्ष भदंत शांति मित्र ने कहा कि वे सदर विधानसभा के संग्रामपुर कमास ग्राम सभा में ऐतिहासिक तालाब को न केवल पर्यटन मंत्री के द्वारा अमृत सरोवर के रूप में प्रदेश स्तरीय निर्माण कराएंगे बल्कि भगवान राम के मुंह धोने के स्थल मोक्ष दह को पर्यटन विभाग से बात करके पर्यटन सूची में डलवाकर विकसित कराने का प्रयास करेंगे।

दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री भदंत शांति मित्र शुक्रवार को संग्रामपुर कमास ग्राम सभा के पक्का तालाब के पास एक समारोह में बोल रहे थे। ग्राम प्रधान रामबरन मौर्य द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सैकड़ों ग्रामीणों की उपस्थिति में सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य ने कहा कि राज्य मंत्री भदंत जी के आशीर्वाद से वह क्षेत्र के विकास के लिए संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि मोक्ष दह का वे मुख्यमंत्री से मिलकर विकास करवाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि आज भारत देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में अपना प्रदेश आगे बढ़ रहा है। गांव का सर्वांगीण विकास ही भारत को विकसित राष्ट्र का रूप देगा। कार्यक्रम से पूर्व भदंत शांति मित्र एवं सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य ने पक्का तालाब को देखा। ग्रामीणों ने बताया कि तालाब सैकड़ों वर्ष पुराना है। किसी समय यहां के जल से लोग ना केवल भोजन बनाते थे बल्कि राहगीर इसी जल से प्यास बुझाते थे। लोगों ने यह भी बताया कि इस पक्का तालाब में राम घाट, लक्ष्मण घाट, भरत घाट, शत्रुघ्न घाट, मां सीता घाट भी बना था। थोड़ी दूर पर मोक्ष दह पर सदर विधायक राजेंद्र मौर्य, अध्यक्ष भदंत वहां पर गए।सैकड़ों झरनों से निकलते हुए पानी को देखा। ग्रामीणों से इस बात का संकल्प दोहराया कि शीघ्र ही मोक्षदह एवं अमृतसर सरोवर को विकसित कराएंगे। ग्राम प्रधान रामबरन ने क्षेत्र के विकास के लिए विधायक राजेंद्र मौर्य, दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री भदंत शांति मित्र से सहयोग की अपेक्षा की। इस दौरान सदर विधायक प्रतिनिधि अरुण मौर्य, श्यामसुंदर, प्रधान प्रतिनिधि अजय मौर्या, महावीर पाल, इंद्र प्रताप सिंह, कन्हैया यादव, गुड्डू प्रजापति, संदीप शर्मा सहित अनेकों ग्रामीण मौजूद रहे।

संग्रामपुर में अमृत सरोवर व मोक्षदह का कराएंगे विकास

अमृत सरोवर एवं मोक्षदह का सर्वेक्षण करते भदंत शांति मित्र एवं विधायक राजेंद्र मौर्य।

महाविद्यालय कालाकांकर में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस

पांच निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिये दिलाई गई शपथ

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मदन मोहन मालवीय पीजी कालेज कालाकांकर में महाविद्यालय प्राचार्य प्रो0 शिवम श्रीवास्तव व राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की कार्यक्रमाधिकारी डॉ डी सी आंनद के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साक्षर बनने के लिये शपथ दिलाते अतिथिगण।

कार्यक्रम में डॉ0 डी सी आनन्द ने मुख्यतिथि एवं अन्य सहयोगियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में छात्रों द्वारा लगाई प्रदर्शनी का अतिथियों ने अवलोकन किया। इसके पश्चात प्रो0 रेखा सिंह विद्यार्थियों को अपने आस पास कम से कम पांच निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिए शपथ दिलाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 शिवम श्रीवास्तव ने व्यक्तित्त्व के विकास शिक्षा की बहुआमी भूमिका पर विस्तृत्व रूप से प्रकाश डाला तथा स्वयं सेवकों को साक्षरता बनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रमाधिकारी प्रो0 इंदुरेखा सिंह ने सभी आगन्तुको के प्रति आभार ब्यक्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार के समस्त प्रोफेसर व छात्र छात्राएं मौजूद रही।

प्रधानाध्यापक को मिल रही है जान से मारने की धमकी

पट्टी, प्रतापगढ़। महिला सहायक अध्यापक से मेलजोल बढ़ाने पर उसके पति को यह बात नागवार गुजरी तो उसने प्रधानाध्यापक को जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित प्रधानाध्यापक ने पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर आरोपित व्यक्ति के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बंसी पट्टी गांव के रहने वाले प्रशांत कुमार शुक्ला ने एक शिकायती पत्र पट्टी कोतवाली में दिया जिसमें उन्होंने बताया कि दो वर्ष पहले एक महिला अध्यापक की उसके विद्यालय में तैनाती हुई। उस समय वह प्रधानाध्यापक के पद पर था महिला से उसका मेलजोल बढ़ा तो कुछ दिन बाद उसकी शादी हो गई और 6 महीने बाद शादी टूट भी गई। प्रधानाध्यापक का कहना है कि उसके पति को यह आशंका है कि उसके मेल जोल के कारण ही उसकी शादी टूटी है। इस कारण वह विद्यालय में आकर उसे जान से मारने की धमकी देता है। उसने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में एक शिकायती पत्र देकर आरोपी के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

जेआईसी आलापुर की छात्रा का नीट में चयन

अखंड भारत संदेश

भावना सरोज।

परियावां। विकास क्षेत्र कालाकांकर के जनता इंटरमीडिएट कालेज आलापुर कालाकांकर की इण्टर परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रा भावना सरोज पुत्री भुवनेश (शिक्षक) का चयन नीट 2022 होने से स्कूल के सभी शिक्षक व छात्रा के परिजन खुशी से झूम उठे और छात्रा भावना की सफलता का श्रेय कालेज के शिक्षकों पर जाने की बात कही और सभी शिक्षकों के साथ कालेज के प्रबन्धक को धन्यवाद देते हुए आभार जताया और कॉलेज के शिक्षकों ने छात्रा भावना के साथ परिजनों को अपनी शुभकामनाएं देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कालाकांकर उप केंद्र में बिजली अंधाधुंध कटौती से ग्रामीणों में आक्रोश

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विद्युत उप केंद्र कालाकांकर 33/11 से जुड़े क्षेत्र कालाकांकर, बाजिदपुर व आलापुर क्षेत्र में बिजली की अंधाधुंध कटौती से ग्रामीणों में आक्रोश पनप रहा है। रह रहकर विभाग को कोस रहे हैं। बिजली की कटौती रोस्टर को ताक पर रखकर आपूर्ति के समय कही कुंडा फीडर से तो कही विद्युत उपकेंद्र कालाकांकर से काट दी जाती है। जब कि सूबे के मुख्यमंत्री ने सूखा ग्रस्त को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति अधिक देने का निर्देश दे चुके हैं। इसके बाबजूद विभाग के जिम्मेदार अधिकारी रोस्टर के बनाये गए समय को ताक पर रखकर कटौती पे कटौती कर रहे हैं जिससे ग्रामीणों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा है।

दीवानी न्यायालय की पुरानी बिल्डिंग के तीसरे तल पर लगी आग, अफरा-तफरी

प्रतापगढ़। दीवानी न्यायालय परिसर की पुरानी बिल्डिंग के तृतीय तल पर शार्ट सर्किट से आग लगने से हड़कंप मच गया। बताया जाता है कि मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी सीजेएम कोर्ट के ऊपरी भाग में बने एक कक्ष कार्यालय में शुक्रवार की दोपहर आग लग गई। जब खंभे से धुआं निकलने लगा तो अफरा-तफरी मच गई।

फौरन फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। फायर ब्रिगेड ने किसी तरह आग पर काबू पा लिया। यदि समय रहते आग को नियंत्रित न किया गया होता तो बड़ी घटना हो सकती थी। न्यायालय परिसर में आग की सूचना पर बड़ी संख्या में अधिवक्ता एवं अधिकारी पहुंचे थे। सीजेएम कोर्ट का ऊपरी भाग पूरा धुएं से भरा हुआ था। बताया गया कि विद्युत शार्ट सर्किट से आग लगी है। गनीमत रही कि लगभग आधे घंटे में ही आग पर काबू पा लिया गया। इससे न्यायिक अधिकारियों ने राहत की सांस ली।

एटीएम मशीन से फ्रॉड कर पैसा निकालने वाला दो अभियुक्त गिरफ्तार

विभिन्न बैंको के 15 अदद एटीएम कार्ड, 10 सादे एटीएम कार्ड बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद के थाना लालगंज के उ0नि0 योगेन्द्र सिंह मय टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के रामपुर भासो के पास स्थित एक बाग से दो व्यक्तियों हरिकेश सरोज व धीरज सरोज को विभिन्न बैंको के 15 अदद एटीएम कार्ड, 10 सादे एटीएम कार्ड (कार्ड पर काली पट्टी बनी हुई) व 02 स्वैप मशीन के साथ गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में थाना लालगंज में मु0अ0सं0 609/2022 धारा 411, 419, 420, 467, 468, 471 भादंवि का अभियोग पंजीकृत किया गया।

गिरफ्तार अभियुक्तों द्वारा पूछताछ में बताया गया कि हम लोग, लोगों को झांसा देकर उनका एटीएम कार्ड/डेबिट कार्ड बदल लेते हैं व उनका कोड जानकर फर्जी तरीके से एटीएम से पैसा निकाल लेते हैं। हम ऐसे एटीएम बूथ को देखते हैं जहां गार्ड न हो व पैसा निकालने वालों की भीड़ रहती हो, फिर वहां ऐसे लोगों को निशाना बनाता हैं जो देखने में सीधे-साधे या ग्रामीण परिवेश के लगते हों, ऐसे लोगों के बगल में खड़े होकर बहाने से उनका एटीएम कार्ड लेकर अपने पास लिए एटीएम कार्ड से बदलकर उनका पिन जानकर दूसरे एटीएम मशीन से पैसा निकाल लेते हैं। हमारे पास जो स्वैप मशीनें बरामद हुई हैं, इसके प्रयोग से हम लोग एटीएम कार्ड का क्लोन बनाकर हमारे पास जो सादे कार्ड हैं, धोखे से उनमें एटीएम कार्ड का डाटा ट्रांसफर कर लेते हैं, फिर तैयार किये गये कार्डों से दूसरे एटीएम में जाकर पैसे निकाल लेते हैं।

लूट की मोटरसाइकिल के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना रानीगंज पर आवेदक द्वारा यह सूचना दी गई कि सात सितम्बर को जब वह विद्यालय से पढ़ाकर वापस आ रहे थे तभी समय करीब डेढ़ बजे दिन में थाना क्षेत्र रानीगंज के कलीपुर मैनहा में, मोटर साइकिल (सुपर स्प्लेण्डर) सवार तीन अज्ञात व्यक्तियों द्वारा उनकी मोटर साइकिल नम्बर यूपी 72 बीडी 9515 लूट ली गयी। इस संबंध में थाना रानीगंज में मु0अ0सं0 347/2022 धारा 392 भादंवि का अभियोग पंजीकृत किया गया था।

इसी क्रम में बीती रात थाना रानीगंज के उ0नि0 वीरेन्द्र कुमार यादव मय टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र रानीगंज के चैहरजन पुल के पास से दो मोटर साइकिल पर सवार तीन अभियुक्तों में से एक अभियुक्त वकार अहमद को लूट की 01 अदद मोटर साइकिल व घटना में प्रयुक्त की गई 01 अदद मोटर साइकिल के साथ गिरफ्तार किया गया जब कि उसके दो साथी अंधेरे/भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर मौके से भाग गये।

नहर में मिला अज्ञात युवती का शव, हड़कम्प

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जनपद के हथिगवां थाना क्षेत्र के सराय कीरत ग्राम सभा के नोहर सिंह का पुरवा में शुक्रवार की सुबह नहर में 25 वर्षीय युवती का शव मिलने से हड़कम्प मच गया। सूचना पर हथिगवां पुलिस ने शव को पानी से बाहर निकलवाकर लिखा पढ़ी करके पोस्टमार्टम के लिए भेजा। समाचार भेजे जाने तक शव की शिनाख्त नहीं हो सकी। पुलिस प्रयास में लगी हुई है। शव पानी में पड़ा होने के कारण फूल आयी थी जिससे जख्म के निशान नहीं मिल सके। ऐसा लग रहा था शव कई दिनों से पानी मे पड़ा रहा हथिगवां थाना प्रभारी संतोष सिंह ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद विधिक कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

प्रेमी के साथ भागी बालिका युवक के परिजनों को परेशान कर रही पुलिस

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के टेवा पुलिस चौकी अंतर्गत टेन शाह आलमा बाद गांव के प्रेमी युगल शादी करने के बाद अपनी अलग दुनिया बसाने के लिए घर से चले जाएं हैं बालिका के पिता ने युवक पर आरोप लगाते हुए पुलिस से शिकायत की है गुरुवार की रात्रि में युवक को ढूंढने टेवा पुलिस चौकी इंचार्ज फोर्स के साथ उसके घर पहुंचे युवक के ना मिलने पर उसके घर पर जमकर चौकी पुलिस ने ताण्डव किया। घर पर मौजूद महिलाओं पुरुषों को गाली गलौज कर पुलिस ने अत्याचार की हद पार कर दी है। घंटों घर पर पुलिस टीम उत्पात मचाती रही चौकी पुलिस के कारनामे से परिजनों में आक्रोश है। बताया जाता है कि आधार कार्ड के मुताबिक प्रेमी युगल बालिंग है और उन्होंने एक साथ जीवन जीने की कसमें खाकर शादी कर ली है।

अनियंत्रित ट्रेलर पेड़ से टकराया चालक क्लीनर घायल

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के मूरतगंज ब्लाक कार्यालय के पास देर रात अनियंत्रित ट्रेलर पेड़ से टकरा गया,टक्कर इतनी जबरदस्त थी की ट्रेलर दो टुकड़ों में बंट गया,हादसे में ट्रक चालक और क्लीनर घायल हो गए घायलो को मूरतगंज पीएचसी में इलाज के लिए भेजा गया।

केशरवानी समाज के भंडारे में हजारों लोग हुए शामिल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मंझनपुर कस्बे के नेहरू नगर रामलीला मैदान में गुरुवार को केशरवानी समाज की एक बैठक आयोजित हुई बैठक के दौरान दर्जनों बुजुर्गो पत्रकारो सभासद और पूर्व सभासद को माल्यार्पण कर अंगवस्त्र भेट कर कश्यप जी की फोटो देकर सम्मानित किया गया गोष्ठी और सभा का आयोजन किया गया जहां वक्ताओं ने अपने विचार रखे कार्यक्रम के पूर्व बंजारी माई और महर्षि कश्यप ऋषि की पूजा अर्चना की गई विशाल भंडारे के आयोजन में केसरवानी समाज के हजारों लोगों ने बंजारी माई का प्रसाद ग्रहण किया।

कार्यक्रम के अवसर पर समाज के प्रदेश अध्यक्ष तीरथ राज गुप्ता उर्फ गोल बाबू केसरवानी पूर्व चेयरमैन कैलाश चंद्र केशरवानी पूर्व चेयरमैन नरेश चन्द्र केशरवानी समाज के राष्ट्रीय पदाधिकारी सुशील केसरवानी पत्रकार पूर्व चेयरमैन गंगा प्रसाद केशरवानी काले आनन्द कुमार अन्नू संतोष कुमार जिला अध्यक्ष प्रवेश कुमार अरविंद कुमार केशरवानी डॉ चिरौजी लाल भाजपा नेता आशीष कुमार बच्चा पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा प्रेम चंद्र चौधरी रामलीला कमेटी के अध्यक्ष मुकुन्दी लाल प्रेम नारायण कलेक्टर अमरेश कुमार उर्फ कल्लू पंडा अंशुल केशरवानी पंकज कुमार गामा रमेश चन्द्र केसरवानी सुबोध केसरवानी पत्रकार केशव प्रसाद केसरवानी सोनू केशरवानी सहित केशरवानी समाज के तमाम लोगों ने कार्यक्रम को संबोधित कर केशरवानी समाज में एकता और जागरूकता लाने पर बल दिया। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए समाज के जिला अध्यक्ष प्रवेश केसरवानी ने कहा कि समाज मे मजबूत होने के लिए समाज की एकता अत्यंत आवश्यक है उन्होंने बिरादरी के लोगो का आवाहन किया कि कश्यप जी की मूर्ति वह घर मे लगाए उन्होंने कहा कि हम सब ब्यापारी समाज के है और ब्यापारी किसी को कुछ देता है ब्यापारी का किसी से कुछ लेने का सवाल ही नही उठता है भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष प्रेमचंद चौधरी ने कहा कि जब हम बाहर निकलते है तो देखते है कि सरकारी नौकरी में भी बड़ी संख्या में केशरवानी समाज के लोग है विधवा महिलाओ को चिन्हित किया जाए उनको सम्मानित किया जाए गरीब बच्चो की शिक्षा में सहयोग किया जाए केशरवानी समाज के सहयोग से अपना समाज आगे बढ़ेगा कुछ लोगो ने कहा कि बिरादरी के नाम पर संगठित हो कर किसी एक राजनीति का दामन थाम लेते है जिससे आपसी खींचतान शुरू हो जाता है हमे राजनीति से लेना देना नही है एक साथ बैठकर ही समाज का उत्थान संभव है। प्रदेश अध्यक्ष तीरथ राज गुप्ता गोल बाबू ने कहा कि पांच बातों को याद रक्खे शिक्षा संस्कार संगत एकता पहचान से ही समाज मजबूत होगा इस मौके पर उपस्थित भीड़ ने तालियों से जोरदार स्वागत किया उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ के रायपुर में बंजारी माई की पाच सौ वर्ष पुरानी मूर्ति है जिसका प्रतिदिन आकर बढ़ रहा है उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम जिनके उपलक्ष्य में किया जा रहा है कुलपूज्य मां बंजारी और कश्यप ऋषि उनके ऊपर आस्था और श्रद्धा का है हम उनके संतान हैं हम उनके वंशज हैं कश्यप ऋषि सर्वश्रेष्ठ ऋषि थे केशरवानी समाज की वंशावली पर प्रकाश डाला भंडारे का आयोजन पीयूष केसरवानी अंकित केसरवानी सहित नव युवकों के द्वारा किया गया है। पूर्व प्रदेश प्रबन्ध मंत्री राधेश्याम केसरवानी ने कहा कि सुख के बाद दुख में उसके दरवाजे पर इकट्ठा होने पर जो वह समाज से कटा है वह समाज में जुड़ेगा नरेश चन्द्र केशरवानी पूर्व सभासद अनुराग केशरवानी पूर्व सभासद अंशुल केशरवानी पूर्व सभासद सुमित केशरवानी शिवेंद्र कुमार रिंकू सभासद नरेश चन्द्र सभासद पंकज केशरवानी गामा पत्रकार सुशील केशरवानी पत्रकार ब्यापारी सिंटू केशरवानी सुशील केशरवानी इन्वर्टर डॉ करम चन्द्र डॉ अरुण केशरवानी माधो लाल केशरवानी कल्लू प्रसाद रमेश चन्द्र पूर्व सभासद सहित तमाम वृद्ध जनों को माल्यार्पण कर अंग वस्त्र देकर स्वागत किया गया अनादि काल से चली आ रही परम्परा के तहत बंजारी माई और कश्यप ऋषी की पूजा विशाल भण्डारे के आयोजन में केशरवानी समाज के हजारों लोगो ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया बंजारी माई और महर्षि कश्यप मुनि के जयकारा से पण्डाल गूंज उठा आनंद कुमार उर्फ अन्नू भाई को नगर अध्यक्ष बनाए जाने का प्रेम चौधरी ने प्रस्ताव रखा पूर्व चेयरमैन नरेश चन्द्र ने समर्थन किया सर्वसम्मति से आनंद कुमार अन्नू को मंझनपुर नगर अध्यक्ष बनाया गया है।

केशरवानी समाज के कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारी

केसरवानी समाज के बृद्ध जनो के साथ तमाम लोग किए गए सम्मानित

सम्मानित किए गए वरिष्ठ पत्रकार

कौशाम्बी। अखिल भारतीय केसरवानी वैश्य महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारी सुशील केसरवानी पत्रकार निवासी मंझनपुर को मंझनपुर नगर पालिका में महर्षि कश्यप की पूजा और बंजारी माई के भंडारा के कार्यक्रम में माल्यार्पण कर अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

न्यायालय के कार्य में फुल डे रिफरेंस के बाद मौजूद अधिवक्ता

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायमूर्ति के निधन पर जिला कचहरी में रिफरेंस

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति के एन सिंह के निधन पर शुक्रवार को जिला कचहरी में फुल डे रिफरेंस रहा। इसके चलते दिन भर कोई भी काम काज नहीं हो सका। प्रयागराज के मांडा निवासी केएन सिंह विभिन्न उच्च न्यायालयों एवं उच्चतम न्यायालय में बतौर न्यायमूर्ति रहे और अनेकों ऐतिहासिक निर्णयो के लिए जाने जाते हैं। शुक्रवार को इनके निधन की सूचना पर जिला कचहरी में शोक व्याप्त हो गया। जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मनुदेव त्रिपाठी की अध्यक्षता में सुबह १० से अधिवक्ताओं की शोक सभा सम्पन्न हुई। इसके बाद फुल डे रिफरेंस का प्रस्ताव पारित किया गया। बार एसोसिएशन की ओर से महासचिव तुषार तिवारी ने जिला जज ब्रजेश कुमार मिश्र को फुल डे रिफरेंस का प्रस्ताव दे कर सभी पीठासीन अधिकारियों को भेजने का अनुरोध किया है। इसके चलते शुक्रवार को जिला कचहरी में कोई भी न्यायिक काम काज नहीं हुआ।

गाजे-बाजे मंगल गीत के धुन के साथ गणेश प्रतिमाओ का भक्तों ने किया विसर्जन

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। पूरे जिले के कस्बे नगर बाजार और ग्रामीण क्षेत्रों में 9 दिनों तक लगातार गणेश उत्सव का आयोजन भक्तो द्वारा धूमधाम से किया गया है शुक्रवार को भक्तों द्वारा भगवान गणेश की पूजा अर्चना करने के बाद गाजे-बाजे के साथ मंगल गीतों की धुन पर नाचते गाते गणेश प्रतिमा का भ्रमण नगर क्षेत्रों में कराया गया गणेश प्रतिमा के विसर्जन के पूर्व नगर भ्रमण के दौरान नागर और ग्रामीण वासी घरों से निकल आए और गणेश भगवान का जयकारा लगाने लगे उसके बाद गणेश प्रतिमाओं को निर्धारित स्थानों पर विधि विधान से भक्तों ने विसर्जित किया है मंझनपुर नगर पालिका के नेहरू नगर शिव मंदिर में 9 दिनों तक लगातार गणेश पूजन और उत्सव मनाए जाने के बाद कमेटी के सदस्यों द्वारा गणेश प्रतिमा को मंझनपुर नगर क्षेत्र में भ्रमण कराने के बाद निर्धारित स्थान पर गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया गया है गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान सिद्धिविनायक कमेटी के सदस्यों में उज्ज्वल केशरवानी अर्जुन केशरवानी सत्यम मोदनवाल अंशीत मोदनवाल रिषभ केशरवानी प्रभाकर केशरवानी राहुल सिंह सूरज श्याम जी कैलाश मोदनवाल शंकर लाल मोदनवाल सुशील केशरवानी विपिन केशरवानी सहित सैकड़ों महिला पुरुष भक्त नाचते गाते मंगल गीत की धुन पर गणपति बप्पा मोरिया का जयकारा लगाते हुए मूर्ति विसर्जन में शामिल रहे पूरे रास्ते भक्तों द्वारा आम जनता के बीच प्रसाद का वितरण किया गया।

गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान मौजूद महिलाए

दलित किशोरी के साथ छेड़छाड़ में आरोपी को तीन वर्ष की कैद

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पुरामुफ्ती थाना क्षेत्र के एक गांव में करीब छः वर्ष पूर्व दलित किशोरी के साथ घर में घुसकर छेड़छाड़ करने के आरोपी को तीन वर्ष के कारावास से दंडित किया गया है। आरोपी पर कोर्ट ने पन्द्रह हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया है, जो वसूली होने पर पीड़िता को दिलाने का निर्देश दिया गया है। अभियोजन पक्ष के अनुसार पुरामुफ्ती थाना क्षेत्र जो वर्तमान में चरवा थानांतर्गत के एक गांव में वादी की नाबालिग लड़की के साथ जब वह घर में अकेली थी पड़ोसी दिनेश निषाद घर के 25 फरवरी 2016 को अन्दर घुसकर अश्लील हरकतें कर रहा था, तभी वादी मुकदमा मौके पर पहुंच गया। वादी के डांटने पर वह गाली गलौज करते हुए भाग गया इस घटना की नामजद तहरीर वादी ने थाना पुरामुफ्ती में दर्ज कराई थी। विवेचना के बाद तत्कालीन क्षेत्राधिकारी घायल ने आरोपी के खिलाफ दलित किशोरी के साथ घर में घुसकर अश्लील हरकतें करने का आरोप पत्र दाखिल किया था। मुकदमें का परीक्षण विशेष न्यायाधीश पोक्सो अरविंद कुमार द्वितीय की अदालत में किया गया। यहां राज्य सरकार की ओर से अपर जिला शासकीय अधिवक्ता रमेशचंद्र त्रिपाठी ने वादी मुकदमा एवं पीड़िता समेत घटना के छः गवाहो की गवाही कराई। बहस करते हुए उन्होंने आरोपी को दोषी करार देकर दंडित करने का अनुरोध किया। बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता ने आरोपी को निर्दोष बताते हुए सजा में नरमी बरतने की अपील की। दोनों ओर से की गई बहस को सुनने व पत्रावली में उपलब्ध साक्ष्य का अवलोकन करने के बाद अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश अरविंद कुमार द्वितीय ने आरोपी को तीन वर्ष के कारावास व पन्द्रह हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है।

कौशलेश बने संयोजक,आदित्य प्रकाश व राजू केशरवानी बनें सहसंयोजक

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ कौशांबी की बैठक शुक्रवार को बीआरसी मंझनपुर परिसर में हुई। इस दौरान संगठन की मजबूती को लेकर मंथन करने के साथ ही संगठन के विस्तार हेतु कौशाम्बी ब्लॉक के संयोजक व सहसंयोजक पद की जिम्मेदारी शिक्षकों को सौंपी गई।बीआरसी परिसर में हुई बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला संयोजक ओमदत्त त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं को लेकर संगठन लगातार आवाज उठा रहा है।अब जरूरी है कि संगठन का विस्तार किया जाए। बैठक में तमाम नामों पर विचार के बाद जिला संयोजक ने कौशलेश कुमार को कौशाम्बी विकासखंड का संयोजक,आदित्य प्रकाश और राजू केशरवानी को सहसंयोजक पद की जिम्मेदारी सौंपी। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिला सह संयोजक मायापति त्रिपाठी ने संयोजक और सह संयोजक को कौशाम्बी ब्लॉक में संगठन का विस्तार संगठन की नियमावली के अनुसार सम्पन्न करने हेतु प्रेरित किया बैठक में नवनियुक्त ब्लाक संयोजक कौशलेश कुमार ने कहा कि इस जिम्मेदारी का निर्वहन संगठन की नियमावली के तहत व शिक्षक हित को ध्यान में रखकर किया जायेगा। इस अवसर पर नितिन यादव,दीपक सिंह,भूपेंद्र कुमार सिंह,मिथलेश गुप्ता, रणधीर कुमार,अवनीश कुमार मिश्र,अंजली वर्मा, प्रीती कटियार, तंजील फात्मा,अनुप्रिया सोनकर,शमीम अहमद, जूली सिंह,अनूप कुमार वर्मा,विमलेश कुमार,गोरखनाथ मिश्र,अनुज वर्मा सहित कई शिक्षक मौजूद रहे।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की कौशांबी ब्लॉक की इकाई का हुआ मनोनयन

शैक्षिक महासंघ के पदाधिकारी

सरकार का प्रतिनिधि नहीं अपने को पत्रकारों का मालिक समझते है सूचना अधिकारी

अखंड भारत संदेश

पत्रकारों की नियुक्ति नही कर सकते सूचना अधिकारी संस्थान करता है पत्रकारों की नियुक्ति

कौशांबी। शासन की योजनाओं का प्रचार प्रसार करने और आम जनता के बीच की सूचनाओं को जिला अधिकारी तक पहुंचाने के लिए सूचना अधिकारी की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है लेकिन सूचना अधिकारी आम जनता के बीच की सूचनाओं को डीएम तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं और शासन की योजनाओं का प्रचार-प्रसार भी सूचना अधिकारी आम जनता के पास तक नहीं कर पा रहे हैं। आम जनता की सूचनाएं पत्रकार अधिकारियों तक पहुंचा रहे हैं और शासन की सूचनाओ को आम जनता तक पहुंचाने का कार्य भी टीवी चैनल और समाचार पत्र के पत्रकार कर रहे हैं अपनी जिम्मेदारी से असफल हो चुके सूचना अधिकारी अपने को पत्रकार का मालिक समझते हैं जबकि पत्रकारों की नियुक्ति का अधिकार सरकार ने सूचना अधिकारी को नहीं दिया है पत्रकारों की नियुक्ति अखबार और टीवी चैनल के संस्थान द्वारा किया जाता है राज्य सरकार तो केवल पत्रकारों को ट्रेन बस की यात्रा के दौरान किराए में छूट इलाज के दौरान छूट और बीमा पेंशन जैसी सुविधाएं देकर के पत्रकारों को अपना खास बनाने का प्रयास करती है सरकार द्वारा पत्रकारों को सुविधाएं देने से पत्रकारों के अधिकार नहीं कम हो जाते हैं खबर लिखने और उसके चलाने पर भारतीय संविधान के तहत पत्रकारों को स्वतंत्रता दी गई है लेकिन अव्यवस्था की खबर लिखने पर आए दिन अधिकारी विचलित हो जाते हैं और सूचना अधिकारी के जरिए पत्रकारों पर दबाव बनाए जाते हैं किस खबर को प्रकाशित करना है और किस खबर को रोक देना है कौन सी खबर सही है कौन सी खबर गलत है इस बात के परीक्षण का अधिकार अदालत को है लेकिन अब खबर के सही गलत का परीक्षण कर इसका निर्णय सूचना अधिकारी करने लगे हैं बेसिक शिक्षा अधिकारी को सूचना अधिकारी ने आधे अधूरे पत्रकारों की सूची भेजी है सूचना अधिकारी से पत्रकारों की आधी अधूरी सूची मिलने के बाद बेसिक शिक्षा अधिकारी ने परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों को पत्र जारी कर निर्देशित किया है कि विद्यालयों में केवल वह पत्रकार प्रवेश करेंगे जिन्हें सूचना अधिकारी ने परिचय पत्र जारी किया है अब सवाल उठता है कि पत्रकारों की नियुक्तियां क्या सूचना अधिकारी करेगा भारतीय संविधान और राज्य सरकार के किस कानून के तहत सूचना अधिकारी को पत्रकारों की नियुक्ति का अधिकार मिला है अपने मूल ड्यूटी से सूचना अधिकारी भटक चुके हैं और शासन प्रशासन द्वारा उन्हें उनकी ड्यूटी की जिम्मेदारियां याद दिलाए जाने की जरूरत है सूचना अधिकारी के इस बर्ताव से पत्रकारों में आक्रोश व्याप्त है और भारतीय पत्रकार संघ के बैनर तले एकजुट हुए पत्रकारों ने सूचना अधिकारी के कारनामे पर निंदा प्रस्ताव पारित कर आक्रोश प्रकट करते हुए सूचना अधिकारी पर कठोर कार्यवाही किए जाने की मांग शासन से की है।

बीएसए के तुगलकी फरमान से पत्रकारों में आक्रोश

परिषदीय विद्यालयों में पत्रकारों के प्रवेश पर रोक लगाने का जारी किया पत्र

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। परिषदीय विद्यालय की चौपट शिक्षा व्यवस्था की खबर आए दिन प्रकाशित कर पत्रकार शासन प्रशासन का ध्यान आकृष्ट करा कर चौपट शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने की उम्मीद लगाए हैं लेकिन उसके बाद भी चौपट शिक्षा व्यवस्था को बेसिक शिक्षा अधिकारी सुधार नही कर पा रहे हैं तमाम शिक्षक मनमानी पर है और वह तैनाती स्थल पर नहीं रहते हैं आए दिन शिक्षक बिना छुट्टी के स्कूल से गायब रहते हैं जिससे परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो चुकी है लगातार चौपट व्यवस्था की खबरें प्रकाशित होने से बेसिक शिक्षा अधिकारी बौखला गए है और उन्होंने एक पत्र जारी कर जिले के संपूर्ण विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को भेजते हुए विद्यालय में पत्रकारों के प्रवेश पर रोक लगा दी है बेसिक शिक्षा अधिकारी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों की व्यवस्था योगी सरकार के निर्देश पर नहीं चलाना चाहते हैं वह सरकारी विद्यालयों की व्यवस्था अपनी तानाशाही और तुगलकी फरमान पर संचालित करना चाहते हैं सरकारी विद्यालय को बीएसए अपनी तन्हा संपत्ति समझते हैं बेसिक शिक्षा अधिकारी का तुगलकी पत्र जारी होते ही पत्रकारों में आक्रोश व्याप्त हो गया है और शासन प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराते हुए तुगलकी फरमान जारी करने वाले बीएसए को निलंबित किए जाने की मांग पत्रकारो ने की है।

किले में तब्दील हुआ बीएसए कार्यालय

कौशाम्बी। सरकारी कार्यालयों के जिम्मेदारों की तानाशाही और तुगलकी फरमान बढ़ते जा रहे हैं आम जनमानस के सरकारी कार्यालयों में प्रवेश पर रोक लगाने का भरसक प्रयास हो रहा है जिला मुख्यालय पर स्थित बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के मुख्य गेट पर बीते कई महीने से बेसिक शिक्षा अधिकारी के निर्देश पर कार्यालय खुलने के समय प्रतिदिन सुबह 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक गेट में ताला बंद कर दिया जाता है मुख्य गेट में ताला बंद कर बीएसए ने विभाग के कार्यालय को किले में तब्दील कर दिया है आखिर किस के निर्देश से बीएसए ने कार्यालय के मुख्य गेट पर ताला बंद किया है बीएसए के इस फरमान के बाद कार्यालय पहुंचने वाले अभिभावक पत्रकार और शिक्षकों को दिक्कतों से जूझना पड़ता है उन्हें वाहन बाहर खड़ा करना पड़ता है जिससे वाहन चोरी होने का भी डर बना रहता है लेकिन बीएसए योगी सरकार के निर्देश को नहीं मानते हैं और वह अपने मनमानी तरीके से अपने निर्देश पर कार्यालय की व्यवस्था करना चाहते हैं लोगों ने योगी सरकार का ध्यान आकृष्ट कराते हुए किले में तब्दील बीएसए कार्यालय के गेट खोलने की मांग की है इस संबंध में बीएसए से बात की गई तो उनका कहना है कि कार्यालय में फूल के पौधे लगाए गए हैं और आवारा पशुओं के साथ-साथ बाहरी लोगों का आना जाना रहता है जिससे फूल के पौधे नष्ट हो जाते हैं और इसी के चलते मुख्य गेट पर ताला लगाया गया है।

कत्लखाने बने गौ संरक्षण केंद्र, गौवंशो की दुर्दशा का आखिर जिम्मेदार कौन!

सुशील केशरवानी

समय से नहीं मिलता दाना भूसा चारा बीमार पशुओं का नही होता इलाज

तमाम गौ संरक्षण केंद्र में पशुओं के लेखा-जोखा का रजिस्टर नहीं है मौजूद

कौशाम्बी। कत्लखाने में पशुओं की मौत को रोकने के लिए गौ संरक्षण केंद्र योगी सरकार द्वारा गांव कस्बे में खोले गए हैं लेकिन कत्लखाने की तरह पशुओं की मौत गौसंरक्षण केंद्र में हो रही है आखिर गौसंरक्षण केंद्र की दुर्दशा का जिम्मेदार कौन है योजना के संचालन में लगे अधिकारी केवल फोटो खींचा कर शासन को रिपोर्ट भेजने तक सीमित है कौशांबी जिले के किसी भी गौ संरक्षण केंद्र की बदतर हालत में काफी प्रयास के बाद सुधार होता नहीं दिख रहा है जबकि गौसंरक्षण केंद्र में पशुओं की देखरेख के लिए कौशांबी जिले में करोड़ों के बजट सरकारी खजाने से खर्च किया जा रहा है जिले के अधिकारियों के पास भी गौ संरक्षण केंद्र में पशुओं के आंकड़े अलग-अलग विस्तार से उपलब्ध नहीं है गौ संरक्षण केंद्र में पशु बीमार हो रहे हैं जिनका इलाज नहीं हो पाता है आए दिन गौ संरक्षण केंद्र में पशु की मौत होती है केवल अभिलेखों में पशुओं का इलाज कर पशुओं की दवाओं को चिकित्सक बेच रहे हैं। नगर पालिका नगर पंचायत और ग्राम पंचायतों के जिम्मेदारों के पशु चिकित्सा अधिकारियों से सांठगांठ के बाद गौ संरक्षण केंद्र कत्लखाने बन गए हैं रोज पशुओं की मौत हो रही है पशुओं को भरपेट चारा पानी नहीं मिलता तमाम पशु भूखे तड़प रहे हैं गौ संरक्षण केंद्र में पहुंचने के बाद पशु दिन प्रतिदिन कमजोर और बीमार होते हैं वहीं बीमार पशुओं को पशु चिकित्सा अधिकारी इलाज कर उनका स्वास्थ्य बेहतर करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं जिससे पशुओं की मौत हो रही है पशु चिकित्सा अधिकारी और गौ संरक्षण केंद्र के जिम्मेदारों की सांठगांठ से गौ संरक्षण केंद्र कत्लखाने बन गए हैं तमाम शिकायतों के बाद भी आला अधिकारी गौसंरक्षण केंद्र की बदहाली को ठीक करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं नगर पालिका नगर पंचायत से लेकर ग्राम पंचायतों के गौ संरक्षण केंद्र की स्थिति बदतर है पशुओ को टैगिंग कर उनके आंकड़ों को रखने का प्रयास नहीं किया गया है पशुओं की मौत के बाद जमीन खोदकर उन्हें दफन कर दिया जा रहा है तमाम केंद्रों में मृत पशुओं के शव को कुत्ते और कौवे नोच रहे हैं गौ संरक्षण केंद्र में मौजूद पशुओं और मृतक पशुओं के आंकड़े के रजिस्टर नहीं बनाए गए हैं कितने पशु की मौत हुई है और कितने पशु किस तारीख को केंद्र में आए हैं इनका तारीख वार विवरण केंद्र से लेकर जिले तक में मौजूद नहीं है जिससे केंद्र प्रभारियों की नियति का अंदाजा लगाया जा सकता है लेकिन केंद्रों में पशुओं का लेखा-जोखा ना मौजूद होने के मामले में अधिकारी गंभीर नहीं है गौ संरक्षण केंद्र के कत्लखाने बन जाने के मामले में योगी सरकार को मामले को गंभीरता से लेते हुए दोषियों पर कठोर कार्यवाही करते हुए स्थितियों में सुधार किए जाने की जरूरत है।

तालाब में उतराता हुआ मिला वृद्ध का शव

कौशाम्बी। पिपरी कोतवाली क्षेत्र के विलासपर गांव के वृद्ध माया राम कोरी उम्र लगभग 90 वर्ष का लाश गांव के बाहर तालाब में मिली है सूचना पाकर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मौके पर पुलिस भी पहुंच गई है और वृद्ध के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है बताया जाता है कि बृद्ध का दिमाकी संतुलंत काफी दिन से ठीक नही था शुक्रवार की सुबह भोर में लगभग 4 बजे बृद्ध घर से बाहर शौच को निकले थे तालाब में उनका पैर फिसल गया और उसी तालाब में वह डूब गए जिससे उनकी मौत हो गई घटना से गांव में मची सनसनी फैल गई । सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को बाहर निकाला है।

राहुल गांधी पर अभद्र टिप्पणी से भड़के कांग्रेसी

कौशाम्बी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर की अभद्र टिप्पणी किए जाने से जिले के कांग्रेसी नेता भड़क गए हैं भरवारी के राज चौधरी नाम के यूजर ने अपने फेसबुक अकाउंट से पोस्ट कर कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर अभद्र टिप्पणी की है। कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष तलत अजीम ने अभद्र टिप्पणी करने वाले राज चौधरी पर कार्रवाई की मांग की है।

मंगल कलश यात्रा वेदी पूजन के साथ शुरू हुआ भागवत कथा का आयोजन

अखंड भारत संदेश

हर हर शंभू के मंगल गीतों के साथ महिलाएं सिर पर कलश रखकर वृद्ध आश्रम से ओसा चौराहे तक नगर क्षेत्र का भ्रमण कर लोगों में भक्ति की भावना जागृत कर रही थी

कौशांबी। मंझनपुर मुख्यालय के ओसा स्थित वृद्ध जन आश्रम में महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान के सहयोग से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन शुक्रवार को शुरू हो गया है भागवत कथा के आयोजन के पूर्व तमाम महिलाओं ने नगर क्षेत्र में मंगल कलश यात्रा निकाली है हर हर शंभू के मंगल गीतों के साथ महिलाएं सिर पर कलश रखकर वृद्ध आश्रम से ओसा चौराहे तक नगर क्षेत्र का भ्रमण कर लोगों में भक्ति की भावना जागृत कर रही थी उसके बाद कार्यक्रम स्थल पर वेदी पूजन विद्वान पंडितो द्वारा किया गया है बेदी पूजन के बाद भागवत कथा का प्रवचन विद्वान पंडित कथावाचक आचार्य वासुदेव महाराज प्रसन्नाचार्य द्वारा शुरू किया गया है कार्यक्रम में पूर्व प्रधानाचार्य ज्ञान प्रकाश दुबे नीरज मिश्रा आलोक राय रमेश चंद्र मिश्रा मोनू दुबे उत्तम मिश्रा कार्यक्रम की आयोजक अंजना मिश्रा परिवार सहित मौजूद रही इस मौके पर कथावाचक वासुदेव महाराज ने भगवान वासुदेव कथा का समामृत पान भक्तों को कराया भगवान वासुदेव की कथा सुनने के लिए क्षेत्र के सैकड़ों महिला-पुरुष भक्तों की कथा स्थल पर भीड़ उमड़ पड़ी।

संपादकीय

क्या गुजरात में केजरीवाल का जादू चलेगा?

गुजरात विधानसभा चुनाव 2022 के दिसंबर में होने हैं, इस बार का चुनाव हंगामेदार होगा, ऐतिहासिक होगा एवं नये परिदृश्यों को निर्मित करने वाला होगा। इसके लिए सभी प्रमुख राजनीतिक दल पिछले कई माह से सक्रिय हैं, भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस के साथ आम आदमी पार्टी भी पूरी तरीके से सक्रिय हो चुकी है, गुजरात में भाजपा जहां पिछले 27 सालों से सत्ता में है तो वहीं कांग्रेस पार्टी सत्ता पाने के लिए बेचैन है। पहली बार में ही आम आदमी पार्टी तो गुजरात में सरकार बनाने का दावा कर रही है। भाजपा की चुनावी तैयारियां जहां पिछले 1 साल से चल रही हैं तो वहीं कांग्रेस और आम आदमी पार्टी अपनी अलग रणनीति के हिसाब से काम कर रही है, आप के चलते कांग्रेस को अपने वोट बैंक में सेंध लगने की आशंका भी है। कुछ भी हो इस बार का चुनाव नरेन्द्र मोदी की प्रतिष्ठा का प्रश्न बनता जा रहा है। अब तो विधानसभा चुनाव का परिणाम ही बताएगा कि चुनावी तैयारी कर रहे इन राजनीतिक दलों को कितना फायदा मिलेगा। क्या गुजरात में अरविंद केजरीवाल का जादू चलेगा? गुजरात विधानसभा चुनाव का भले ही अभी तक कोई औपचारिक ऐलान नहीं हुआ हो, लेकिन इसे लेकर राजनीतिक गलियारे में सरगर्मियां तेज हो गई है, राजनीतिक दलों के लिये यह प्रतिष्ठा का प्रश्न बना हुआ है। राज्य में इस बार के चुनावी मैदान में आम आदमी पार्टी तीसरे विकल्प के रूप में धमक पैदा कर रही है। मालूम हो कि अब तक राज्य में केवल कांग्रेस बनाम बीजेपी के बीच मुकाबला देखने को मिलता था, लेकिन इस बार आप तीसरी ताकत के रूप में पूरी किस्मत आजमा रही है। ऐसे में कांग्रेस के सामने इस बार दोहरी चुनौती खड़ी है। ऐसा लगता है कि प्रांत में कांग्रेस का सुपड़ा साफ करते हुए आप भाजपा को कड़ी चुनौती देगा। गतदिनों अहमदाबाद के अपने दौरे के दौरान आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दावा किया कि कांग्रेस जमीन पर दिखाई नहीं दे रही थी और वह केवल एक संगठन के रूप में कागजों पर मौजूद थी। जिस पार्टी को पिछले चुनावों में करीब 38 फीसदी वोट मिले थे, वह चुनाव शुरू होने से पहले ही जमीन गंवा चुकी है? असल में कांग्रेस की कमजोर स्थिति एवं निस्तेज होते केन्द्रीय नेतृत्व का फायदा आप को मिल रहा है। जो अनेक दृष्टियों से भाजपा के लिये लाभकारी साबित होगा। गुजरात के चुनाव में आदिवासी समुदाय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होगी। अब तक पूर्व चुनावों में आदिवासी समुदाय की उपेक्षा के बावजूद राजनीतिक दलों को इस समुदाय का फायदा मिलता रहा है। लेकिन इस बार आदिवासी अपनी ताकत दिखाने के लिये कमर कसे हुए है। यही कारण है कि आप ने इनको अपने पक्ष में करने के सारे दाव चलने शुरू कर दिये हैं। गतदिनों केजरीवाल की आदिवासी क्षेत्रों में हुंकार सभा काफी सफल रही है। राहुल गांधी ने आखिरी बार 10 मई को गुजरात का दौरा किया था, इस दौरान उन्होंने आदिवासी बहुल दाहोद शहर में आदिवासी सत्याग्रह रैली को संबोधित किया। भाजपा एक साल से भी ज्यादा समय से प्रचार मोड में है और गुजरात भाजपा प्रमुख सी. आर. पाटिल रणनीतियों पर काम कर रहे हैं और उन्हें लागू कर रहे हैं। उनके द्वारा भी आदिवासी समुदाय को लुभाने की तमाम कोशिशें की जारही है। पाटीदार नेता हार्दिक पटेल ने कांग्रेस छोड़ दी और भाजपा में शामिल हो गए। गुजरात में कांग्रेस ने 2017 में भाजपा को टक्कर देने के लिए पटेल, मेवाणी और ओबीसी नेता अल्पेश ठाकोर सहित तीन युवा नेताओं का मोहरा बनाया था। ठाकोर ने कांग्रेस छोड़ दी और 2019 में भाजपा में शामिल हो गए। पटेल भी भाजपा पर सवार है। इन घटनाओं का भाजपा को लाभ मिलेगा। गुजरात में ही आदिवासी संत गणि राजेन्द्र विजय भी इनदिनों राजनीति में सक्रिय है, उन्होंने पटेल को भाजपा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे खुद चुनाव लड़ने के मुड में दिखाई देते हैं। उन्हें कौनसा राजनीतिक दल टिकट देने की पहल करता है, जो भी पहल करेगा, उसे आदिवासी वोटों का लाभ मिलेगा।

इस बार भी भाजपा विकास नीतियों को ही चुनाव का मुख्य मुद्दा बनाने वाली है। गुजरात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह का गृह राज्य भी है। इसलिये सभी विपक्षी दलों ने अपनी ताकत भाजपा को हराने के लिये लगा रखी। लेकिन भाजपा के शीर्ष नेता अपनी पूरी ताकत विकास योजनाओं पर केन्द्रीत किये हुए हैं। गृह मंत्री अमित शाह अलग-अलग क्षेत्र को फोकस करते हुए योजनाओं के दम पर मतदाताओं को लुभाने की कोशिश में जुटे हैं। बनासकांठा में नडाबेट भारत पाकिस्तान सीमा का उद्घाटन भी किया। यह क्षेत्र सौराष्ट्र में पड़ता है। इसके अलावा लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला ने सूरत में राजस्थानी समुदाय से मुलाकात की। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के लोगों को कई प्रोजेक्ट की सौगात दे चुके हैं। भाजपा गुजरात में विकास का ऐसा मॉडल तैयार करना चाहती है जो पूरे देश के लिए एक आदर्श मॉडल बन सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लगातार गुजरात में नए नए प्रोजेक्ट पर काम हो रहे हैं और इनका लाभ राजनैतिक दृष्टि से आगामी चुनाव में मिलने से इंकार नहीं किया जा सकता। कांग्रेस देशभर में कमजोर हुई है, विशेषतः गुजरात में उसकी हालत जर्जर हो चुकी है। कांग्रेस ने पिछले दो वर्षों में लगभग 14 विधायकों को खो दिया है, जो भाजपा में शामिल हो गए हैं। राज्य विधानसभा में पार्टी की ताकत 77 से घटकर लगभग 64 विधायक रह गई है। जबकि भाजपा, जिसे 2017 के चुनावों में 100 सीटों के निशान से नीचे 99 पर रोक दिया गया था, 2017 के चुनावों के बाद से इसकी संख्या बढ़कर 111 विधायकों तक पहुंच गई है। भले ही आदिवासी नेता और झगड़िया निर्वाचन क्षेत्र से विधायक छोटू वसावा को अभी भी कांग्रेस पार्टी में किसी चमत्कार के घटित होने की आशा है।

भारत पर बोझ हैं रोहिंग्या शरणार्थी

डॉ. ओ.पी. त्रिपाठी

बीते दिनों बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना आज भारत की चार दिनी यात्रा पर थी। भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री शेख हसीना ने रोहिंग्या मुद्दे को बांग्लादेश पर बड़ा बोझ बताते हुए रोहिंग्या शरणार्थी संकट को हल करने में भारत के समर्थन की मांग की। उन्होंने कहा, हमारे लिए, यह एक बड़ा बोझ है। भारत एक विशाल देश है, आप समायोजित कर सकते हैं, लेकिन आपके पास ज्यादा नहीं है। लेकिन हमारे देश में 11 लाख रोहिंग्या हैं। ऐसे में सरकार को बांग्लादेश की प्रधानमंत्री की मीठी बातों से बचना चाहिए क्योंकि पहले आये शरणार्थी ही बोझ बने हुए हैं। वास्तव में बांग्लादेश रोहिंग्या शरणार्थियों के चलते इन दिनों काफी मुश्किल में है। साल 2017 में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद बड़ी संख्या में रोहिंग्या मुसलमान भागकर बांग्लादेश पहुंच गए। वैसे, 1970 के दशक से ही वे वहां आते रहे हैं, लेकिन 2010 का दशक मानो इनकी लहर लेकर आया था। तब शेख हसीना सरकार ने खुले दिल से उनका स्वागत भी किया था। मगर अब जहां बांग्लादेश में इनकी आबादी काफी तेजी से बढ़ रही है, वहीं इनसे जुड़े अपराधों में भी भारी बढ़ोतरी हुई है। नतीजतन, प्रधानमंत्री हसीना को कहना पड़ा है कि रोहिंग्या उनके देश के लिए बोझ बन गए हैं। अनेक विरोधाभासों के बावजूद बांग्लादेश से हमारे संबंध बेहतर हैं। सीमा संबंधी विवादों को दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व द्वारा समझदारी से सुलझा लिए जाने से पूर्व में उत्पन्न तनाव काफी कम हुआ है।

इस पड़ोसी के साथ सांस्कृतिक रिश्ते भी काफी प्रगाढ़ हैं। हालांकि ये भी कटु सत्य है कि देश के विभाजन के बीज भी अविभाजित बंगाल में पहले अंग्रेजों और बाद में मुस्लिम नेताओं द्वारा ही बोये गये थे। यद्यपि 1971 में पूर्वी पाकिस्तान की जगह बांग्लादेश नामक नये देश के उदय में भारत की ही भूमिका रही। हमारी सेना ने पाकिस्तानी फौजी अत्याचारों से इसे मुक्त करवाते हुए जो इतिहास रचा उसे भुलाया जाना असम्भव है। शुरूआती दौर में तो सब अच्छा-अच्छा चलता रहा लेकिन 1975 में शेख मुजीब की हत्या के बाद यह देश भारत विरोधी मानसिकता रखने वालों के हाथ आ गया जिन्होंने सारे एहसान भूलकर शत्रुवत व्यवहार करना शुरू कर दिया। ये भी चिंता का विषय है कि शेख हसीना के कार्यकाल में भी बांग्लादेश में हिन्दू धर्मस्थलों पर वैसे ही हमले होते रहते हैं जैसे पाकिस्तान में देखने मिलते रहे। यही नहीं सदियों से वहां रह रहे हिन्दुओं के साथ बांग्लादेशी मुसलमानों का रवैया भी दिन ब दिन खराब होता जा रहा है। ये तो सारी दुनिया जानती है कि 1971 गृहयुद्ध शुरू होते ही बांग्लादेश से बड़ी संख्या में लोग सीमा पार करते हुए भारत में आ गये जिन्हें हमने मानवीयता के आधार पर शरणार्थी शिविरों में बसाया। लेकिन ये वापिस नहीं लौटे और वोट बैंक की राजनीति का लाभ उठाकर नागरिक बन बैठे। आज पूरे देश में इनका फैलाव हो चुका है। पश्चिम बंगाल और असम के अलावा बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और दिल्ली में इनकी संख्या काफी है। असम में तो 1971 के पहले से ही बांग्लादेश से अवैध रूप से आये मुसलमानों को बसाए जाने का षडयंत्र रचा जाता रहा। जिसके कारण बड़े इलाके मुस्लिमबहुल हो गए। पश्चिम बंगाल में भी पहले वामपंथी और बाद में ममता सरकार ने बांग्लादेश से आये मुस्लिमों के प्रति नर्म रुख दिखाते हुए उनको स्थायी रूप से बसने में सहायता और संरक्षण दिया। इन विदेशी नागरिकों को वापिस भेजने की बात तो दूर रही इनकी पहिचान करने के लिए की जाने वाली व्यवस्था का भी विरोध एक तबका करता है। बांग्लादेश ने भी आज तक उनकी वापसी की इच्छा नहीं जताई। ये भी सत्य है कि आज भी वहां से अवैध घुसपैठ जारी है। लेकिन बीते कुछ सालों में म्यांमार (बर्मा) से आये रोहिंग्या मुसलमान बड़ी समस्या बन गये हैं। इनके साथ सबसे बड़ी समस्या इनका अपराधी प्रवृत्ति का होना है। शुरू-शुरू में तो मानवीय आधार पर भारत ने इनको पनाह दी लेकिन जैसे ही इनके खतरनाक इरादे उजागर हुए त्योंही इनके विरोध में आवाजें उठीं। लेकिन फिर राजनीति आड़े आने लगी और रोहिंग्या भी अनेक शहरों में बसने लगे। शेख हसीना बेशक भारत की शुभचिन्तक हैं लेकिन रोहिंग्या मुसलमान जितने उनके लिए समस्या हैं उससे ज्यादा भारत के लिए, जो कि पहले से ही बांग्लादेशी शरणार्थियों के बोझ से दबा हुआ है।

और फिर रोहिंग्या तो स्वभाव से ही उपद्रवी हैं जिनके पाकिस्तान प्रवर्तित आतंकवादी संगठनों से रिश्ते उजागर हो चुके हैं। इसके अलावा श्रीलंका में उत्पन्न संकट की वजह से तमिल शरणार्थी भी तमिलनाडु में आ गये हैं। इसीलिये भारत को शरणार्थियों की आश्रयस्थली कहा जाने लगा है। उनके कारण न सिर्फ हमारी अर्थव्यवस्था अपितु आन्तरिक सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा हो गया है। बांग्लादेश में रोहिंग्या शरणार्थियों की सख्या बढ़कर 10 लाख हो चुकी है। ये मूलतः चटगांव व इसके आसपास के इलाकों में बसे हुए हैं। बांग्लादेश की हुकूमत ने इनके रहने के लिए अलग से भासन चार द्वीप पर भी व्यवस्था की है, जिसके लिए वहां ढांचागत निर्माण-कार्य करवाए गए हैं।

> **शुरू-**
> **शुरू में तो रोहिंग्या शरणार्थियों ने इस पर आपत्ति की, पर अब वे वहां बसने लगे हैं। रोहिंग्या मुसलमानों के लिए बांग्लादेश आना (या भागना) इसलिए आसान रहा, क्योंकि म्यांमार से लगी इसकी सीमा कुछ हद तक खुली हुई है। बांग्लादेश का मानना है कि रोहिंग्या मुसलमान जरूर हैं, पर वे बांग्लादेशी नहीं हैं, जबकि म्यांमार का तर्क है कि बांग्लादेश से आकर ही रखाइन प्रांत में उन्होंने अपना ठिकाना बनाया**

शुरू-शुरू में तो रोहिंग्या शरणार्थियों ने इस पर आपत्ति की, पर अब वे वहां बसने लगे हैं। रोहिंग्या मुसलमानों के लिए बांग्लादेश आना (या भागना) इसलिए आसान रहा, क्योंकि म्यांमार से लगी इसकी सीमा कुछ हद तक खुली हुई है।

बांग्लादेश का मानना है कि रोहिंग्या मुसलमान जरूर हैं, पर वे बांग्लादेशी नहीं हैं, जबकि म्यांमार का तर्क है कि बांग्लादेश से आकर ही रखाइन प्रांत में उन्होंने अपना ठिकाना बनाया था। इनको अपने यहां से खदेड़ने के लिए म्यांमार की सैन्य हुकूमत ने इन पर खूब अत्याचार किए थे। समस्या भारत के लिए भी है। बांग्लादेश छोटा-सा मुल्क है। वहां आबादी काफी सघन है। चूंकि उसके साथ लगी हमारी सीमा तुलनात्मक रूप से शांत है, इसलिए माना जाता है कि तमाम कोशिशों को बाद भी कुछ रोहिंग्या घुसपैठ में सफल हो जाते हैं। दिक्कत यह है कि इनकी आमद के साथ आपराधिक व कट्टरवादी तत्व भी हमारे समाज में दाखिल हो जाते हैं। चूंकि रहन-सहन, भाषा, खान-पान, पहचान जैसे मामलों में रोहिंग्या और बांग्लादेशियों में फर्क करना मुश्किल होता है, इसलिए हमारे सीमावर्ती राज्यों को केंद्र के दिशा-निर्देशों के अनुरूप अतिरिक्त प्रयास करते रहना होगा। हमारी यह भी कोशिश है कि रोहिंग्या लोगों को पहचानकर उनको वापस भेज दिया जाए।

शेख हसीना अपने राष्ट्रीय हितों के लिए भारतीय भारतीय नेतृत्व को प्रभावित करने की कोशिश करेंगी। लेकिन उनकी बातों में आने की बजाय हमे उलटे उन पर दबाव बनाना चाहिए कि वे बांग्लादेशी नागरिकों की वापसी का रास्ता निकालें। इसके साथ ही हिन्दू धर्मस्थलों पर होने वाले हमलों और हिन्दुओं के साथ दुर्व्यवहार के प्रति भी नाराजगी खुलकर जतानी चाहिए। हमारी सज्जनता को पड़ोसी देशों द्वारा सदैव कमजोरी समझा गया है जबकि भारत ने हर संकट में मदद का हाथ बढ़ाया।

\ऐसे में अब जबकि शरणार्थी समस्या हमारे लिए ही असहनीय बनती जा आ रही है तब शेख हसीना का यह सोचना कि बड़ा देश होने से हम उनके रोहिंग्या शरणार्थियों को भी समायोजित करें, किसी भी दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चाहिए वे इस बारे में कड़ा रुख अपनाएं वरना निकट भविष्य में ये शरणार्थी हमारे लिए उसी तरह समस्या बन जायेंगे जैसी फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि भुगत रहे हैं। याचक बनकर आना और फिर मालिक बनकर हक जताना इन शरणार्थियों का चरित्र जो है।

आचार्य विनोबा भावे: अंधेरों में उजाले एवं सत्य की स्थापना के प्रेरक

-ललित गर्ग-

जब-जब मानवता विनाश की ओर बढ़ती चली जाती है, नैतिक मूल्य अपनी पहचान खोते जाते हैं, समाज में पारस्परिक संघर्ष की स्थितियां बनती हैं, समस्याओं से मानव मन कराह उठता है, तब-तब कोई न कोई महापुरुष अपने दिव्य कर्तव्य, मानवतावादी सोच, चिन्मयी पुरुषार्थ और तेजोमय शौर्य से मानव-मानव की चेतना को झंकृत कर जन-जागरण का कार्य करता है। समय-समय पर ऐसे अनेक महापुरुषों ने अपने क्रांत चिंतन के द्वारा समाज का समुचित पथदर्शन किया। महापुरुषों की इसी महिमामंडित श्रृंखला का एक गौरवपूर्ण नाम है आचार्य विनोबा भावे। वे हमारे लिये एक प्रकाश स्तंभ हैं, जिनकी जन्म जयन्ती 11 सितम्बर को मनाई जाती है। वे राष्ट्रीयता, नैतिकता एवं अहिंसक जीवन, पीड़ितों एवं अभावों में जी रहे लोगों के लिये आशा एवं उम्मीद की एक मीनार थे, रोशनी उनके साथ चलती थी। दिव्य कर्तव्य, मानवतावादी सोच, सबके उदय की कामना, चिन्मयी पुरुषार्थ और तेजोमय शौर्य से मानव-मानव की चेतना को झंकृत करने एवं धरती को जय जगत का सन्देश देने वाले युगपुरूष संत विनोबा भावे ने भूदान, डाकूओं के आत्मसमर्पण तथा जय जगत के विचारों द्वारा वैश्विक समास्याओं के अहिंसक तरीके से समाधान निकालने के जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किये थे। वे संतों की उत्कृष्ट पराकाष्ठा थे, भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता, विशिष्ट उपदेष्टा, महान विचारक तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे। उनका मूल नाम विनायक नरहरी भावे था। वे भारत में भूदान तथा सर्वोदय आन्दोलन प्रणेता के रूप में सुपरिचित थे। वे भगवद्गीता से प्रेरित जनसरोकार वाले जननेता थे, प्रवचनकार थे, महामनीषी थे, जिनका हर संवाद सन्देश बन गया है। वे कर्मप्रधान व्यक्ति थे इसलिए गीता उनका आदर्श थी। उन्होंने अपने प्रवचनों में गीता का सार बेहद सरल शब्दों में जन-जन तक पहुँचाया ताकि उनका आध्यात्मिक उदय हो सके, अंधेरों में उजाले एवं सत्य की स्थापना हो सके।

विनोबा भावे ने सर्वोदय समाज की स्थापना की। यह रचनात्मक कार्यकताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था। इस कार्यक्रम में वे पदयात्री की तरह गाँव-गाँव घूमे और इन्होंने लोगों से भूमिखण्ड दान करने की याचना की, ताकि उसे कुछ भूमिहीनों को देकर उनका जीवन सुधारा जा सके। उनका यह आह्वान जितना प्रभावी रहा, वह विस्मित करता है। इस पवित्र कार्य में जमींदार लोग भी गरीबों को दिल खोलकर जमीन देने के लिए आगे आये। यह संसार की अपनी तरह की अनूठी अहिंसक क्रान्ति है। वे गांधीवादी विचारों पर चले। रचनात्मक कार्यों और ट्रस्टीशिप जैसे विचारों का प्रयोग किया। 1955 तक आते-आते भू-आंदोलन ने एक नया रूप धारण किया। इसे ह्यग्रामदानह्ल के रूप में पहचाना गया। इसका अर्थ था ह्यसारी भूमि गोपाल कीह्ल। उनकी जन नेतृत्व क्षमता का अंदाज इसी घटना से लगता है कि इन्होंने चम्बल के डाकुओं को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित किया और 19 मई, 1960 को डकैत गिरोहों के 11 मुखियाओं ने विनोबाजी प्रभावित होकर उनके चरणों में अपने हथियार रखते हुए आत्मसमर्पण किया था। आज देश पर हावी हो चुके नक्सलवाद पर विनोबा भावे - जेपी वाली अहिंसा रूपी लगाम लगायी जा सकती है। आतंकवाद तथा नक्सलवाद की जड़ पर चोट की जाये केवल पत्तों पर दवा छिड़कने से स्थायी समाधान नहीं मिलेगा।

विनोबा भावे को भारत का राष्ट्रीय आध्यापक और महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी समझा जाता है। आज भी कुछ लोग यही कहते हैं। मगर यह उनके चरित्र का एकांगी और एकतरफा विश्लेषण है। वे गांधीजी के ह्यआध्यात्मिक उत्तराधिकारीह्ल से बहुत आगे, स्वतंत्र सोच एवं मानवतावादी कार्यक्रमों के स्वामी थे। मुख्य बात यह है कि गांधीजी के प्रखर प्रभामंडल के आगे उनके व्यक्तित्व का स्वतंत्र मूल्यांकन हो ही नहीं पाया। उनको हम ज्ञान का अक्षय कोष कह सकते हैं। गांधी के सान्निध्य में आने से पहले ही विनोबा आध्यात्मिक ऊंचाई प्राप्त कर चुके थे। संत ज्ञानेश्वर एवं संत तुकाराम उनके आदर्श थे। आश्रम में आने के बाद भी वे अध्ययन-चिंतन के लिए नियमित समय निकालते थे। भूदान यज्ञ में विनोबाजी प्रतिदिन दो बार प्रवचन करते थे और अपने प्रत्येक प्रवचन में नयी-नयी बातें कहते थे। एक दिन उनसे पूछा गया, ह्यह्यबाबा, आप इतने दिनों से भाषण देते आ रहे हैं, लेकिन आपके हर भाषण में कुछ नवीनता रहती है। यह कैसे संभव होता है?ह्लह्ल विनोबाजी ने कहा, ह्यह्यपैदल जो चलता हूं। उससे धरती का स्पर्श होता है और प्रकृति से नजदीक का संबंध जुड़ता है। मन में नित-नयी स्फूर्ति उत्पन्न होती है। उसी से नयी-नयी बातें सूझती हैं ह्लह्ल बिनोबाजी ने जो कहा, उसमें बड़ी सच्चाई थी। मैंने स्वयं अनुभव किया कि जब मैं अणुव्रत आन्दोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी के साथ अनेक वर्षों तक पैदल घूमा, मुझे जो अनुभूतियां हुई, जो ज्ञान मिला, वह अद्भुत था। उसका कारण यही था कि पैदल गति से मनुष्य के मस्तिष्क के बंद द्वार खुल जाते हैं और बाहर की ताजी शुद्ध हवा भीतर आती है।

विनोबा भावे ने गाँधीजी के साथ देश के स्वाधीनता संग्राम में बहुत काम किया। उनकी आध्यात्मिक चेतना समाज और व्यक्ति से जुड़ी थी। इसी कारण सन्त स्वभाव के बावजूद उनमें राजनैतिक सक्रियता भी थी। उन्होंने सामाजिक अन्याय तथा धार्मिक विषमता का मुकाबला करने के लिए देश की जनता को स्वयंसेवी होने का आह्वान किया। उनके आध्यात्मिक विकास में उनकी माँ रुक्मिणी देवी का गहरा प्रभाव था। वे महात्मा गाँधी द्वारा पहले एकल सत्याग्रही के रूप में चुने गए और गाँधीजी ने उन्हें ह्यभारत छोड़ोह्ल आन्दोलन में भी साथ लिया। पवनार आश्रम में आने के बाद वही उनका स्थायी मुख्यालय बन गया। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद विनोबा भावे ने समाज सुधार के आंदोलन की शुरूआत की।

इस क्रम में भूदान तथा सर्वोदय आन्दोलन बहुत प्रभावी रहे। उनका मानना था कि भारतीय समाज के पूर्ण परिवर्तन के लिए अहिंसक एवं नैतिक क्रांति की आवश्यकता है। इसके लिये वे आचार्य तुलसी और उनके अणुव्रत आन्दोलन को उपयोगी मानते थे और उन्हें अपना पूरा समर्थन प्रदत्त किया।

आत्महत्या मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण क्यों है ?

डॉ सत्यवान सौरभ

नौकरी छूटने या बेरोजगारी दर और मानसिक स्वास्थ्य, मादक द्रव्यों के सेवन और आत्महत्या के बीच गहरा संबंध है। स्कूली उम्र के युवाओं में मौत का दूसरा प्रमुख कारण आत्महत्या है। समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम ने प्रसिद्ध परिकल्पना की थी कि 'आत्महत्या न केवल मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक कारकों बल्कि सामाजिक कारकों का भी परिणाम है'। दुनिया में हर 40 सेकंड में कोई न कोई अपनी जान ले लेता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, प्रति 100,000 महिलाओं पर लगभग 16 महिलाएं अपनी जान लेती हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिलाओं के लिए आत्महत्या की दर दुनिया में छठा सबसे अधिक है। आत्महत्या मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण है, विशेष रूप से युवा पुरुषों में, केवल यातायात दुर्घटनाओं के कारण मृत्यु से अधिक है। आत्महत्या युवा महिलाओं में मौत का प्रमुख कारण है। हम आत्महत्या करने वाले प्रत्येक 100,000 पुरुषों पर लगभग 25 पुरुषों को खो देते हैं। भारत में आत्महत्याओं की उच्च संख्या के कारण मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक प्रभावों और सामाजिक आयामों का मिश्रण हैं। महिलाएं आय से अधिक सामाजिक-आर्थिक बोझ से जूझ रही हैं। महिलाओं और पुरुषों के लिए तनाव और संघर्ष से निपटने के सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीकों में अंतर, घरेलू हिंसा और विभिन्न तरीकों से गरीबी महिलाओं को ज्यादा को प्रभावित करती है। विवाहित महिलाएं सामान्य रूप से महिलाओं में आत्महत्या से होने वाली मौतों का सबसे बड़ा शिकार समूह हैं। व्यवस्थित और कम उम्र में शादी, युवा मातृत्व और आर्थिक निर्भरता के कारण यह समूह अधिक असुरक्षित हो जाता है। पिछले कुछ दशकों में बड़े पैमाने पर आर्थिक, श्रम और सामाजिक परिवर्तन देखे गए हैं जो पहले शायद ही कभी देखे गए हों। आर्थिक अव्यवस्था के साथ इस तरह का तेजी से बदलाव और सामाजिक और सामुदायिक संबंधों में बदलाव के कारण यह मुद्दा और ज्यादा संवेनदशील हो सकता है। भारत में मानसिक स्वास्थ्य विकारों से जुड़ा सामाजिक कलंक उन्हें सही करने में एक बड़ी बाधा है। जब मानसिक स्वास्थ्य विकारों की बात आती है तो कलंक और ज्ञान और समझ की सामान्य कमी समय पर हस्तक्षेप को रोकती है। चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक देखभाल का अभाव है, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को संबोधित करने के लिए राज्य की क्षमताएं न के बराबर हैं। देश में लगभग 5,000 मनोचिकित्सक और 2,000 से कम नैदानिक मनोवैज्ञानिक हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च कुल सार्वजनिक स्वास्थ्य खर्च का एक छोटा सा हिस्सा है। भारत की अर्थव्यवस्था काफी हद तक कृषि पर निर्भर करती है और लगभग 60% लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस पर निर्भर हैं। विभिन्न कारणों से सूखा, कम उपज की कीमत, बिचौलियों द्वारा शोषण और ऋण का भुगतान करने में असमर्थ भारतीय किसानों को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करती है। युवा आत्महत्या के इतनी अधिक संख्या का कारण आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक संसाधनों की कमी को माना जा सकता है। विशेष रूप से, शैक्षणिक दबाव, कार्यस्थल तनाव, सामाजिक दबाव, शहरी केंद्रों का आधुनिकीकरण, संबंध संबंधी चिंताएं और समर्थन प्रणालियों का टूटना। कुछ शोधकताओं ने शहरीकरण और पारंपरिक बड़े परिवार समर्थन प्रणाली के टूटने के लिए युवा आत्महत्या के उदय को जिम्मेदार ठहराया है। परिवारों के भीतर मूल्यों का टकराव युवा लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण कारक है।

जैसे-जैसे युवा भारतीय अधिक प्रगतिशील होते जाते हैं, उनके पारंपरिक परिवार वित्तीय स्वतंत्रता, विवाह की आयु, पुनर्वास, बुजुर्गों की देखभाल आदि से संबंधित उनकी पसंद के कम समर्थक होते जाते हैं। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि अवसाद और आत्महत्या का गहरा संबंध है और सबसे खराब स्थिति में, अवसाद आत्महत्या का कारण बन सकता है।

विश्व स्तर पर अवसाद से पीड़ित लोगों की कुल संख्या में से 18 प्रतिशत भारत में है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति कोटे के माध्यम से कॉलेज में प्रवेश प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जनजाति समुदाय से संबंधित होने के लिए भेदभाव और गालियां एवं नस्लीय गाली-गलौज, सेक्सिस्ट गाली आदि जिससे व्यक्तियों का अत्यधिक उत्पीड़न होता है।

मगरमच्छ के आँसू और झूठ परोसे धाँसू

सूर्यदीप कुशवाहा

हर तरफ सफेद झूठ का रंग बिखरा पड़ा है। झूठ की हवा बह रही है और लोगों को ठंडक मिल रही है। यह ऐसी-वैसी हवा थोड़े ही है बल्कि अंदर से खोखला हृदय से होकर बहती है। लालसा फरेब मक्कारी की अइय्यारी है। झूठ का प्रपंच हर दो घर के बाद आपको गुल खिलाती दिख जाएगी। महाभारत की पटकथा दिख जाएगी। इस इत्र की खुशबू समाज में इतनी बैठ गई है कि सच बदबू सी लगती है। सच के सिपाही को देखकर लोग जमादार को देखने जैसा नाक-भौह सिकोड़ते हैं। सच आज छूत की बीमारी है। जबान को सच बेस्वाद लगता है और झूठ बोलना चटपटा लगता है। आज इंसान झूठ का पुतला है। सच तो बस किताबों में दफन है। लोकतंत्र में नेतारूपी जीव को ही देख लीजिए श्रीमान। वह कितना अच्छा बोलता है, वास्तव में वह उतना ही झूठा होता है। लेकिन जनता विश्वास करती है। हर युग में सच परेशान और झूठ की बढ़ती दुकान। इक्कीसवीं सदी में झूठ प्रपंच से पाता मान, सम्मान और सच का हर क्षेत्र में बहिष्कार,हँसी, अपमान। जो आदमी अब पाए जाते हैं उनमें तेइस-तेइस गुणसूत्रों में एक की बढ़ोत्तरी होकर चौबीस-चौबीस गुणसूत्र हो गए हैं। झूठ चौबीसवां गुणसूत्र बनकर आदमी के जीन में घुलमिल गया है। आप अब आदमी के डीएनए में बढ़े जीन को बिना जाँच ही महसूस कर सकते हैं बशर्ते आप मनुष्य हों। ऑफिस, बाजार गली-मुहल्ला और गाँव हर जगह बस झूठ परोसा व खिलाया जाता है। लोग बड़े चाव से खाते हैं। जो जितना अच्छा झूठ बनाता है।

पूर्व अफगान क्रिकेट प्रमुख की शोएब अख्तर को चेतावनी: अगली बार बात को राष्ट्र पर मत लेना

शारजाह। पूर्व पाकिस्तानी तेज गेंदबाज शोएब अख्तर और अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड के पूर्व मुख्य कार्यकारी शफीक स्तानिकजई के बीच सोशल मीडिया पर दोनों टीमों के प्रशंसकों के मैच के उपरांत भिड़ने के बाद तीखी नोक झोंक हो गयी। पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने सुपर फोर का रोमांचक मुकाबला खेला जिसमें पाकिस्तान के तेज गेंदबाज नसीम शाह ने आखिरी ओवर में पहली दो गेंदों पर छक्के मारकर अपनी टीम को एक विकेट से जीत दिलाई। हालांकि मैच के बाद कुछ अप्रिय घटना देखने को मिली जब अफगान प्रशंसकों ने हार से निराश होकर पाकिस्तानी समर्थकों पर हमला कर दिया। अख्तर ने एक वीडियो साझा करते हुए, जिसमें अफगान प्रशंसक कुर्सियां तोड़ते हुए नजर आ रहे हैं, लिखा, ÷यह अफगान प्रशंसक कर रहे हैं। उन्होंने पहले भी ऐसा कई बार किया है। यह एक मैच है और इसे सही भावना में खेला जाना चाहिए। शफीक स्तानिकजई आपके दर्शकों और खिलाड़ियों की अभी कुछ चीजें सीखने की जरूरत है यदि आप खेल में आगे बढ़ना चाहते हो।' इसका जवाब देते हुए शफीक स्तानिकजई ने लिखा, 'आप दर्शकों की भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सकते और ऐसी घटनाएं विश्व क्रिकेट में कई बार हुई हैं। आप कबीर खान, इंजमाम भाई और राशिद लतीफ से पूछें कि हमने उनके साथ कैसा व्यवहार किया। मैं आपको एक सलाह देना चाहता हूं कि अगली बार बात को राष्ट्र पर मत लेना।'

इंटरनेशनल जूडो खिलाड़ी कपिल का चयन विश्व चैम्पियनशिप में

सीहोर। लगातार पांच सालों से शहर का नाम देश और विदेश में रोशन करने वाले इंटरनेशनल जूडो खिलाड़ी कपिल परमार अजरबैजान के बाकू में चार से ग्यारह नवंबर तक खेली जाने वाली विश्व जूडो चैंपियनशिप के भारतीय दृष्टिबाधित टीम का चयन किया गया। इस मौके पर गुरुवार अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने अपने निवास पर कपिल का स्वागत सम्मान किया। जानकारी के अनुसार अजरबैजान के बाकू में 4 से 11 नवंबर तक खेली जाने वाली विश्व जूडो चैंपियनशिप के भारतीय दृष्टिबाधित टीम सेलेक्शन कैंप में मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी शामिल हुये। जिसके बाद अच्छे प्रदर्शन के कारण शहर का नाम विश्व पटल पर रोशन करने वाले कपिल परमार का चयन किया। इस संबंध में विठलेश सेवा समिति के दीक्षित ने बताया कि लगातार 16 घंटों का कठिन अभ्यास करने वाले कपिल परमार का लक्ष्य विश्व चैम्पियनशिप के बाद ओलपिक में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए गोल्ड हासिल करना है। मात्र चार साल की आयु से जूडो में देश का नाम रोशन करने वाले अपनी धून के पक्के कपिल परमार का भोपाल नाके स्थित मुरली में जन्म हुआ है, पिता राम सिंह परमा साधारण किसान है और वह स्वयं चार की दुकान करते है। उन्होंने 2018 में उत्तरप्रदेश के गोरखपुर में सातवीं नेशनल प्रतियोगिता में गोल्ड हासिल किया।

आईएसएसएफ वर्ल्ड कप शूटिंग चैम्पियनशिप की मेजबानी करेगा भोपाल

भोपाल। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया ने बताया कि पहली बार आईएसएसएफ वर्ल्ड कप शूटिंग (रायफल/पिस्टल) चैम्पियनशिप की मेजबानी मध्यप्रदेश करेगा। अगले वर्ष 20 से 31 मार्च के मध्य अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित शूटर्स भोपाल के बिसनखेड़ी स्थित 'राज्य शूटिंग अकादमी ऑफ एक्सीलेंस' में अपना प्रतिभा दिखाएंगे। खेल मंत्री सिंधिया ने कहा कि मध्यप्रदेश ने खेलों के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। शूटिंग अकादमी की स्थापना से लेकर अब तक हमनें इस विधा में न सिर्फ वर्ल्ड क्लास अधो-संरचना का विकास किया है बल्कि प्रदर्शन की दृष्टि से भी हम अव्वल रहे हैं। उन्होंने कहा कि शूटिंग अकादमी में पहले भी कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं और प्रशिक्षण कैम्प आयोजित किये गये हैं। यह पहली बार है कि हम वर्ल्ड कप शूटिंग चैम्पियनशिप जैसा प्रतिष्ठित आयोजन करेंगे।

विराट कोहली ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पूरे किये 24,000 रन

दुबई। स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 24,000 रन पूरे कर लिए हैं। विराट ने यह उपलब्धि एशिया कप 2022 के सुपर फोर चरण में अफगानिस्तान के खिलाफ मैच के दौरान हासिल की। विराट ने अफगानिस्तान के खिलाफ महज 61 गेंदों में 12 चौकों और छह छक्कों की मदद से नाबाद 122 रन की पारी खेली। यह कोहली के अंतरराष्ट्रीय करियर का 71वां शतक है। अब, कोहली के सभी प्रारूपों में 468 अंतरराष्ट्रीय मैचों की 522 पारियों में 24,002 रन हैं। उन्होंने अब तक 71 शतक और 124 अर्धशतक बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर नाबाद 254 रन है। वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के इतिहास में सातवें सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं।

क्रिकेट इतिहास में शीर्ष पांच रन बनाने वाले खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर (34,357), श्रीलंका के कुमार संगकारा (28,016), ऑस्ट्रेलियाई महान रिकी पोंटिंग (27,483), श्रीलंका के महेला जयवर्धने (25,957) और दक्षिण अफ्रीका के महान जैक कैलिस (25,534) हैं।

मैच की बात करें तो इस मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 20 ओवर में 2 विकेट पर 212 रन बनाए। विराट कोहली ने नाबाद 122 और कार्यवाहक कप्तान केएल राहुल ने 62 रन बनाए। इन दोनों के अलावा ऋषभ पंत ने नाबाद 20 रन बनाए। अफगानिस्तान के लिए फरीद अहमद ने दोनों विकेट लिए।

जवाब में अफगानिस्तान की टीम 20 ओवर में 8 विकेट पर 111 रन ही बना सकी। अफगानिस्तान के लिए इब्राहिम जादरान ने सर्वाधिक नाबाद 64 रन बनाए। भारत के लिए भुवनेश्वर कुमार ने 5 विकेट लिए, जबकि अर्शदीप सिंह, रविचंद्रन अश्विन और दीपक हुड्डा ने 1-1 विकेट लिया।

पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के मेंटर नियुक्त हुए मैथ्यू हेडन

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने शुक्रवार को आगामी टी-20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज मैथ्यू हेडन को पाकिस्तानी क्रिकेट टीम का मेंटर नियुक्त किया है। 50 वर्षीय हेडन ने इससे पहले पिछले साल के टी 20 विश्व कप में टीम के बल्लेबाजी सलाहकार के रूप में काम किया था, जहां पाकिस्तान सेमीफाइनल में पहुंचा था। हेडन की नियुक्ति पर पीसीबी के सीईओ रमीज राजा ने कहा, मैं मैथ्यू हेडन का पाकिस्तानी टीम में वापस आने का स्वागत करता हूं। वह दुनिया भर में अपनी साख और मान्यता के साथ एक बेहतरीन खिलाड़ी रहे हैं। वह अपने साथ ऑस्ट्रेलिया की परिस्थितियों के बारे में ज्ञान का खजाना लाते हैं और मुझे विश्वास है, उनके शामिल होने से विश्व कप और भविष्य के दौरों के लिए हमारे बेहद प्रतिभाशाली क्रिकेटरों को काफी फायदा होगा।

मैं बैंक अल फलाह का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने एक बार फिर इस नियुक्ति पर हमारे साथ भागीदारी की है और आशा है कि वे पीसीबी से जुड़े रहेंगे। अपनी नियुक्ति पर हेडन ने कहा, मैं ऑस्ट्रेलिया में आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के लिए मेंटर के रूप में पाकिस्तानी टीम के साथ फिर से जुड़कर बेहद उत्साहित हूं। मैंने देखा है कि पाकिस्तान एसीसी टी 20 एशिया कप में कैसा प्रदर्शन कर रहा है और भारत पर रविवार की जीत शानदार थी। मुझे लगता है कि इस पाकिस्तानी टीम के लिए ऑस्ट्रेलिया में परिस्थितियां वास्तव में अनुकूल होंगी। मुझे यकीन है कि यह टीम विश्व कप में बेहतरीन प्रदर्शन करेगी, जैसा उसने पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात में किया था। हेडन 15 अक्टूबर को ब्रिस्बेन में टीम से जुड़ेंगे।

नीरज चोपड़ा डायमंड लीग का खिताब जीतने वाले पहले भारतीय

स्विट्जरलैंड। टोक्यो ओलंपिक 2020 में स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने भारत के लिए एक और उपलब्धि हासिल की। नीरज चोपड़ा ने स्विट्जरलैंड में ज्यूरिख डायमंड लीग फाइनल 2022 का खिताब अपने नाम किया है। इसके साथ ही वह इस खिताब को जीतने वाले पहले भारतीय भी बन गए हैं। मुकाबले के दौरान बादल छाए रहने के बावजूद नीरज चोपड़ा ने लेट्ज़ग्रुंड स्टेडियम में बेहतरीन शुरुआत की। हालांकि उनका पहला प्रयास फाउल हो गया लेकिन भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज ने अपने दूसरे प्रयास में 88.44 मीटर का थ्रो किया और अपने अगले थ्रो में 88.00 मीटर को छुआ। इसके बाद चोपड़ा ने अपने चौथे प्रयास में 86.11 का रिकॉर्ड थ्रो किया और पांचवें और

अपने अंतिम प्रयास में एक एक्सएम थ्रो के साथ इस मुकाबले का समापन किया।

नीरज चोपड़ा ने 2016 डायमंड लीग चैंपियन और टोक्यो 2020 के रजत पदक विजेता चेक रिपब्लिक के जैकब वाडलेज को हराकर यह खिताब जीता है। वाडलेज अपने सीजन के 90.88 मीटर के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ थ्रो से काफी पीछे रह गए और 86.94 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ दूसरे स्थान पर रहे जबकि मौजूदा यूरोपीय चैंपियन जर्मनी के जूलियन वेबर 83.73 मीटर थ्रो के साथ तीसरे स्थान पर रहे। उनके बाद यूएसए के कर्टिस थॉम्पसन (82.40 मीटर), लातविया के पैट्रिक गेलम्स (80.44 मीटर) और पुर्तगाल के राष्ट्रीय चैंपियन लिएंड्रो रामोस (71.96 मीटर) थे।

उल्लेखनीय है कि इस सीजन में डायमंड लीग इवेंट की एक सीरीज के माध्यम से कुल छह फाइनलिस्ट ज्यूरिख में ग्रैंड फाइनल में हिस्सा लिया।

ग्रेनेडा के विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स ने भी 2022 के ग्रैंड फाइनल के लिए क्वालीफाई किया था पर एक ऑफ-द-फील्ड अटैक से उबरने में असफल रहने के बाद रिजर्व एथलीट लिएंड्रो रामोस द्वारा रिप्लेसमेंट किया गया।

नीरज चोपड़ा ने पिछले माह लुसाने डायमंड लीग जीतकर और जून में स्टॉकहोम डायमंड लीग में दूसरे स्थान पर रहने के बाद अपने तीसरे डायमंड लीग ग्रैंड फाइनल के लिए क्वालीफाई किया था। इसके अलावा उन्होंने स्टॉकहोम मीट में 89.94 मीटर थ्रो के साथ अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड को और बेहतर बनाया था।

साल 2017 डायमंड लीग फाइनल में, नीरज चोपड़ा आठ फाइनलिस्टों के बीच 83.80 मीटर थ्रो के साथ सातवें स्थान पर रहे थे। भारतीय जैवलिन थ्रोअर ने अगले वर्ष अपने रिकॉर्ड में और सुधार किया और 85.73 मीटर के प्रयास के साथ चौथे स्थान पर पहुंच गए। इस जीत के साथ नीरज चोपड़ा ने 2022 का सीजन एक शानदार अंदाज में पूरा किया।

अनुराग ठाकुर ने नीरज चोपड़ा को दी बधाई

नई दिल्ली। केंद्रीय खेलमंत्री अनुराग ठाकुर ने दिग्गज भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा को प्रतिष्ठित डायमंड लीग ट्रॉफी जीतने पर बधाई दी है। मंत्री ने कहा कि चोपड़ा ने इस जीत के साथ एक और उपलब्धि अपने नाम कर ली है। ठाकुर ने ट्वीट किया- 'आपने अपने शानदार प्रदर्शन से भारतीय खेलों को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। युवा मामले और खेल मंत्रालय को इस यात्रा में आपका समर्थन करने पर गर्व है। बधाई हो चैंपियन !!,' उल्लेखनीय है कि नीरज ने 88.44 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता। चोपड़ा का पहला प्रयास फाउल था, लेकिन अपने दूसरे प्रयास में, उन्होंने 88.44 मीटर के थ्रो के साथ स्वर्ण जीता। चेक गणराज्य के ओलंपिक रजत पदक विजेता जैकब वाडलेज 86.94 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे, जिसे उन्होंने अपने चौथे प्रयास में दर्ज किया। जर्मनी के जूलियन वेबर 83.73 मीटर के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

टीम में अच्छा माहौल है, चाहे हम जीतें या हारें : राहुल द्रविड़

दुबई। भारत के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने खुलासा किया कि टीम में माहौल अच्छा रहता है चाहे वे मैच जीतें या हारें। दुबई में अफगानिस्तान के खिलाफ गुरुवार का मैच भारत का एशिया कप 2022 का अंतिम मैच होगा और फाइनल से बाहर होने के बाद टूर्नामेंट को एक अच्छे स्तर पर खत्म करना चाहते हैं। भारत पाकिस्तान और हांगकांग के खिलाफ मैच जीतने के बाद ग्रुप ए में शीर्ष पर रहा, लेकिन सुपर फोर चरण में पाकिस्तान और श्रीलंका के खिलाफ अपने दोनों मैच हार गया। द्रविड़ ने मैच से पहले कहा, 'हमने चीजों को सामान्य तौर पर लिया है। हमने एक पिच पर कुछ गेम गंवाए, जिस पर बचाव करना आसान नहीं था। इसका मतलब यह नहीं है कि हम बेहतर टीम नहीं हैं, क्योंकि हमने एशिया कप में शुरूआती मैच जीते भी हैं।'

वर्तमान भारतीय टीम में उनकी भूमिका के बारे में पूछे जाने पर, द्रविड़ ने कहा, 'मैं अपनी भूमिका को कप्तान और टीम के समर्थन के रूप में देखता हूं। टीम को खुद से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने में मदद करना। लेकिन एक बार जब वे मैदान पर होते हैं। खिलाड़ियों और कप्तान को अपनी योजनाओं पर अमल करने और टीम को आगे ले जाने के लिए यह उनके ऊपर निर्भर करता है। मुझे लगता है कि रोहित काफी अच्छे दिख रहे हैं और पूरी टीम काफी हद तक ठीक है।'

अफगानिस्तान के लेग स्पिनर राशिद खान ने कहा कि उनकी टीम का ध्यान सिर्फ 18 घंटे पहले पाकिस्तान के खिलाफ मैच हारने के बाद भारत जैसी बड़ी टीम के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करने पर होगा।

विराट ने पूरा किया 71वां शतक, अनुष्का बोलीं 'हर चीज में हमेशा तुम्हारे साथ'

मुंबई। अनुष्का शर्मा ने अपने स्टार क्रिकेटर पति विराट कोहली से वादा किया है कि वह हर चीज में हमेशा उनके साथ' हैं। विराट ने गुरुवार को एशिया कप 2022 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना 71 वां शतक लगाया। अनुष्का ने इंस्टाग्राम पर मैच से विराट की कई तस्वीरें पोस्ट कीं। उन्होंने लिखा, 'हमेशा आपके साथ किसी भी और हर चीज (दिल और अनंत इमोजी) में।' पोस्ट का जवाब देते हुए, विराट ने रेड-हार्ट इमोजीस भेजे। विराट कोहली ने 1020 दिनों बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शतक जमाया। साथ ही भारत को अफगानिस्तान के खिलाफ सिर्फ 61 गेंदों में करियर की सर्वश्रेष्ठ 122 रन की पारी के साथ भारत को अफगानिस्तान के खिलाफ 212/2 पर पहुंचा दिया।

ग्रीनपार्क में सचिन संग भारतीय लीजेंड टीम ने किया अभ्यास

कानपुर। रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज लीजेंड क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए ग्रीनपार्क स्टेडियम में खिलाड़ियों ने अभ्यास शुरु कर दिया। पहले दिन भारतीय लीजेंड टीम की अगुवाई कर रहे सचिन तेंदुलकर संग टीम ने अभ्यास सत्र में भाग लिया। वहीं दूसरी पिच पर दक्षिण अफ्रीका के लीजेंड खिलाड़ियों ने भी अभ्यास किया।

रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज लीजेंड क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए टीमों का मैदान पर पहुंचना शुरु हो गया है। मेजबान भारत और दक्षिण अफ्रीका के लीजेंड खिलाड़ी ग्रीन पार्क में अभ्यास सत्र के दौरान इकट्ठा हुए। आयोजकों से मिली जानकारी के मुताबिक भारत के लीजेंड खिलाड़ी दोपहर 2 से 5 बजे तक और दक्षिण अफ्रीका के खिलाड़ी 5 से 7 बजे तक अभ्यास किये। दक्षिण अफ्रीका की टीम आज ही विशेष विमान से चकेरी एयरपोर्ट पहुंची है। जबकि भारतीय टीम के शेष बचे खिलाड़ी भी आज ही

शहर आए हैं। 10 सितम्बर से शुरु होने वाली इस प्रतियोगिता के लिए तैयारियों का अंतिम दौर भी चल रहा है। पुलिस के कड़े सुरक्षा घेरे में एयरपोर्ट से होटल और होटल से ग्रीन पार्क टीमें पहुंची।

भारत की ओर से लीजेंड खिलाड़ियों में मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर टीम की कमान संभाले हैं तो उनके सहयोगियों में युवराज और हरभजन के अलावा आर विनय कुमार, एस बद्रीनाथ, स्टुअर्ट बिन्नी, मनप्रीत गोनी, मुनाफ पटेल जैसे खिलाड़ियों की फौज है। जबकि दक्षिण अफ्रीका की लीजेंड टीम में कप्तान जोंटी रोड्स, लांस क्लूजनर, हर्षल गिब्स,, वंडर वान जैसे खिलाड़ी चुनौती देने को तैयार है। दोनों टीमों के अभ्यास के लिए ग्रीन पार्क मैदान के दोनों ओर अभ्यास विकेट को सही तरीके से तैयार करवाने के लिए ग्राउंड स्टाफ सुबह से ही प्रयास कर रहा था।

हाल ही में अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह चुके सुरेश रैना को भारतीय लीजेंड टीम में शामिल किया जा सकता ह और वह 10 तारीख से शुरु होने वाले इस टूर्नामेंट में वीरेंद्र सहवाग की जगह फिर भी सकते हैं। गत वर्ष की चैंपियन भारतीय टीम के पूर्व ओपनर बैट्समैन वीरेंद्र सहवाग अपरिहार्य कारणों से इस बार भारतीय लीजेंड क्रिकेट टीम का हिस्सा नहीं है। आयोजकों के अनुसार सुरेश रैना ने हामी तो भर दी है, लेकिन अभी तक उन्हें टीम का सदस्य घोषित नहीं किया गया है।

महिला टी 20 एशिया कप के लिए 15 सदस्यीय पाकिस्तानी टीम की घोषणा, सदफ शमास नया चेहरा

इस्लामाबाद । पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने बांग्लादेश में 1 अक्टूबर से शुरू होने वाले आगामी महिला टी 20 एशिया कप के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। राष्ट्रीय महिला चयनकर्ता अस्माविया इकबाल द्वारा चयनित की गई 15-खिलाड़ियों की टीम में अनकैप्ड ऑलराउंडर सदफ शमास भी शामिल हैं।

जुलाई-अगस्त में आयरलैंड में त्रिकोणीय श्रृंखला (जिसमें मेजबान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं) और बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में शामिल होने वाली टीम में तीन बदलाव हैं। अनम अमीन, गुल फिरोजा और इरम जावेद को टीम में जगह नहीं मिली है।

पाकिस्तानी महिला टीम की चयनकर्ता अस्माविया इकबाल ने पीसीबी द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान में कहा, सदफ शमास ने हाल के अभ्यास मैचों में असाधारण रूप से अच्छा

प्रदर्शन किया और हमें लगता है कि उन्हें राष्ट्रीय टीम में लाने का यह सही समय है। टूर्नामेंट का पहला चरण राउंड रॉबिन आधार पर खेला जाएगा जिसके बाद शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। अस्माविया ने कहा, मुझे यकीन है कि वह राष्ट्रीय टीम के लिए महत्वपूर्ण साबित होंगी। मध्य क्रम में बल्लेबाजी करने और मध्यम तेज गेंदबाजी करने की उनकी क्षमता उसे टीम में अच्छी तरह से फिट बनाती है और जब भी उन्हें मौका मिलता है, वह प्लेइंग इलेवन को संतुलन प्रदान करेंगी। टीम में सलामी बल्लेबाज सिदरा अमीन और विकेटकीपर सिदरा नवाज भी शामिल हैं, जिन्होंने आखिरी बार क्रमशः अक्टूबर 2019 और जुलाई 2021 में टीम का प्रतिनिधित्व किया था।

पाकिस्तानी टीम इस प्रकार है : बिस्माह मरूफ (कप्तान), एमेन अनवर, आलिया रियाज, आयशा नसीम, डायना बेग, फातिमा सना, कायनात इम्तियाज, मुनीबा अली, निदा डार, ओमैमा सोहेल, सदफ शमास, सादिया इकबाल, सिदरा अमीन, सिदरा नवाज और तुबा हसन।

रिजर्व खिलाड़ी: नशरा सुंधू, नतालिया परवेज, उम्मे हानी और वहीदा अख्तर।

हैंडबॉल चैंपियनशिप : उप्र ने पश्चिम बंगाल को हराया

लखनऊ। मेजबान उत्तरप्रदेश ने 51वीं राष्ट्रीय सीनियर पुरुष हैंडबॉल चैंपियनशिप में अपना विजय अभियान जारी रखते हुए पश्चिम बंगाल को 23-16 गोल से हराया। दूसरी ओर पिछली चैंपियन सर्विसेज ने मणिपुर को रोमांचक मुकाबले में 24-23 गोल से हराया।हैण्डबॉल एसोसिएशन इंडिया के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश हैण्डबॉल संघ द्वारा केडी सिंह बाबू स्टेडियम में आयोजित इस चैंपियनशिप में दूसरे दिन कुल 16 मैच खेले गए। इसमें महाराष्ट्र व कर्नाटक का मैच कड़ी टक्कर के बाद 22-22 से छूटा। मेजबान उत्तर प्रदेश के लड़कों ने पूल जी में अपने दूसरे मैच में पश्चिम बंगाल को 23-16 गोल से हराया। यूपी मध्यांतर तक 11-8 ये आगे थी। उत्तर प्रदेश की ओर से संचित ने सर्वाधिक 7 गोल दागे। उनका साथ देते हुए गुरप्रीत व अरुण ने 5-5 गोल करने में सफलता हासिल की। अंकित चौधरी व मोहित यादव ने 2-2 जबकि शुभम सरोज व अविनाश राठौड़ ने एक-एक गोल किया। पश्चिम बंगाल से सचान ने चार जबकि बूटाराम, पुष्पेंदर व मनदीप ने तीन-तीन और राहुल ने एक गोल किए। इस मैच में उत्तर प्रदेश के लड़कों को मध्यांतर तक कड़ी टक्कर मिली। मध्यांतर के बाद यूपी के खिलाड़ियों को आक्रामक खेल का फायदा मिला। दूसरी ओर पूल ए में सर्विसेज को मणिपुर के खिलाफ 24-23 गोल की जीत में खासा पसीना बहाना पड़ा और टीम को एक अंक के मामूली अंतर से जीत मिली। इस मैच में सर्विसेज मध्यांतर तक 12-10 से आगे थी। सर्विसेज की ओर से दीपक ने सर्वाधिक आठ गोल दागे। चिराग ने चार, सुजाउर ने तीन गोल किए। साहिल, तरुण व मोहित को दो दो गोल करने में सफलता मिली। मणिपुर से मोहित यूनिया ने सर्वाधिक 7 व प्रदीप ने चार गोल किए। पूल सी में महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच रोमांचक टक्कर के बाद मुकाबला 22-22 से बराबरी पर खत्म हुआ। मैच के दौरान कई क्षण ऐसे आए कि लगा मैच का परिणाम निकलेगा लेकिन ऐसा नहीं हो सका। महाराष्ट्र से हरिंदर ने सर्वाधिक आठ गोल और अभिलाश ने 6 गोल किए।

ब्राजील में नाव डूबी, 14 लोगों की मौत

ब्रासीलिया। ब्राजील के उत्तरी पारा राज्य की राजधानी बेलेम शहर के पास एक नाव के डूबने से 14 लोगों की मौत हो गई। इस हादसे में 26 लोग लापता बताए गए हैं। सार्वजनिक सुरक्षा सचिवालय के अनुसार नाव माराजो द्वीप पर कैमारा और बेलेम के बीच यात्रा कर रही थी। इस बीच नाव कोटिजुबा द्वीप पर सौदाडे तट के पास डूब गई। फिलहाल दुर्घटना के कारणों का पता नहीं चल पाया है। दमकलकर्मियों ने शवों को निकालने और लापता लोगों का पता लगाने के लिए गोताखोरों, नौ नावों और एक हेलीकॉप्टर की मदद से खोज और बचाव अभियान शुरू किया है।

चाकूबाजी का अंतिम संदिग्ध अपने हाथों ही मरा, नीट परीक्षा में फेल होने पर छात्रा ने की आत्महत्या

सस्कैचेवान। कनाडा के सस्केचेवान प्रांत में चाकूबाजी कर 10 लोगों की हत्या का अंतिम संदिग्ध अपने हाथों ही मारा गया। पुलिस के मुताबिक, 32 वर्षीय माइल्स सैंडर्सन की मौत उसे लगी चोटों के कारण हो गई। अधिकारियों ने बताया, हमें संदिग्ध द्वारा एक घर के बाहर से कार चुराने की रिपोर्ट मिली थी। जब वह हमारी निगाह में आया तो रफ्तार तेज कर भागने लगा लेकिन हमने पीछा कर सड़क किनारे एक गड्ढे के पास उसकी कार को घेर लिया। पकड़े जाने पर उसकी कार से चाकू बरामद हुआ और उसे चोटें लगी हुई थीं। हिरासत में लेकर उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने कुछ समय बाद मृत घोषित कर दिया।

अब अमेरिकी कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल ताइवान में

चीन की ओर से सख्त विरोध जताए जाने के बावजूद अमेरिका संसदीय दलों का ताइवान जाना थम नहीं रहा है। अगस्त में स्पीकर नैंसी पेलोसी की यात्रा, फिर कई सांसदों के दौरे के बाद अब अमेरिकी कांग्रेस का एक और प्रतिनिधि मंडल ताइवान की राजधानी ताइपे पहुंचा है। फ्लोरिडा से डेमोक्रेटिक पार्टी की सांसद स्टेफनी मर्फी की अगुवाई में प्रतिनिधिमंडल ने ताइवान की राष्ट्रपति साई इन वेंग से मुलाकात की। चीन के सैन्य खतरों का जिक्र करते हुए साई ने कहा कि प्रतिनिधिमंडल की यात्रा ताइवान के प्रति अमेरिकी कांग्रेस के अडिग समर्थन को दर्शाती है।

दक्षिण अफ्रीका अक्तूबर में 12 चीते भेजेगा भारत, यात्रा के दौरान पांच दिन तक रखा जाएगा बेहोश

बेला-बेला। क्षिण अफ्रीका ने अक्तूबर में 12 चीते भारत भेजने की तैयारियां शुरू कर दी हैं। इन्हें भारत पहुंचाने की यात्रा के लिए तीन से पांच दिन तक बेहोश रखा जाएगा, इस वजह से प्रक्रिया को चीतों के लिए बेहद जटिल और संवेदनशील मानते हुए पूरी सावधानी रखी जा रही है। इससे पहले सितंबर में ही 8 चीते नामीबिया से भी भारत लाए जा रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका इसी सप्ताह चार चीते मोजांबिक भेज चुका है, लेकिन भारत लाए जा रहे चीतों की यात्रा इससे कहीं मुश्किलों भरी होंगी। दक्षिण अफ्रीका के प्रोजेक्ट से जुड़े वन्यजीव चिकित्सक एंडी फ्रेजर ने बताया कि किसी वन्य जीव के लिए भी स्थान परिवर्तन बेहद तनाव भरा समय होता है। उन्हें ट्रैक्यूलाइज करके लाया जाता है और 'बोमा' (बाड़-बंदी वाला क्षेत्र) में रखा जाता है। यहां रहना चीतों को मुश्किल लगता है क्योंकि वे विचरण नहीं कर पाते। दक्षिण अफ्रीका में चीता मेटापॉपुलेशन इनीशिएटिव प्रोजेक्ट (सीएमआईपी) के प्रबंधक विन्सेंट वान डेर मर्व ने कहा कि नामीबिया से 8 और अफ्रीका से 12 चीते काफी नहीं होंगे। अगर भारत में अनुवांशिक रूप से खुद को बढ़ाने वाली चीतों की आबादी बसानी है तो आने वाले वर्षों में कम से कम 500 चीतों की जरूरत होगी। हिरण का शिकार सीखने पर खुले जंगल में छोड़ेंगे : भारत पहुंचे चीतों को सुरक्षित रखना भी चुनौतीपूर्ण होगा। इनके लिए कूनो राष्ट्रीय उद्यान को चुना गया है। यहां पहले से मौजूद तेंदुए और भालू उनके लिए खतरा न बनें इसलिए चीता संरक्षित क्षेत्र बनाए गए हैं।

ब्रिटेन में 12 दिन का शोकः क्वीन का शव 4 दिन अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा, पति फिलिप के पास दफनाई जाएंगी

लंदन। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ II का निधन हो गया है। उन्होंने 6 फरवरी 1952 में ब्रिटेन का शासन संभाला था। तब उनकी उम्र सिर्फ 25 साल थी, तब से अब तक 70 साल तक उन्होंने शासन किया। उनके निधन के बाद प्रोटोकॉल के मुताबिक अंतिम संस्कार की तैयारियां की जा रही हैं।

क्वीन एलिजाबेथ का अंतिम संस्कार शाही परंपरा के मुताबिक 10वें दिन यानी 19 सितंबर को किया जाएगा। स्कॉटलैंड के बाल्मोरल कैसल से उनका पार्थिव शरीर लंदन लाया जाएगा। यहां वेस्टमिंस्टर ऐबे में उनका अंतिम संस्कार होगा। अंतिम संस्कार से जुड़ी परंपराएं 12 दिन तक चलेंगी। महारानी को प्रिंस फिलिप के बाजू में दफनाया जाएगा।

स्कॉटलैंड से लंदन तक महारानी की अंतिम यात्रा

क्वीन एलिजाबेथ का पार्थिव शरीर स्कॉटलैंड के बाल्मोरल कैसल से लंदन के बकिंघम पैलेस पहुंचेगा। वहां से इसे वेस्टमिंस्टर हॉल लाया जाएगा। इस दौरान मिलिट्री परेड होगी। शाही परिवार के सदस्य भी इस सफर में शामिल रहेंगे।

5वें दिन वेस्टमिंस्टर हॉल पहुंचेगा पार्थिव शरीर

महारानी के निधन के अगले दिन भारतीय समय के मुताबिक, 3:30 बजे किंग चार्ल्स को सेंट जेम्स पैलेस में नया किंग घोषित किया जाएगा।

शोक संदेश पर सहमति के लिए संसद की बैठक होगी। अन्य

सभी संसदीय कार्य 10 दिनों के लिए निलंबित रहेंगे। हाउस ऑफ कॉमन्स में सांसद श्रद्धांजलि देंगे।

भारतीय समय के मुताबिक, रात 9 बजे प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल नए प्रिंस के साथ जनता को संबोधित करेंगे।

सरकार राष्ट्रीय शोक की अवधि की पुष्टि करेगी। राष्ट्रीय शोक के 12 दिनों तक रहेगा।

वेस्टमिंस्टर ऐबे, सेंट पॉल कैथेड्रल और विंडसर कासल में लगे बड़े बेल बजाकर शोक जताया जाएगा । महारानी को गन सैल्यूट दिया जाएगा। हाइड पार्क में महारानी के जीवन के हर साल को याद करते हुए 96 बार फायर किया जाएगा।

नए किंग देश के नाम टीवी संबोधन देंगे। वो नए राजा के तौर पर महारानी को श्रद्धांजलि देंगे।

दूसरे दिन महारानी का ताबूत बकिंघम पैलेस लौटेगा। उनके पार्थिव शरीर को शाही ट्रेन या प्लेन से बाल्मोरल से लंदन ले जाया जाएगा। इस दौरान ब्रिटिश क्रू और मंत्री मंडल पैलेस में मौजूद रहेगा।

तीसरे दिन किंग चार्ल्स यूनाइटेड किंगडम के दौरे पर जाएंगे। शुरुआत स्कॉटिश संसद से होगी। इसके बाद वे एडिनबरा में सेंट जाइल्स कैथेड्रल जाएंगे।

चौथे दिन क्वीन एलिजाबेथ के पार्थिव शरीर को बकिंघम पैलेस से वेस्टमिंस्टर हॉल ले जाने की रिहर्सल की जाएगी।

पांचवे दिन महारानी एलिजाबेथ के पार्थिव शरीर को बकिंघम पैलेस से वेस्टमिंस्टर हॉल ले जाया जाएगा।

छठवें दिन अंतिम संस्कार की रिहर्सल की जाएगी।

सातवें दिन किंग चार्ल्स वेल्स संसद में एक और शोक प्रस्ताव प्राप्त करने के लिए वेल्स की यात्रा करेंगे। वे कार्डिफ में लियानडाफ कैथेड्रल भी जाएंगे।

10वें दिन अंतिम संस्कार किया जाएगा। पूरे देश में 2 मिनट का मौन रखा जाएगा। विंडसर कासल में एक सेरेमनी के बाद महारानी को किंग जॉर्ज VI मेमोरियल चैपल में दफनाया जाएगा। 10वां दिन 'राष्ट्रीय शोक दिवस' होगा। अगर उस दिन अवकाश नहीं हुआ तो कंपनियां तय कर सकेंगी कि कर्मचारियों को बुलाना है या नहीं।

नफरत का शिकार हो रहीं भारतीय मूल की प्रमिला

अमेरिकी कांग्रेस सांसद को मिली धमकी, फोन करने वाला बोला- भारत लौट जाओ

वाशिंगटन। भारतीय-अमेरिकी कांग्रेस सांसद प्रमिला जयपाल को फोन पर अपमानजनक और नफरत भरे संदेश मिल रहे हैं। उन्होंने कुछ ऑडियो मैसेज ट्विटर पर पोस्ट किए। इन मैसेजेस में अश्लील और अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया गया है। प्रमिला ने जो ऑडियो शेयर किए हैं उसमें कॉल करने वाला शख्स उन्हें नतीजे भुगतने की धमकी दे रहा है। साथ ही वह प्रमिला को मूल देश भारत वापस जाने कह रहा है।

हिंसा, नस्लवाद और सेक्सिज्म बर्दाश्त नहीं

प्रमिला ने लिखा है- 'आमतौर पर राजनीतिक लोग ऐसा नहीं करते हैं। मैं कर रही हूं क्योंकि हम हिंसा को स्वीकार नहीं कर सकते। हम उस नस्लवाद और लिंगवाद को भी स्वीकार नहीं कर सकते हैं जो इस हिंसा को बढ़ाता है।' प्रमिला जयपाल एक अमेरिकी राजनेता हैं जो 2017 से वाशिंगटन के 7वें कांग्रेस जिले से अमेरिकी

प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं।

घर के बाहर दिखा था पिस्टल लिए शख्स

एक और ट्वीट में प्रमिला ने लिखा- 'नस्लवाद और गुस्से से भरा एक आदमी मेरे घर पर एक भरी हुई बंदूक के साथ दिखा। मैं इसे इसलिए शेयर कर रही हूं क्योंकि बढ़ती हिंसा के सामने हम चुप नहीं रह सकते। ये अलग-थलग घटनाएं नहीं हैं। बहुत कुछ दांव पर लगा है।' गौरतलब है कि इससे पहले सिएटल में 49 साल का ब्रेट फोर्सेल पिस्टल के साथ प्रमिला के घर के बाहर नजर आया था। पुलिस ने उसे बाद में गिरफ्तार कर लिया था।

दुनिया में पहली बार: ऑस्ट्रेलिया में 2.5 करोड़ लोगों की डीएनए स्क्रीनिंग

दुनिया में पहली बार-ऑस्ट्रेलिया में 2.5 करोड़ लोगों की ष्ठह्व स्क्रीनिंग

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया अपनी पूरी आबादी की DNA स्क्रीनिंग सरकारी खर्च पर करेगा। ऐसा करने वाला वो दुनिया का पहला देश बन गया है। आबादी को सेहतमंद रखने और समय रहते इलाज मुहैया कराने के लिए ये प्रोजेक्ट शुरू किया गया है।

सरकार का मानना है कि आबादी की DNA सैंपलिंग करने से ये पता चल सकेगा कि लोगों को आने वाले समय में कैंसर और डायबिटीज जैसी आनुवंशिक बीमारियां होने की कितनी आशंका है। आमतौर पर महंगी माने जाने वाली DNA स्क्रीनिंग की शुरुआत ऑस्ट्रेलिया में मेलबर्न स्थित मोनाश यूनिवर्सिटी से की गई है।

हर 75 में से एक व्यक्ति को गंभीर बीमारी का खतरा

फ्री DNA टेस्टिंग प्रोजेक्ट के प्रति लोगों में खासा उत्साह देखा गया। 24 घंटे से भी कम समय में पहले चरण में 18-40 उम्र के 10,000 लोगों ने DNA स्क्रीनिंग के लिए

रजिस्ट्रेशन करवा दिया। नतीजों में सामने आया कि टेस्ट किए गए हर 75 में से एक व्यक्ति को भविष्य में गंभीर बीमारी का खतरा है। टेस्टिंग में गंभीर बीमारी की आशंका होने के बाद कई लोग चिंतित भी नजर आए। मोनाश यूनिवर्सिटी के इस प्रोजेक्ट को लीड कर रहे जेन टिलर के मुताबिक जिन लोगों की टेस्टिंग के दौरान भविष्य में कोई बीमारी होने के खतरे का पता लगा है, वे चिंतित तो हैं पर इससे उनकी बीमारी के खतरे को कम करने में सहायता मिलेगी। हमें उन लोगों को इससे उबरने का समय देना चाहिए। सरकार की ओर से देखभाल के लिए उपाय किए जाएंगे। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य समय रहते बेहतर स्वास्थ्य मुहैया कराना है।

टोक्यो में भारत ने जापान से की द्विपक्षीय साझेदारी पर चर्चा

टोक्यो। भारत के विदेशमंत्री एस जयशंकर और भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं ने क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए भारत-जापान की नीतियों और हितों के घनिष्ठ समन्वय के महत्व को रेखांकित किया।

इससे पहले सिंह और जयशंकर ने जापान के अपने समकक्षों विदेश मंत्री हयाशी योशिमासा और रक्षामंत्री हमदा यासुकाजू के साथ वार्ता में हिस्सा लिया। जयशंकर ने ट्वीट किया कि हमारी 2 2 बैठक के समापन पर पीएम फुमियो किशिदा से मुलाकात कर खुशी हुई। इस समय भारत और जापान की नीतियों और हितों के बीच घनिष्ठ समन्वय के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने विश्वास जताया कि जिस विजन को उन्होंने और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्पष्ट किया है, उसे जल्द ही साकार किया जाएगा। राजनाथ सिंह ने अपने ट्वीट में कहा कि क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने में भारत-जापान साझेदारी की निर्णायक भूमिका होगी।

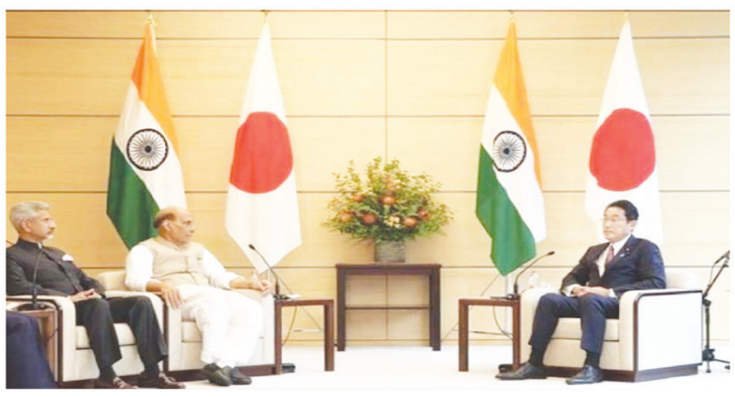

टोक्यो में भारत ने जापान से की द्विपक्षीय साझेदारी पर चर्चा

टोक्यो। भारत के विदेशमंत्री एस जयशंकर और भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं ने क्षेत्र में शांति और स्थिरता

डब्ल्यूएचओ ने चेताया : पाकिस्तान में बाढ़ से बिगड़ रहे मानवीय हालात, और भी बिगड़ेंगे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के एक तिहाई हिस्से के डूबने की विनाशकारी तबाही के बीच इस साल जून से शुरू हुई भारी मानसूनी बारिश के कारण देशभर में अचानक बादल फटने और बाढ़ आने की घटनाओं पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने बाढ़ से तबाह पाकिस्तान में मानवीय स्थिति को लेकर गंभीर चेतावनी दी है और कहा है कि आने वाले दिनों में हालात और भी बदतर होंगे।

चूंकि पाकिस्तान सरकार ने व्यापक नुकसान, बाढ़ बचाव और राहत गतिविधियों को संभालने के लिए विस्तारित और तत्काल राहत सहायता आपूर्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एक वैश्विक अपील भेजी है, कई देश समन्वय के लिए बाढ़ राहत आपूर्ति वाले विमानों के साथ मौद्रिक सहायता भी कर रहे हैं। चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, संयुक्त अरब अमीरात, कतर और अन्य देशों जैसे देश दुबई से एक विशाल एयरलिफ्ट ऑपरेशन शुरू करते हुए राहत सहायता भेज रहे हैं।

पाकिस्तान में बाढ़ ने 3.3 करोड़ से अधिक लोगों को प्रभावित किया है, लाखों लोगों को अपने घरों और कस्बों से बाहर निकलने और बाढ़ के पानी के माध्यम से विकसित क्षेत्रों तक पहुंचने और तंबू, खुले आसमान और अस्थायी व्यवस्था में रहने के लिए लंबे कठिन मार्गों पर चलने के लिए मजबूर होना पड़ा है। इसके अलावा, देशभर में फैली सड़कों, राजमार्गों, रेल पटरियों और बुनियादी ढांचे को बाढ़ के कारण बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया गया है, जिसमें 20 मिलियन एकड़ से अधिक फसल का खेत

पूरी तरह से नष्ट हो गया है।

डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार, कम से कम 1,460 स्वास्थ्य केंद्र क्षतिग्रस्त हो गए थे, जिनमें से कम से कम 432 पूरी तरह से तबाह हो गए थे, ज्यादातर सिंध प्रांत में। मौजूदा मानवीय संकट से निपटने के लिए डब्ल्यूएचओ और उसके सहयोगियों द्वारा कम से कम 4,500 चिकित्सा शिविर स्थापित किए गए हैं, जबकि तीव्र पानी वाले दस्त, मलेरिया, डेंगू, हेपेटाइटिस और चिकनगुनिया के लिए 2,30,000 से अधिक रैपिड परीक्षण वितरित किए गए हैं। डब्ल्यूएचओ ने कहा कि उसे कोविड-19, एचआईवी और पोलियो सहित अन्य बीमारियों से पीड़ित लोगों के बारे में पहले ही सूचित कर दिया गया है। डब्ल्यूएचओ के प्रवक्ता तारिक इसारेविक ने कहा, 'हमें पहले ही बताया जा चुका है कि हालात बेहद खराब होने का खतरा है।'

उन्होंने कहा, 'हमें विशेष रूप से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में तीव्र पानी वाले दस्त, टाइफाइड, खसरा और मलेरिया के मामलों की संख्या में वृद्धि की रिपोर्ट मिली है।' तारिक ने कहा, 'यह स्थिति हर गुजरते दिन के साथ और खराब होने की आशंका है।' उन्होंने कहा कि बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में इस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचसीआर) ने पहले ही दुबई से एक विशाल एयरलिफ्ट ऑपरेशन शुरू करके पाकिस्तान में समर्थन बढ़ा दिया है, जिसमें सिंध प्रांत के सुक्कुर और लरकाना सहित पाकिस्तान के क्षेत्रों में बाढ़ राहत सहायता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। सहायता के तौर पर कम से कम 15,000 स्लीपिंग मैट और किचन सेट और लगभग 5,000 तिरपाल दिए गए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के भी 9 सितंबर को इस्लामाबाद पहुंचने की उम्मीद है। वह बाढ़ से हुए नुकसान व तबाही की समीक्षा और विश्लेषण करेंगे।

यूएस पर फिर बरसे किम जोंग उन, बोले- उत्तर कोरिया परमाणु हथियारों और मिसाइलों को कभी नहीं छोड़ेगा

उत्तर कोरिया। उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन अपनी तानाशाही और जिद के लिए पूरी दुनिया में चर्चित रहते हैं। किम जोंग उन ने एक बार फिर अमेरिका पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि उत्तर कोरिया परमाणु हथियारों और मिसाइलों को कभी नहीं छोड़ेगा, उत्तर कोरिया को अमेरिका से शत्रुता का मुकाबला करने के लिए इसकी आवश्यकता है। किम ने अमेरिका पर उत्तर की रक्षा को कमजोर करने का आरोप भी लगाया। उत्तर कोरियाई मीडिया ने बताया कि किम जोंग उन ने उत्तर कोरिया की संसद में एक भाषण दिया इसके दौरान उन्होंने यह टिप्पणी की। वहीं उत्तर कोरियाई संसद के सदस्यों ने एक कानून भी पारित किया है जो उत्तर कोरिया की सेना को स्वचालित रूप से दुश्मन ताकतों के खिलाफ परमाणु हमले करने का अधिकार देता है। किम की टिप्पणियों ने बढ़ते क्षेत्रीय तनाव को दर्शाया है वहीं उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियारों और मिसाइल कार्यक्रम के विस्तार को तेज करने में लगा है। इससे पहले किम जोंग ने यह चेतावनी दी है कि अमेरका या अन्य किसी देश से धमकी मिलने पर उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियारों का सक्रिय रूप से उपयोग करेगा। किम ने इस साल रिकॉर्ड गति से हथियारों के परीक्षण में 30 से अधिक बैलिस्टिक हथियारों को लॉन्च किया है, जिसमें 2017 के बाद से उनकी अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों का पहला प्रदर्शन भी शामिल है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।